श्री जिनायनमः

वैराग्योपदेशक विविध पदसंग्रह.

पंडित श्रीयसोविजय, विनयविजय
तथा ज्ञानसारजी विरचित.

तेने

द्वितीयावृत्तिने

यथामति संसोधन करीनें

श्रावक, भीमसिंह माणेकें

श्री मोहमयी पत्तन मध्यें

निर्णयसागर छापखानामां छपावी प्रसिद्ध कर्यो छे.

संवत् १९५८. सने १९०२.

वैशाख वदि त्रयोदशि

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

'प्रस्तावना.

सर्व सुज्ञ जैनबांधवोने मालुम थाय जे आ श्री
राग्योपदेशक विविधपद संग्रह." नांमनो अ-
[illegible] रमणीक, वैराग्यथी जरेलो, संसार स्वरूपने
[illegible]तावनारो, तथा पदोनां चमत्कारोथी जरेलो ग्रंथ
आपणा महामाननीक उपाध्याय श्री यशोविजय-
जी; विनयविजयजी तथा ज्ञानशारजी महाराजें
रचेल छे, तेमां प्रथम "जसविलास" पंडित यशो-
विजयजी कृत, तथा "विनयविलास" पंडित विनय
विजयजी कृत, अने "ज्ञानविलास" पंडित ज्ञान
सारजी कृत छे. आ ग्रंथ एटलो तो रसिक तथा जै-
नवर्गना श्रावक, श्राविकाउने माटे उपयोगी छे के-
तेनुं अत्रे प्रस्तावनामां कंइ पण वर्णन नहि करतां,
अमो ते ग्रंथ, आधथी ते अंतसुधि वांचीने तेनो
रहस्य हृदयमां धारण करवानी अमारा सुज्ञ जैन
बांधवोने जलामण करीएं छईयें तथा केटलाएक
दृष्टी दोष अनें बुद्धि दोष रही गया हशे तेनुं अ-

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

वलोकन करीने सर्व श्रेष्ट पुरुषो क्षमा पूर्वक सुधा
रिने वांचशो. इत्यलं विस्तरेण. /

ता २५ मी मे
शने१९०२.

लां. श्रावक,
भीमसिंह माणेकना,
कार्य प्रवर्तको.

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

॥ अथ ॥

॥ श्रीजशविलास प्रारंभः ॥

॥ पद पहेलुं ॥

॥ राग धन्याश्री ॥ चेतन ज्ञानकी दृष्टि निहालो ॥ चेतन० ॥ टेक ॥ मोह दृष्टि देखे सो बाउरो, होत महा मतवालो ॥ चेतन० ॥१॥ मोह दृष्टि अति चपल करतहे, जव वन वानर चालो ॥ योग वियोग दावानल लागत, पावत नांहि विचालो ॥ चेतन० ॥२॥ मोह दृष्टि कायर नर डरपें, करे अकारन टालो ॥ रन मेदान लरे नहीं अरिसुं, सूर लरेज्युं पालो ॥ चेतन० ॥३॥ मोह दृष्टि जन जनके परवश, दीन अनाथ दुखालो ॥ मागे भीख फरे घर घरसुं, कहे मुऊकुं कोउ पालो ॥ चेतन० ॥४॥ मोह दृष्टि मद मदिरामाती, ताको होत उजालो ॥ पर अवगुन राचे सो अहनिस, काग असुचि ज्यौं कालो॥ चेतन० ॥५॥ ज्ञान दृष्टिमां दोष न एते, करे ज्ञान अजुआलो ॥ चिदानंद घन सुजस वचन रस, सज्जन हृदय पखालो ॥ चेतन० ॥ ६ ॥ इति ॥

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

॥ पद बीजुं ॥

॥ राग सारंग ॥ कंतबिनु कहो कौन गति नारी ॥ टेक ॥ सुमति सखी जइ वेगी मनावो, कहे चेतन सुन प्यारी ॥ कंत० ॥१॥ धन कंन कंचन महल मालिए, पिउ बिन सबहि उजारी ॥ निद्राजाग लहु सुख नांही, पियु बियोग तनु जारी ॥ कंत० ॥२॥ तोरे प्रीत पराइ दुरिजन, अछते दोष पुकारी ॥ घर भंजनके कहन न कीजें, कीजे काज बिचारी ॥ कंत० ॥३॥ विभ्रम मोह महामद बिजुरी, माया रेन अंधारी ॥ गर्जित अरति लवे रति दादुर, कामकी भइ असवारी ॥ कंत० ॥४॥ पिउ मिलवेकुं मुझ मन तलफे, में पिउ खिजमतगारी ॥ भुरकी देइ गये पिउ मुझकुं, न लहे पीर पीयारी ॥ कंत० ॥ संदेशं सुनी आए पिउ उत्तम, भइ बहुत मनुहारी ॥ चिदानंद घन सुजस विनोदें, रमे रंग अनुसारी ॥ कंत० ॥६॥

॥ पद त्रीजुं ॥

॥ राग धन्याश्री ॥ परम गुरु जैन कहो क्यौं होवे, गुरु उपदेश बिना जन मूढा, दर्शन जैन बिगोवे ॥ परम गुरु जैन कहो क्यौं होवे ॥टेक॥१॥ कहत कृ-

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

पानिधि समजल झीले, कर्म मयल जो धोवें ॥ बहुल पापमल अंग न धारे, शुद्ध रूप निज जोवे॥ परम०॥२॥ स्यादवाद पूरन जो जाने, नय गर्भित जस वाचा ॥ गुन पर्याय द्रव्य जो बूझे, सोइ जैन हे साचा ॥परम० ॥ ३ ॥ क्रिया मूढमति जो अज्ञानी, चालत चाल अपूठी ॥ जैनदशा उनमेंही नाही, कहे सो सबही जूठी ॥परम०॥४॥ पर परनति अपनी कर माने, किरिया गर्वै घेहेलो ॥ उनकुं जैन कहो क्युं कहियें, सो मूरखमें पहिलो ॥परम०॥५॥ ज्ञान ज्ञाव ज्ञान सबमांही, शिव साधन सर्दहिए ॥ नाम लेखसें काम न सीझे, ज्ञाव उदासे रहिए ॥ परम० ॥६॥ ज्ञान सकल नय साधन साधो, क्रिया ज्ञानकी दासी ॥ क्रिया करत् धरतुहे ममता, याहि गलेमें फांसी ॥परम०॥७॥ क्रिया बिना ज्ञान नहिं कबहुं, क्रिया ज्ञान बिनु नांही ॥ क्रिया ज्ञान दोउ मिलत रहतुहे, ज्यौं जल रस जलमांही ॥ परम० ॥८॥ क्रिया मगनता बाहिर दीसत, ज्ञान शक्ति जस नांजे ॥ सदगुरु शीख सुने नहीं कबहुं, सो जन जननें लाजे ॥परम०॥९॥ तत्व बुद्धि जिनकी परनति

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

हे, सकल सूत्रकी कूंची ॥ जग जसवाद वदे उन हींको, जैन दशा जस ऊंची ॥ परम० ॥१०॥ इति॥

॥ पद चोथुं ॥

॥ राग धन्याश्री ॥ परम प्रभु सब जन शब्दें ध्यावे ॥ जब लग अंतर भरम न भांजे, तबलग कोऊं न पावे ॥ परम प्रभु० ॥ १ ॥ टेक ॥ सकल अंस देखे जग जोगी, जो खिनु समता आवे ॥ ममता अंध न देखे याको, चित्त चिहुं ओरे ध्यावे ॥ परम प्रभु०॥२॥ सहज शक्ति अरु भक्ति सुगुरुकी,जो चित्त जोग जगावे ॥ गुण पर्याय द्रव्यसुं अपने, तो लय कोउ लगावे ॥ परम प्रभु० ॥ ३ ॥ पढत पूरान वेद अरु गीता, मूरख अर्थ न भावें ॥ इत ऊत फरत ग्रहत रसनाही, ज्यौं पशु चर्वित चावे ॥ परम प्रभु० ॥४॥ पुद्गलसें न्यारो प्रभु मेरो, पुद्गल आप छिपावे॥ उनसें अंतर नहीं हमारे, अब कहां भागो जावे ॥ परम प्रभु० ॥५॥ अकल अलख अज अजर निरंजन, सो प्रभु सहज सुहावे ॥ अंतरजामी पूरन प्रगट्यो, सेवक जस गुन गावे ॥ परम प्रभु० ॥६॥इति॥

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

॥ पद पांचमुं ॥

॥ राग उपर प्रमाणे ॥ चेतन जो तुं ज्ञान अ-
न्यासी ॥ आपहि बांधे आपहि छोडे, निजमति
शक्ति बिकासी ॥ चेतन० ॥१॥ टेक ॥ जो तुं आप
स्वभावें खेले, आसा छोरी उदासी ॥ सुरनर किन्नर
नायक संपति, तो तुज घरकी दासी ॥ चेतन०॥२॥
मोह चोर जन गुन धन लूसे, देत आस गल फांसी॥
आसा छोर उदास रहेजो, सो उत्तम संन्यासी ॥
चेतन० ॥ ३ ॥ जोग लइ पर आस धरतहे, याही
जगमें हांसी ॥ तुं जाने में गुनकुं संचुं, गुनतो जावे
नासी ॥ चेतन०॥४॥ पुद्गलकी तुं आस धरतहे, सो तो
सबहिं बिनासी ॥ तुं तो भिन्नरूप हे उनतें, चिदा-
नंद अविनासी ॥ चेतन० ॥५॥ धन खरचे नर बहुत
गुमाने, करवत लेवे कासी ॥ तोभी दुःखको अंत न
आवे, जो आसा नहिं घासी ॥ चेतन०॥६॥ सुखजल
विषम विषय मृगतृष्णा, होत मूढमति प्यासी ॥
विभ्रम भूमि भइ पर आसी, तुं तो सहज विलासी
॥चेतन०॥ ७ ॥ याको पिता मोह दुःख भ्राता, होत
विषय रति मासी ॥ जब सुत जरता अविरति प्रानी,

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

मिथ्यामति हे हांसी ॥ चेतन० ॥ ८ ॥ आसा ओरं रहे जो जोगी, सो होवे सिव वासी ॥ उनको सुजस बखाने ज्ञाता, अंतरदृष्टि प्रकासी ॥चेतन०॥ए॥इति॥

॥ पद बहुं ॥

॥ राग कनडो ॥ अजब गति चिदानंद घनकी ॥ टेक ॥ नव जंजाल शक्तिसुं होवे, उलट पुलट जिनकी ॥ अजब०॥१॥ नेदी परनति समकित पायो, कर्मवज्र घनकी ॥ ऐसी सबल कठिनता दीसे, कोमलता मनकी ॥ अजब० ॥ २ ॥ जारी मूमि जयंकर चूरी, मोहराय रनकी ॥ सहज अखंड चंरुता याकी, उमा विमल गुनकी ॥ अजब० ॥ ३ ॥ पापवेली सब ज्ञान दहनसे, जाली नववनकी ॥ शीतलता प्रगटी घट अंतर, उत्तम लछनकी ॥ अजब० ॥४॥ उकुराइ जगजनते अधिकी, चरन करन घनकी ॥ रुद्धि वृद्धि प्रगटे नीज नामे, ख्याति अकिंचनकी ॥ अजब० ॥ ५ ॥ अनुनवबिनु गति कोउ न जाने, अलख निरंजनकी ॥ जस गुन गावत प्रीती निवाहो, उनके समरनकी ॥ अ० ॥ ६ ॥

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

॥ पद सातमुं ॥

॥ राग सारंग ॥ जिउ लाग रह्यो परभावमें, टेक ॥ सहज स्वभाव लखे नहिं अपनो, परियो मोह जंजालमें ॥ जिउ० ॥ १ ॥ वंछे मोक्ष करे नहि करनी, डोलत ममता वाउमें ॥ चहे अंध ज्युं जलनिधि तरवो, बेठो कांणे नाउमें ॥ जिउ० ॥ २ ॥ अरति पिशाची परवश रहेतो, खिनहु न समख्यो आउमे ॥ आप बचाय सकत नहिं मूरख, घोर विषयके घाउमें ॥ जिउ० ॥ ३ ॥ पूर्व पुण्य घन सबहि ग्रसतहे, रहत न मूल बढाउमें ॥ तामें तुज केसे बनी आवे, नय व्यवहारके दाउमें ॥ जिउ० ॥ ४ ॥ जस कहे अब मेरो मन लीनो, श्रीजिनवरके पाउमें ॥ याहि कल्यान सिद्धिको कारन, ज्युं वेधकरस खाउमें ॥ जिउ० ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ पद आठमुं ॥

॥ राग बिलाउल ॥ मेरे साहिब तुंम हि हो, श्री पास जिणंदा ॥ खिजमतगार गरीब हुं, मे तेरा बंदा ॥ मेरे० ॥ १ ॥ टेक ॥ में चकोर करूं चाकरी, जब तुमहिं चंदा ॥ चक्रवाक में हुइ रहौं, जब

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

तुमहिं दिणंदा ॥ मेरे० ॥ २ ॥ मधुकरपरे में रनं-जनुं, जब तुम अरविंदा ॥ नक्ति करौं खगपति परे, जब तुमहिं गोविंदा ॥ मेरे० ॥ ३ ॥ तुम जब गर्जित घन नये, तब में शिख बंदा ॥ तुम सायर जब में तदा, सुरसरिता अमंदा ॥ मेरे० ॥ ४ ॥ दूर करो दादा पासजी, नवदुःखका फंदा ॥ वाचक जश कहे दासकुं, दियो परमानंदा ॥ मेरे० ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ पद नवमुं ॥

॥ राग सामेरी ॥ मेरे प्रजुसुं प्रगट्यो पूरन राग ॥ टेक ॥ जिन गुन चंद किरनसुं उमग्यो, सहज समुद्र अथाग ॥ मेरे० ॥ १ ॥ ध्याता ध्येय नये दोउ एकहु, मिट्यो नेदको नाग ॥ कुल बिदारी ढले जब सरिता, तब नहिं रहत तडाग ॥ मेरे० ॥ ॥ २ ॥ पूरन मन सब पूरन दीसे, नहिं दुबिधाको लाग ॥ पाउ चलतपनही जे पहिरे, नहि तस कंटक लाग ॥ मेरे० ॥ ३ ॥ नयो प्रेम लोकोत्तर जूगो, लोक बंधको ताग ॥ कहो कोउ कछु हमतो न रूचे, त्रुटि एक वीतराग ॥ मेरे० ॥ ४ ॥ वासत हे जिन गुन मुझ दिलकुं, जेसो सुरतरु बाग ॥ और वास-

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

नां लगे न तातें, जस कहे तुं वडभाग॥ मेरे०॥५॥ इति॥

॥ पद दशमुं ॥

॥ राग गोडसारंग तथा पूर्वी ॥ पसारी कर लीजे, इछुरस भगवान ॥ चढत सिखा श्रेयांस कुमरकी, मानु निरमल ध्यान॥ पसारी० ॥ १ ॥ टेक ॥ में पुरुषोतम करकी गंगा, तुं तो चरन निदान ॥ इत गंगा अंबर तर जनकुं, मानुं चली असमान ॥ ॥ पसारी० ॥ २ ॥ किधो विधु बिंब सुधासूं चाहत, आप मधुरता मान ॥ किधो दायककी पुण्य परंपर, दाखत सरगविमान॥ पसारी० ॥ ३ ॥ प्रभुकर इछुरस देखी करत हे, ऐसी उपमा जान ॥ जश कहे चित वित पात्र मिलावें, युं भविकुं जिन भान ॥ पसारी० ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ पद अगीयारमुं ॥

॥ राग अडाणो ॥ शीतल जिन मोहि प्यारा ॥ टेक ॥ भुवन विरोचन पंकज लोचन, जिउके जिउ हमारा॥ शीतल० ॥१॥ ज्योतिशुं ज्योत मिलत जब ध्यावें, होवत नहि तब न्यारा ॥ बांधी मूठी खुले जब माया, मिटे महा भ्रम जारा ॥ शीतल० ॥२॥

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

तुम न्यारे तब सबहि न्यारा, अंतर कुटुंब उदारा ॥ तुमहीं नजिक नजिक हे सबहीं, ऋद्धि अनंत अपारा ॥ शीतल० ॥ ३ ॥ विषय लगनकी अगनि बूझावत, तुम गुन अनुभव धारा ॥ भइ मगनता तुम गुनरसकी, कुन कंचन कुन दारा ॥ शीतल० ॥ ४ ॥ शीतलता गुन होर करत तुम, चंदन काह बिचारा ॥ नामेहीं तुम ताप हरतहे, वाकुं घसत घसारा ॥ ॥ शीतल० ॥ ५ ॥ करहु कष्ट जन बहुत हमारे, नाम तिहारो आधारा ॥ जस कहे जनममरण भय भागो, तुम नामे भवपारा ॥ शीतल०॥ ६ ॥ इति ॥

॥ पद बारमुं ॥

॥ राग वेलावल ॥ प्रभु तेरो वचन सुन्यो जबहीथें सुविहान ॥ टेक ॥ तबहीथें तत्त्व दाख्यो, चाख्यो रस ध्यान ॥ भाव नाली ए जागी, मानुं कीधो सुधापान ॥ प्रभु तेरो० ॥ १ ॥ श्रुतचिंता ज्ञान सोतो, खीर नीर वान ॥ विषय तृष्णा बुझावे, सोहि साचो ज्ञान ॥ प्रभु तेरो० ॥ २ ॥ गायन हरन तातें; नादे धरे कान ॥ तेसेहिं करत मोहिं, संत गुन ध्यान ॥ प्रभु तेरो० ॥ ३ ॥ प्रानतें अधिक सांइ, केसे कहुं

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

प्रांन ॥ प्रानथी अभिन्न दाख्यो, प्रत्यक्ष प्रमान ॥ प्रभु तेरो० ॥४॥ भिन्न ने अभिन्न कहु, स्याद्वादें वान ॥ जस कहे तु हें तु हें, तुं हें जिन जान ॥ प्र० ॥५॥

॥ पद तेरमुं ॥

॥ राग परज ॥ चेतन राह चले ऊलटे ॥ टेक ॥ नखशिखलो बंधनमां बेठे, कुगुरु वचन गुलटे ॥ चेतन० ॥ १ ॥ विषय विपाक जोग सुख कारन, छिनमें तुम पलटे ॥ चाखी ठोर सुधारस समता, जवजल विषय घटे ॥ चेतन० ॥ २ ॥ जवोदधि भिच रहे तुम ऐसे, आवत नाहिं तटे ॥ जिहां तिमिंगल घोर रहतुहे, चार कषाय कटे ॥ चेतन० ॥ ॥ ३ ॥ वरविलास बनिता नयनके, पडे पास पलटे॥ अब परवश जागे किहां जाओगे, जाले मोहजटे ॥ चेतन० ॥ ४ ॥ मन मेले जो किरिया कीनी, ठगे लोक कपटे ॥ उनकुं फलबिनुं जोग मिटेगो, तुमकुं नांहि रटे ॥ चेतन० ॥ ५ ॥ सीख सुनी अब रहो सुगुरुके, चरणकमल निकटे ॥ युं करते तुम सुजस लहोगे, तत्त्व ज्ञान प्रगटे ॥ चेतन० ॥ ६ ॥ इति॥

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

॥ पद चौदमुं ॥

॥ राग नायकी कनडो ॥ चेतन ममता ठांड परी-री, दूर परीरी ॥ चेतन० ॥ टेक ॥ पर रमनिसुं प्रेम न कीजें, आदरी समता आप वरीरी ॥ चेतन० ॥ ॥ १ ॥ ममता मोह चंडालकी बेटी, समता संयम नृप कुमरीरी ॥ ममता मुख दुर्गंध असत्यें, समता सत्य सुगंध नरीरी ॥ चेतन० ॥ २ ॥ ममतासें लरते दिन जावे, समता नहिं कोउ साथ लरीरी, ममता हेतु बहुत हे दुश्मन, समताके कोऊ न अरीरी ॥ चेतन० ॥ ३ ॥ ममताकी दुर्मति हे आली, डाकिनी जगत अनर्थ करीरी ॥ समताकी शुभमति हे आली, परउपगार गुणे समरीरी ॥ चेतन० ॥ ४ ॥ ममता पुत्त नए कुल खंपन, सोक बियोग महा मत्सरीरी ॥ समता सुत होवेगे केवल, रहे दिव्य निशान धुरीरी ॥ चेतन० ॥ ५ ॥ समता मग्न रहे जो चेतन, जो ए धारे शीख खरीरी ॥ सुजसविलास लहेगो तो तुं, चिदानंदघन पदवि वरीरी ॥ चेतन० ॥ ६ ॥ इति ॥

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

॥ पद पन्नरमुं ॥

॥ राग नायकी कनडो॥या गति कौन हे सखी तोरी, कोन हे सखी तोरी ॥ टेक ॥ इत उत युंहि फिरत हे घडेली, कंत गयो चित चोरी ॥ यागति० ॥ १ ॥ चितवत हे बिरहानल बुझवत, सिंच नयन जल जोरी ॥ जानत हे उहां हे बडवानल, जलण जल्यो जिहुं ओरी ॥ यागति० ॥ २ ॥ चल गिरनार पिया दिखलावुं, नेह निहावन धोरी ॥ हलिमिलि मुगति मोहोलमें खेले, प्रनमे जस या जोरी ॥ यागति० ॥ ३ ॥ इति ॥

॥ पद शोलमुं ॥

॥ राग सारंग ॥ हम मगन भए प्रभु ध्यानमें, टेक ॥ बिसर गइ दुविधा तन मनकी, अचिरा सुत गुन ज्ञानमें ॥ हम० ॥ १ ॥ हरिहर ब्रह्म पुरंदरकी रुद्धि, आवत नांहि कोउ मानमें ॥ चिदानंदकी मोज मची हे, समतारसके पानमें ॥ हम० ॥ ॥ २ ॥ इतने दिन तुं नांहि पिछान्यो मेरो, जन्म गमायो अजानमें ॥ अबतो अधिकारी होइ बेठे, प्रभु गुन अखय खजानमें ॥ हम० ॥ ३ ॥ गइ दी-

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

नता सबही हमारी, प्रभु तुज समकित दानमें ॥ प्रभु गुन अनुभवके रस आगें, आवत नही कोउ ध्यानमे ॥ हम० ॥ ४ ॥ जिनहि पाया तिनहि छिपाया, न कहे कोउके कानमें ॥ ताली लागी जब अनुभवकी, तब जाने कोउ ज्ञानमें ॥ हम० ॥ ५ ॥ प्रभु गुन अनुभव चंद्रहास्य ज्यो, सोतो न रहे म्यानमें ॥ वाचक जश कहे मोह महा अरि, जीत लीयो हे मेदानमें ॥ हम० ॥ ६ ॥ इति ॥

॥ पद सत्तरमुं ॥

॥ राग काफी ॥ देखतही चित्त चोर लीयो है, देखतही चित्त चोर लीयो ॥ सामको नाम रुचे मोहि अहनिस, साम बिना कहा काज जीयो ॥ देखतही० ॥ १ ॥ टेक ॥ सिद्धवधूके लीए मुझ छोरी, पशुअनके सिर दोष दीयो ॥ परकी पीर न जाने तासों, वैर वसायो जो नेह कीयो ॥ देखतही० ॥ २ ॥ प्रान धरुं में प्रानपिया बिन, वज्रहथें मोहि कठिन हियो ॥ जस प्रभु नेमि मिले दुःख डार्यो, राजुल शिवसुख अमृत पियो ॥ देखतही० ॥ ३ ॥ इति ॥

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

॥ पद अढारमुं ॥

॥ राग कल्याण ॥ सलुने प्रभु भेटे, अंतरीक प्रभु भेटे ॥ स० ॥ टेक ॥ जगत वछल हित दाइ, स० ॥ मोह चोर जब जोर फिरावत, तब समरवो प्रभु नेटे ॥ स० ॥ १ ॥ और सखाइ चार दिवसके, साच सखा प्रभु बेठे ॥ इतनो आप विवेक विचारो, मायामें मत लेटे ॥ स० ॥ २ ॥ भामणडे तो भूख न भांगे, बिनुं भोजन गए पेटे ॥ भगवंत भक्ति बिना सवि निष्फल, जस कहे भक्तिमें भेटे ॥ स० ॥ ३ ॥ इति ॥

॥ पद ओगणीशमुं ॥

॥ राग धन्याश्री ॥ जिन चरण सरन ग्रहुं ॥ टेक ॥ हृदयकमलमें ध्यान धरतुहे, सिर तुज आण वहुं ॥ जिन० ॥ १ ॥ तुज सम खोल्यो देव खलकमें, पेख्यें नांहिं कहुं ॥ तेरे गुनकी जपुं जपमाला, अहनिसि पाप दहुं ॥ जिन० ॥२ ॥ मेरे मनकी तुम सब जानो, क्या मुख बहुत कहुं, कहे जस विजय करो तुम साहिब, ज्युं भव दुःख न लहुं ॥ जिन० ॥ ३ ॥ इति ॥

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

॥ पद वीशमुं ॥

॥ राग जयजयवंती ॥ अजब बनीहे जोरी, अर्धंग धरीहे गोरी ॥ शंकर शंकहिं ठोरी, गंगसिर धरीहे ॥ अ० ॥ १ ॥ प्रेमके पीवत प्याले, होत महा मतवाले, न चलत तिहूं पाले, असवारी खरी हे ॥ अ० ॥ २ ॥ ज्ञानीको एसो उत्साह, समताके गले बांह, सिरपर जगनाह, आण सुर सरीहे ॥ अ० ॥ ३ ॥ लोकके प्रवाह नांहि, सुजस विलास मांहि, चिदानंदघन ठाहि, रति अनुसरी हे ॥ अ० ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ पद एकवीशमुं ॥

॥ राग उपर प्रमाणे ॥ धर्मके विलास वास, ज्ञानके महा प्रकास, दास जगवंतके, उदास जाव लगे हें ॥ समता नदीतरंग, अंगही उपंग चंग, मज्जन प्रसंग रंग, अंग जगमगेहें ॥ धर्म० ॥ १ ॥ कर्मके संग्राम घोर, लरे महा मोह चोर, जोर ताको तोरवेंकुं, सावधान जगेहें ॥ शीलको धरी सनाह, धनुख महा उत्साह, ज्ञान बानके प्रवाह, सब वेरी जगे हें ॥ धर्म० ॥ २ ॥ आयो हे प्रथम सेन,

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

कामको गयो है रेन, हरिहर ब्रह्म जेण, एकलेने ठगेहें, क्रोध मान माया लोभ, सुभट महा अखोभ, हारे सोय छोड थोभ, मुख देइ भगेहें ॥ धर्म० ॥ ३ ॥ नोकषाय भये खीन, पापको प्रताप हीन, और भट भये दिन, ताके पग ठगेहें ॥ कोउ नहीं रहे ठाढे, कर्म जो मिले ते गाढे, चरनके जिहा काढे, करवाल नगेहें ॥ धर्म० ॥ ४ ॥ जगत्रय भयो प्रताप, तपत अधिक ताप, तातें नाहिं रही चाप, अरी तगतगे-हें ॥ सुजस निसान साज, विजय वधाइ लाज, ए-से मुनिराज, ताकुं हम पाय लगेहें ॥ धर्म० ॥५॥ इति ॥

॥ पद बावीशमुं ॥

॥ राग रामकली ॥ ऋषभदेव हितकारी, जगत गुरु ऋषभदेव हितकारी ॥ टेक ॥ प्रथम तीर्थंकर प्रथम नरेसर, प्रथम यति ब्रह्मचारी ॥ ऋषभदेव० ॥ ॥ १ ॥ वरसी दान देई तुम जगमें, इलति इति निवारी ॥ तैसी काही करतु नांही करुना, साहिब बेर हमारी ॥ ऋषभ० ॥२॥ मांगत नहिं हम हाथी घोरे, धन कन कंचन नारी ॥ दियो मोहि चरन क-मलकी सेवा, याहि लगत मोहि प्यारी ॥ ऋषभ० ॥

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

॥ ३ ॥ नव लीला वासित सुर डारे, तुंपर सबही उवारी ॥ में मेरो मन निश्चल कीनो, तुम आणा सिरधारी ॥ रुषन० ॥ ४ ॥ ऐसो साहिब नहिं कोउ जगमें, यासुं होय दिलदारी ॥ दिलहि दलाल प्रेमके बिचे, तिहां हठ खेंचे गमारी ॥ रुषन० ॥ ५ ॥ तुंमहि साहिब में हुं बंदा, या मत देऊ विसारी ॥ श्रीनयबिजय विबुध सेवकके, तुमहो परम उपकारी ॥ रुषन० ॥ ६ ॥

॥ पद त्रेवीशमुं ॥

॥ राग वेलावल ॥ गौतम गणधर नमियें हो, अहनिसि गौतम गणधर नमियें ॥ टेक ॥ नाम जपत नवही निधि पइएं, मन वंछित सुख लहिएं हो ॥ अह० ॥ १ ॥ घर अंगन जो सुरतरु फलियो, कहा काज बन नमियें ॥ सरस सुरभि घृत जो हुवे घरमें, तो क्यों तैले जमियें हो ॥ अह० ॥ ॥ २ ॥ तेसी श्रीगौतम गुरु सेवा, ओर ठोर क्युं रमियें ॥ गौतम नामें नवजल तरिएं, कहा बहुत तनु दमियें ॥ अह० ॥ ३ ॥ गुण अनंत गौतमके समरन, मिथ्यामति विष गमियें ॥ जस कहे गौतम

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

गुनरस आगें, रुचत न हें हम अमियें॥अह०॥४॥इति॥

॥ पद चोवीशमुं ॥

॥ राग नट्ट ॥ सुखदाइरे सुखदाइ, दादो पासजी सुखदाइ ॥ ऐसो साहिब नहिं कोउ जगमें, सेवा कीजें दील लाइ ॥ सुख० ॥ १ ॥ सब सुखदाइ एह निनायक, एहि सायक सुसहाइ ॥ किंकरकुं करे शंकर सरिसों, आपे अपनी ठकुराइ ॥ सुख० ॥ ॥ २ ॥ मंगल रंग वधे प्रभु ध्यानें, पापबेल्ली जाए करमाइ ॥ सीतलता प्रगटे घट अंतर, मिटे मोहकी गरमाइ ॥ सुख० ॥ ३ ॥ कहा करुं सुरतरु चिंतामनिकुं, जो में प्रभु सेवा पाइ ॥ श्री जसविजय कहे दर्शन देख्यो ॥ घर अंगन नवनिधि आइ॥सुख०॥४॥इति

॥ पद पचीशमुं ॥

॥ राग देशाख ॥ अबमें साचो साहिब पायो, टेक ॥ याकी सेव करतहुं याकुं, मुज मन प्रेम सुहायो ॥ अब० ॥ १ ॥ ठाकुर ओर न होवे अपनो, जो दीजे घर मायो ॥ संपति अपनी खिनुंमें देवे, वेतो दिलमें ध्यायो ॥ अब० ॥ २ ॥ उरनकी जन करत चाकरी, दूरदेश पाय घासे ॥ अंतरयामी ध्याने

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

दीशे, वेतो अपने पासें ॥ अब० ॥ ३ ॥ ओर कब हुं कोउ कारन कोप्यो, बहुत उपाय न तूसे ॥ चिदानंदमें मगन रहतुहे,वेतो कबहुं न रुसे ॥अब०॥४॥ ओरनकी चिंता चिंतींन मिटे,सब दिन धंधे जावे ॥ थिरता गुन पूरन सुख खेले, वेतो अपने जावें ॥ अब० ॥ ५ ॥ पराधीन हे जोग ओरको, जातें होत वियोगी ॥ सदा सिद्ध समताइ विलासी, वेतो निजगुन जोगी ॥ अब० ॥ ६ ॥ ज्यौं जानो त्यौं युगति न जानो, में तो सेवक उनको ॥ पक्षपात तो परसुं होवे, राग धरतहुं गुनको ॥ अब० ॥ ७ ॥ जाव एक हे सब ज्ञानीको, मूरख जेद न जावे ॥ अपनो साहिब जो पहिचाने, सो जस लीला पावे ॥ अ० ॥ ८ ॥

॥ पद बवीशमुं ॥

॥ राग जूप कल्याण ॥ सयनकी नयनकी बयनकी बबी नीकी ॥ मयनकी गोरीतकी लगी मोहि अवियां ॥ मनकी लगन जर अंगनीय लागे अली, कल न परत कबु कहा कहुं बतीयां ॥ सयनकी०॥ १ ॥ मोहन मनाउ मानी, कहा बनी रति बानी, शिवा देवीके नंदन मानो बिनतियां ॥ गुन गहो जस

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

बहो घर रहो सुख लहो, दुःख गमो मुझ समो रंग रमो रतियां ॥ सयनकी०॥ २ ॥ इति ॥

॥ पद सत्तावीशमुं ॥

॥ राग काफी हुशेनी ॥ साहिब ध्याया मन मोहना, अति सोहना जवि बोहना ॥ साहिब०॥ टेक ॥ आजतें दिन सफल मेरे, मानुं चिंतामनी पाया ॥ साहिब० ॥ १ ॥ चोसठ इंद्रे मिलिय पूज्यो, इंद्रानी गुन गाया ॥ साहिब० ॥ २ ॥ जनम महोछव करे देव, मेरुशिखर ले आया ॥ हरिको मन संदेह जानी, चरनन मेरु चलाया ॥ साहिब० ॥ ३ ॥ अहि वैताल रूप देखी, देवें न वीर खोजाया ॥ प्रगट जये पाय लागी, वीरनाम बुलाया ॥ साहिब० ॥ ४ ॥ इंद्र पूछे वीर कहे, व्याकरन नीपाया ॥ मोहिथी निशाल घरन, युंहिं वीर पढाया ॥ साहिब० ॥ ५ ॥ वरसी दान देइ धीर, लेइ व्रत सुहाया ॥ साखतले ध्यान ध्यातां, घाती घन खपाया ॥ साहिब० ॥ ६ ॥ लहि अनंत ज्ञान आप, रूप जगमगाया ॥ जस कहे हम सोइ वीर, ज्यौतिसुं ज्योति मिलाया ॥सा०॥७॥

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

॥ पद अष्ठावीशमुं ॥

॥ राग केदारो दरबारी ॥ आवे हाथी दल साज गाजते, नेमजी घर आवे, ए देशी ॥ प्रभुबल देखी सुरराज, लाजतो इम बोले ॥ देखो बल नांग्यो भ्रम सेरो, कोनहि जग तुम तोले ॥ प्रभु० ॥ १ ॥ टेक ॥ चरन अंगुठे कंपित सुरगिरि, मानुं नाचत डोले ॥ इन मिसि प्रभु मोहि उपर तूठे, हरख हियाको खोले ॥ प्रभु० ॥ २ ॥ हरत शेषधर हरत महोदधि, भय भंगुर भूगोले ॥ दिसि कुंजर दिग्मूढ भए तब, सबहिं मिलत एक टोले ॥ प्रभु० ॥ ॥ ३ ॥ लीला बाल अबाल पराक्रम, तीन भुवन धंधोले ॥ जस प्रभु वीर महेर अब कीजें, बहुरि हुन परिहु भोले ॥ प्रभु० ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ पद ओगणत्रीशमुं ॥

॥ राग उपर प्रमाणे ॥ प्रभु धरी पीठ वेताल बाल, सात ताललों वाधे ॥ काल रूप विकराल भयंकर, लागत अंबर आधे ॥ प्रभु० ॥ १ ॥ टेक ॥ बाल कहे को वीर ले गयो, परिजन देव आराधे ॥ तिल त्रिभाग चित्त वीर न खोभ्यो, बल अनंत कुन

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

बाधे ॥ प्रभु० ॥ २ ॥ वढत रहे नांहि सुरजिषण, जानु मोहि विराधे ॥ कुलिश कठिन दृढ मुष्टि मार्यो, संकुचित तनु मन दाधे ॥ प्रभु० ॥ ३ ॥ सुर कहे परतख मोहि नयोहे, पानी रस विण खाधे ॥ जस कहे इंद्र प्रसंस्यो तैसो, तुंहि वीर शिव साधे॥ प्रभु० ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ पद त्रीशमुं ॥

॥ राग श्रीराग ॥ अब मोही ऐसी आय बनी ॥ टेक ॥ श्री संखेश्वर पास जिनेसर, मेरे तुं एक धनी ॥ अब० ॥ १ ॥ तुं बिनुं कोउ चित न सुहावे, आवे कोडि गुनी ॥ मन दोरे तुज ऊपर रसिओ, अलि जिम कमल जनी ॥ अब० ॥ २ ॥ तुज नामें सवि संकट चूरे, नागराज धरनी ॥ नाम जपौं निसिवासर तेरो, या सुज मुज करनी ॥ अब० ॥ ३ ॥ कोपानल उपजायत दुर्जन, मथन वचन अरनी ॥ नाम जपुं जलधार तिहां तुज, धारुं दुःख हरनी ॥ अब० ॥ ४ ॥ मिथ्यामति बहु जन हे जगमां, मदन धरे धरनी॥ उनतें हम तुज जक्ति प्रजावे, जय नहें एक कनी ॥ अब० ॥ ५ ॥ सज्जन नयन सुधा-

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

रस अंजन, दुरजन रवि नरनी ॥ तुज मूरत निरखे सो पावे, सुखजस लील घनी ॥ अब०॥ ६ ॥ इति ॥

॥ पद एकत्रीशमुं ॥

॥ राग प्रजाति ॥ विमलाचल नित वंदिये, कीजे एहनी सेवा ॥ मानु हाथ ए धर्मनो, शिवतरु फल लेवा ॥ विमलाचल० ॥ १ ॥ टेक ॥ उज्वल जिनग्रह मंडले, तिहां दीपे उत्तंगा ॥ मानु हिमगिरि विभ्रमे, आइ अंबर गंगा ॥ विमलाचल० ॥ २ ॥ कोइ अनेरु जग नहीं, तीरथ ए तोले ॥ एम श्री मुख आगलें, श्री सीमंधर बोले ॥ विमलाचल० ॥ ॥ ३ ॥ जे सघलां तीरथ करे, यात्रा फल लहिएं ॥ तेहथी ए गिरि भेटतां, शतगुणु फल लहिएं ॥ विमलाचल० ॥ ४ ॥ जन्म सफल होए तेहनो, जो ए गिरि वंदे ॥ सुजस विजय संपद लहे, ते नर चिर नंदे ॥ विमलाचल० ॥ ५ इति ॥

॥ पद बत्रीशमुं ॥

॥ राग देव गंधार ॥ देखो माइ अजब रूप जिनजीको ॥ देखो०॥ टेक ॥ उनके आगें और सबनको, रूप लगे मोहि फीको ॥ देखो०॥ १ ॥ लोचन

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

करुना अमृत कचोले, मुख सोहे अति नीको ॥ कवि जस विजय कहे यों साहिब, नेमजी त्रिभुवन टीको ॥ देखो० ॥ इति ॥

॥ पद तेत्रीशमुं ॥

॥ राग गुर्जरी पूर्वी ॥ बाला रूप शाला गले, माला सोहे मोतनकी ॥ करे नृत्य चाला गोरी, टोरी मिलि जोरीसी ॥ देवरकुं रहि घेरी, सेना मानु काम केरी, गुनगाती आवे तेरी, करे चित चोरिसी ॥ विवाह मनावे आली, पहिरी दखण फाली, वाकुं निहाले बाली, छोडी लाज होरीसी ॥ तोजी नेमि स्वामि गज, गामी जस कामी जस, धामी रहे ग्रहि मौन ध्यान, धारा वज्र दोरीसी ॥ १ ॥ इति ॥

॥ पद चोत्रीशमुं ॥

॥ राग धन्याश्री ॥ जबलग आवे नहिं मन ठाम ॥टेक॥ तबलग कष्ट क्रिया सवि निष्फल, ज्यौं गगने चित्राम ॥ जबलग० ॥ १ ॥ करनी बिन तुं करे मोटाइ, ब्रह्मव्रति तुझ नाम ॥ आखर फल न लहेगो ज्यौं जग, व्यापारी बिनु दाम ॥ जबलग० ॥ ॥ २ ॥ मुंड मुडावत सबहि गडरिया, हरिण रोझ

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

बन धाम ॥ जटाधार वट जस्म लगावत, रासभ स हतु हे धाम ॥ जबलग० ॥ ३ ॥ एतेपर नहीं योगकी रचना, जो नहि मन विश्राम ॥ चित अंतर पर ठलवेकुं चिंतवत, कहा जपत मुख राम ॥ जबलग० ॥ ४ ॥ बचन काय गोपें दृढ न धरे, चित्त तुरंग लगाम ॥ तामे तुं न लहे शिवसाधन, जिउ कण सुने गाम ॥ जबलग० ॥ ५ ॥ पढो ज्ञान धरो संजम किरिया, न फिरावो मन ठाम ॥ चिदानंद घन सुजस विलासी, प्रगटे आतमराम ॥ जबलग० ॥ ६ ॥ इति ॥

॥ पद पांत्रीशमुं ॥

॥ राग सोरठा ॥ चतुरनर सामायक नय धारो ॥ टेक ॥ लोक प्रवाह ठांडकर अपनी, परिणति शुद्ध विचारो ॥ चतुरनर० ॥ १ ॥ द्रव्यत अखय अजंग आतमा, सामायक निज जातें ॥ शुद्धरूप समतामय कहीएं, संग्रह नयकी वातें ॥ चतुरनर० ॥ २ ॥ अब व्यवहार कहे युं सब जन, सामायक हुइ जावे ॥ तातें आचरना सो माने, ऐसा नैगम गावे ॥ चतुरनर० ॥ ३ ॥ आचरना रिजुसूत्र

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

सिथलकी,बिनु उपयोग न माने ॥ आचारी उपयोगी आतम, सो सामायक जाने ॥ चतुरनर० ॥ ४ ॥ शब्द कहे संजत जो ऐसो,सो सामायक कहियें॥ चोथे गुनठाने आचरना,उपयोगें जिन्न लहियें ॥ चतुरनर० ॥ ५ ॥ अप्रमत्त ठाणे इर्याको, समजिरूढ नय साखी ॥ केवल ज्ञान दशा थिति उनकी, एवंभूते नाखी ॥ चतुरनर० ॥ ६ ॥ सामायक नय जो हु न जाने, लोक कहे सो माने ॥ ज्ञानवंतकी संगति नाहीं, रहियो प्रथम गुनठाने ॥ चतुर० ॥ ७॥ सामायक नर अंतर दृष्टे, जो दिनदिन अभ्यासें ॥ जग जसवाद लहे सो बैठो, ज्ञानवंतके पासें ॥ चतुरनर० ॥ ८ ॥

॥ पद बत्रीशमुं ॥

॥ राग बिहागडो ॥ सबल या ठाक मोह मदि राकी ॥ टेक ॥ मिथ्यामतिके जोरे गुरुकी, वचन शक्ति जिहां थाकी ॥ सबल० ॥ १ ॥ निकट दशा ठांरु जरु उंची, दृष्टि देतहे ताकी ॥ न करे किरिया जनकुं नाखे, नहि नवथिति पाकी ॥ सबल० ॥२॥ नाजन गत नोजन कोउ ठांडी, दसत्तर जिऊं दोरे॥

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

गहत ज्ञानकुं किरिया त्यागी, होत ओरकी ओरें॥ सबल० ॥ ३ ॥ ज्ञानबात निसुनि सीर धूने, लागे निज मति मीठी॥ जो कोउ खोल कहे किरियाको, तो माने नृप चीठी ॥सबल०॥ ज्युं कोउ तारु जलमें पेसी, हाथ पाउ न हलावे ॥ ज्ञानसेती किरिया सब लागी, युं अपनो मत गावे ॥ सबल० ॥ ५ ॥ जैसे पाग कोउ सिर बांधे, पहिरन नहिं लंगोटी॥ सद्गुरु पास क्रिना बिनु सीखे, आगम बात त्युं खोटी ॥ सबल० ॥ ६ ॥ जैसे गज अपने सिर ऊपर, छार आपही मारे ॥ ज्ञान ग्रहत क्रिया तुछारत, अल्पबुद्धि फल हारे ॥ सबल० ॥ ७ ॥ ज्ञान क्रिया दोउ शुद्ध धरेगे, शुद्ध कहे निरधारी ॥ जस प्रताप गुननिधिकी जाउं, उनकी में बलिहारी ॥ सबल० ॥ ८ ॥ इति ॥

॥ पद सडत्रीशमुं ॥

॥ राग काफी जंगलो ॥ चेतन अब मोहि दर्शन दीजे ॥ टेक ॥ तुम दर्शन शिवसुख पामीजे, तुम दर्शन भव छीजे ॥ चेतन० ॥ १ ॥ तुम कारन तप संयम किरिया, कहो कहांलों कीजे ॥ तुम दर्शन

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

बिनुं सब या झूठी,अंतर चित्त न जीजे ॥ चेतन०॥
॥ २ ॥ क्रिया मूढमति कहे जन केइ, ज्ञान ओर-
कुं प्यारो ॥ मिलत जावरस दोउ न जाखे, तुं दोनुंतें
न्यारो ॥चेतन०॥ ३ ॥ सबमें हे ओर सबमें नांही,
पूरन रूप एकेलो ॥ आप स्वजावे वे किम रमतो, तुं
गुरु अरु तुं चेलो ॥ चेतन० ॥४॥ अकल अलख प्रजु
तुं सब रूपी,तुं अपनी गति जाने ॥ अगम रूप आगम
अनुसारें, सेवक सुजस बखाने॥चेतन० ॥५॥इति ॥

॥ पद् अडत्रीशमुं ॥

॥ राग जीम पलासी ॥ राम चिरीया चेहरीहो
॥ एदेशी ॥ मन कितहुं न लागे हेजेंरे ॥ मन० ॥
टेक० ॥ पूरन आस जइ अली मेरी, अविनासीकी
सेजेंरे ॥ मन० ॥ १ ॥ अंग अंग सुनि पिउ गुन ह-
रखे, लागो रंग करेजेंरे ॥ एतो फिटायबो नवि
फिटे, करहु जोर जोरेजेरे ॥ मन० ॥ २ ॥ योग
अनालंबन नहिं निष्फल, तीर लगो ज्युं वेजेंरे ॥
अबतो जेद तिमिर मोहि जागो, पूरन ब्रह्मकी से-
जेरे ॥ सुजस ब्रह्मके तेजेरे ॥ मन० ॥ ३ ॥ इति ॥

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

॥ पद ओगणचालीशमुं ॥

॥ राग शोनी ॥ चिदानंद अविनासीहो, मेरो चिदानंद अविनासी हो ॥ टेक ॥ कोर मरोर कर-मकी मेटे, सहज स्वभाव विलासीहो ॥ चिदानंद० ॥ ॥ १ ॥ पुद्गल मेल खेलजो जगको, सोतो सबहि बिनासीहो ॥ पूरन गुन अध्यातम प्रगटें, जागे जोग उदासीहो ॥ चिदानंद० ॥ २ ॥ नाम नेख किरिया-कुं सबही, देखे लोक तमासीहो ॥ चिन मूरत चे-तन गुन चिने, साचो सोउ सन्यासीहो ॥ चिदानं-द० ॥ ३ ॥ दोरी देवारकी किति दोरे, मति व्यव-हार प्रकासीहो ॥ अगम अगोचर निश्चय नयकी, दोरी अनंत अगासी हो ॥ चिदानंद० ॥ ४ ॥ ना नाघटमें एक पिछाने, आतमराम उपासी हो ॥ भे-द कलपना में जग भूल्यों, बुध्यो तृष्णा दासीहो ॥ चिदानंद० ॥ धर्म सिद्धि नवनिधि हे घटमें, कहा ढुंढत जइ काशीहो ॥ जस कहे शांत सुधारस चा-ख्यो, पूरन ब्रह्म अभ्यासीहो ॥ चिदा० ॥ ६ ॥

॥ पद चालीशमुं ॥

॥ राग होरी ॥ हरी नारी टोले मिलि रंग हो

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

होरी ॥ टेक ॥ फाग रमे तजी लाल, रंग हो होरी देत रकुं घेर रही ॥ रंगहो० ॥ व्याह मनावन कीज लाल ॥ रंग० ॥ १ ॥ ताल कंसाल मृदंगसुं ॥ रंग० ॥ मधुर बजावत चंग लाल ॥ रंग० ॥ गयब गुलाल नयन झरे ॥ रंग० ॥ बइन बजावे अनंग लाल ॥ रंग० ॥ २ ॥ पिचकारी छांटे पीय ॥ रंग० ॥ झरी झरी केसर नीर लाल ॥ रंग० ॥ मानुं मदन करती छटा ॥ रंग० ॥ अलवे उडावे अंबीर लाल ॥ रंग० ॥ ३ ॥ योवन मद मदिरा छाकी ॥ रंग० ॥ गावत प्रेम धमाली लाल ॥ रंग०॥ राचत माचत नाचती ॥रंग०॥ कौतुकसुं करे आली लाल ॥रंग०॥ ॥ ४ ॥ सोहे मुख तंबोलसुं ॥रंग०॥ मानु संध्यायुत चंद लाल ॥ रंग० ॥ पूरित केसर फुलेलसुं ॥ रंग० ॥ झरत मेह ज्युं बुंद लाल ॥ रंग० ॥ ५ ॥ श्रण जुज मूल देखावती ॥ रंग० ॥ बाह लगावत कंठ लाल ॥ रंग० ॥ कहे देवर परनो पीया ॥ रंग० ॥ परनाबिन पुरुष उलंठ लाल ॥ रंग० ॥ ६ ॥ रूख मिलित रहे वेलीसुं ॥ रंग० ॥ सागर गंगा रंग लाल ॥ रंग० ॥ जान ठगाने अजानवें ॥ रंग० ॥ किउं न करो त्रिया

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

संग लाल ॥ रंग० ॥ ७ ॥ युं बिलास हरी नारीके ॥ रंग० ॥ देखी धरे प्रभु मोन लाल ॥ रंग० ॥ स्त्री शिशु सठ हठ न तजे ॥ रंग०॥ करे वचन श्रम कों न लाल ॥ रंग० ॥ ८ ॥ जनके जाने कहा जयो ॥ रंग०॥ मनको मान्यो प्रमान लाल ॥ रंग०॥ चतुर न चूके नेमजी ॥ रंग० ॥ पाए सुजस कल्यान लाल ॥ रंग० ॥ ए ॥ इति ॥

॥ पद एकतालीशमुं ॥

॥ जयजय जयजय पास जिणंद ॥ टेक ॥ अंतरीक प्रभु त्रिजुवन तारन, जविक कमल उल्लास दिणंद ॥ जय० ॥ १ ॥ तेरे चरन शरन में कीने, तुं बिनु कुन तोरे जवफंद ॥ परम पुरुष परमारथ दरशी, तुं दिये जविककुं परमानंद ॥ जय० ॥ २ ॥ तुं नायक तुं शिव सुख दायक, तुं हित चिंतक तुं सुखकंद ॥ तुं जन रंजन तुं जव जंजन, तुं केवल कमला गोविंद ॥ जय० ॥ ३ ॥ कोडि देव मिलिके कर न शके, इक अंगुठ रूप प्रतिछंद ॥ ऐसो अद्भुत रूप तिहारो, वरषत मानुं अमृतको बुंद ॥ जय० ॥ ४ ॥ मेरे मनमधुकरके मोहन, तुम हो विमल

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

सदल अरविंद ॥ नयन चकोर विलास करतुहे, देखत तुम मुख पूरनचंद ॥ जय० ॥ ५ ॥ दूर जावे प्रभु तुम दासनतें, दुःखदोहग दालिद्र अघदंद ॥ वाचक जस कहे सहस फलतें तुमहों, जे बोले तुम गुनके वृंद ॥ ज० ॥ ६ ॥

॥ पद बेतालीशमुं ॥

॥ राग धन्याश्री ॥ वामानंदन जगदानंदन, सेवकजन आसा विसराम ॥ नेक निजर करी मोहि पर निरखो, तुम हो करुनारसके धाम ॥ वामा० ॥ ॥ १ ॥ टेक ॥ इतनी भूमि प्रभु तुमही आन्यो, परिपरि बहुत बढाइ माम ॥ अब कु चार गुनगान बढावत, लागत हे क्या तुमकुं दाम ॥ वामा० ॥ ॥ २ ॥ अहनिसि ध्यान धरुं हुं तेरो, मुखथी न विसारुं तुम नाम ॥ श्रीनयविजय विबुध सेवक कहे, तुम हो मेरे आतमराम ॥ वामा० ॥ ३ ॥

॥ पद तेतालीशमुं ॥

॥ राग काफी ॥ अजीत देव मुझ वालहा, ज्युं मोरा मेहा ॥ टेक ॥ ज्युं मधुकर मन मालती, पंथी मन गेहा ॥ अजीत० ॥१॥ मेरे मन तुंहि रुच्यो, प्र-

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

जु कंचन देहा ॥ हरीहर ब्रह्म पुरंदरा, तुज आगें केहा ॥अजीत०॥२॥ तुंही अगोचर को नहीं, सज्जन गुन रेहा ॥ चाहे ताकुं चाहियें, धरी धर्म सनेहा ॥ अजित० ॥ ३ ॥ जक्ति वछल जग तारनो, तुं बिरुद वदेहा ॥ वीतराग हुए वालहा ॥ क्युं कर्म री छेहा ॥ अजित० ॥ ४ ॥ जे जिनवर हे जरतमें, एरावत विदेहा ॥ जस कहे तुज पद प्रणमतें, सब प्रणमे तेहा ॥ अजित० ॥ ५ ॥

॥ पद चुमालीशमुं ॥

॥ राग गोडी ॥ संजव जिन जव नयन मिल्यो हो ॥ टेक ॥ प्रगटे पूरव पुण्यके अंकुर, तवतें दिन मोहि सफल वल्यो हो ॥ संजव० ॥ १ ॥ अंगनमें अमियें मेह वूठे, जन्म तापको व्याप गल्यो हो ॥ जैसी जक्ति तैसी प्रजु करुना, श्वेत संखमें दुध मिल्यो हो ॥ संजव० ॥ २ ॥ झरत फिरत हे डुरही दीलतें, मोह मल्ल जिणे जगत्रय वल्यो हो ॥ समकित रतन लेहु दरिसणतें, अब न जाऊं कुगति रल्यो हो ॥ संजव० ॥ ३ ॥ नेह नजर जर निरखतही मुझ, प्रजुसुं हियडो हेज हल्यो

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

हो ॥ श्रीनयविजय विबुध सेवककुं ॥ साहिब सुरतरु होय फल्यो हो ॥ संजव० ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ पद पीसतालीशमुं ॥

॥ राग नट्ट ॥ प्रजुतें हियडो हेज हल्यो हो ॥ टेक ॥ याकी सोजा विजित तपस्या, कमल करतुं-हे जलचारी ॥ विधुके सरन गयो मुख अरिके, बनतें गगन हरिण हारी ॥ प्रजु० ॥ १ ॥ सहजहि अंजन मंजुल निरिषत, खंजन गरव दिओ मारी ॥ जिन लइ हे चकोरकी सोजा, अग्नि जखे सो दुःखजारी ॥ प्रजुतें० ॥ २ ॥ चंचलता गुन लियो मीनको, अलि ज्युं तारी हे कारी ॥ कहुं सुजगता केती इनकी, मोहि सबहि अमरनारी ॥ प्रजुतें० ॥ ३ ॥ घूमत हे समता रस पाने, जैसे गजवर मद जारी ॥ तीन जुवनमां नही को इनको, अजिनंदन जिन अनुकारी ॥ प्रजुतें० ॥ ४ ॥ मेरे मन तो तुमहि रुचत हे, परे कुन परकी लारी ॥ तेरे नयनकी मेरे नयनमें, जस कहे देज जबि अवतारी ॥ प्रजुतें० ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ पद बेतालीशमुं ॥

॥ राग मारु ॥ सुमति नाथ साचाहो ॥ टेक ॥

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

पर पर परखतहि जया, जैसा हीरा जाचाहो ॥ ओर देव सवि परहस्या, में जाणी काचाहो ॥ सुमति० ॥ ॥ १ ॥ तेसी किरिया हे खरी, जैसी तुज वाचाहो ॥ ओर देव सवि मोहें नस्या, सवि मिथ्या माचाहो ॥ सुमति० ॥ २ ॥ चउरासी लखवेषमां, हुं बहु पर नाचाहो ॥ मुगति दान देइ साहिबा, अब करहो ऊंचाहो ॥ सुमति० ॥ ३ ॥ लागी अग्नि कषायकी, सब ठोरही आचाहो ॥ रक्षक जाणी आदस्या, में तुम शरन माचाहो ॥ सुमति० ॥ ४ ॥ पक्षपात नहिं कोउसुं, नहिं लालच लांचाहो ॥ श्रीनयविजय सुशिष्यको, तोसुं दिल राचाहो ॥ सुमति० ॥५॥ इति ॥

॥ पद सुडतालीशमुं ॥

॥ राग पूरवी ॥ घरि घरि सांजरें सांइ सलूना, घरि घरि० ॥ टेक ॥ पद्म प्रभु जिन दिलसें न बिसरे, मानु कियो कछु गुनको टूना ॥ दरसन देखतही सुख पाउं, तो बिन होतहुं उन्ना ऊना ॥ घरि० ॥ १ ॥ प्रभुगुन ज्ञान ध्यान बिधि रचना, पान सुपारी काथा चूना ॥ राग भयो दिलमें आयोगें, रहे छिपाया छाना छूना ॥ घरि० ॥ २ ॥ प्रभुगुन

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

चिंत्त बांध्यो सब साथे, कुन पेसे लेइ घर खूना ॥ राग जग्या प्रजुसुं मोहि परगट, कहो नया कोऊ कहो जूना ॥ घरि० ॥ ३ ॥ लोक लाजसें जो चित चोरे, सोतो सहज विवेकही सूना ॥ प्रजुगुन ध्यान विगर भ्रम जूला, करे किरिया सो राने रूना ॥ घरि० ॥ ४ ॥ मेंतो नेह कियो तोहि साथे, अब निवाह तोतो वइ हूना ॥ जस कहे तो बिन ओर न सेवुं, अमिय खाइ कुन चाखे लूना ॥ घरि० ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ पद अडतालीशमुं ॥

॥ राग इमन कल्याण ॥ ऐसे सामी सुपार्श्वसें दिल लगा, दुःखजगा सुख जगा जगतारणा ॥ राजहंसकुं मानसरोवर, रेवा जल ज्युं वारणा ॥ ऐसे० ॥ १ ॥ टेक ॥ मोरकुं मेह चकोरकुं चंदा, मधु मनमथी चित्त गारना ॥ फूल अमूल जमरकी अंबही, कोकिलकुं सुखकारना ॥ ऐसे० ॥ २ ॥ सीताकुं राम काम ज्युं रतिकुं, पंथीकुं घर बारना ॥ दानीकुं त्याग याग बह्मनकुं, योगीकुं संयम धारना ॥ ऐसे० ॥ ३ ॥ नंदनवन ज्युं सुरकुं वल्लज, न्यायीकुं न्याय निहारना ॥ त्युं मेरे मन तुंहि सुहायो, ओर

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

तो चिततें उतारनां ॥ ऐसे० ॥४॥ श्रीसुपार्श्व दरिशन पर तेरे, कीजें कोमी उवारना ॥ श्री नय विजय विबुध सेवककुं, दियो समता रस पारना॥ऐसे०॥५॥ इति ॥

॥ पद ओगणपचाशमुं ॥

॥ राग रामग्री ॥ श्रीचंद्रप्रन जिनराज राजे, वदन पूनमचंदरे ॥ नविक लोक चकोर निरखत, लहे परमानंदरे ॥ श्रीचंद्र० ॥ १ ॥ टेक ॥ महमहे महिमाएं जसनर, सरस जस अरविंदरे ॥ रण झणे कविजन नमर रशिया, लहि सुख मकरंदरे ॥ श्री चंद्र०॥ २ ॥ जस नामे दोलत अधिक दिये, टले दोहग दंदरे ॥ जस गुन कथा नव व्यथा नांजे, ध्यान शिवतरु कंदरे ॥ श्री चंद्र० ॥३ ॥ विपुल हृदय विशाल नुजयुग, चलित चाल गयंदरे ॥ अतुल अतिशय महिमा मंदिर, प्रणत सुरनर वृंदरे॥ श्री चंद्र० ॥ ४ ॥ में दास चाकर प्रनु तेरो, शीष्य तुज फरजंदरे ॥ जसविजय वाचक इम विनवे, टालो मुज नव फंदरे ॥ श्री चंद्र० ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ पद पचाशमुं ॥

॥ राग केदारो ॥ में कीनो नहीं तो बिन ओर

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

सुं राग ॥ टेक ॥ दिनदिन वान चढे गुन तेरो, ज्युं कंचन परजाग ॥ ओरनमें हे कषायकी कलिका, सो क्युं सेवा लागं ॥ में कीनो० ॥१॥ राजहंस तुं मानसरोवर , ओर अशुचि रुचि काग ॥ विषय भुजंगम गरुरु तुं कहियें, ओर विषय विषनाग ॥ में कीनो० ॥ २ ॥ ओर देव जल डीलर सरिखे, तुं तो समुद्र अथाग ॥ तुं सुरतरु जग वंछित पूरन, ओर तो सुको साग ॥ में कीनो० ॥ ३ ॥ तु पुरुषोत्तम तुंहि निरंजन, तुं शंकर वडजाग ॥ तुं ब्रह्मा तुं बुद्धि महाबल, तुंहि देव वीतराग ॥ में कीनो० ॥ ४ ॥ सुविधिनाथ तुज गुन फूलनको, मेरो दिल हे बाग ॥ जस कहे भमर रसिक होइ तामें, लीजें भक्ति पराग ॥ में कीनो० ॥ ५ ॥

॥ पद एकावनमुं ॥

॥ राग फागनी देशी ॥ चउ कसाय पाताल कलश जिहां, तृष्णा पवन प्रचंरु ॥ बहु विकल्प कल्लोल चढतुहे, आरति फेन उदंड ॥ १ ॥ भवसायर भीषण तारीएं हो, अहो मेरे ललना ॥ पासजी त्रिभुवन नाथ दिलमें, ए विनति धारियें हो ॥ अ० ॥

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

॥ २ ॥ जरत उदाम काम वडवानल, परत सैल गिरी शृंग ॥ फिरत व्यसन बहु मगर तिमिंगल, करतहे निमग उमंग ॥ अ० ॥ ३ ॥ जमरी याके बिच जयंकर, उलटी गुलटी वाच ॥ करत प्रमाद पिशाच सहित जिहां, अविरति व्यंतरी नाच ॥ अ० ॥ ४ ॥ गर्जत अरति फुरति रति विजुरी, होत बहोत तोफान ॥ लागतियोरकुं गुरु मलबारी, धरम जिहाज निदान ॥ अ० ॥ ५ ॥ जुरइं पाटे ए जिउ अति जोरी, सहस अढार शीलंग ॥ धरम जिहाज तिउ सज करी चलवो, जस कहे शिव-पुर चंग ॥ अ० ॥ ६ ॥

॥ पद बावनमुं ॥

॥दुख टलियां मुख दीठे हो मुज सुख उपनोरे, नेट्यो नेट्यो वीर जिणंदरे ॥ हवे मुज मनमंदिर-मां प्रभु आवी वसोरे, पामुं पामुं परमानंदरे ॥दु० ॥ ॥१॥ पीठ बंध इंहां कीधो समकीत वज्रनोरे, काढ्यो काढ्यो कचरो नें भ्रांतिरे ॥ इंहां अति उंचा सोहे चा-रित्र चंदुआरे, रूडी रूडी संवर जांतिरे ॥ दु० ॥ ॥ २ ॥ कर्म विवर गोखे इहा मोति जुमकारे, जुले

जुंबे धीगुण आठरे ॥ बार नावना पंचाली अचरय करेरे, कोरी कोरी कोरणी काठरे ॥ डु० ॥ ३ ॥ इहां आवी समता राणीसुं प्रनु रमोरे, सारि सारि थिरता सेजरे ॥ किम जइ शकशो एकवार जो आवशोरे, रंज्या रंज्या हियमानी हेजरे ॥ डु० ॥ ४ ॥ वयज अरज सुनी प्रनु मनमंदिर आवियारे, आपे तुठा तुठा त्रिनुवन नाणरे ॥ श्री नयविजय विबुध पय सेवक नणेरे, तेंणे पाम्या पाम्या कोकि कल्याणरे ॥ डु० ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ पद त्रेपनमुं ॥

॥ सज्जन राखत रीति नली, बिनु कारन उपकारी उत्तम, जाइ सहज मिलि ॥ डुर्जनकी मन परिनति काली, जैसी होय गली ॥ स० ॥ १ ॥ ओरनको देखत गुन जगमें, डुर्जन जाये जली ॥ फल पावे गुन गुनको ज्ञाता, सज्जन हेज हली ॥ स० ॥ ॥ २ ॥ ऊंच इति पद बेठो डुर्जन, जाइ नांहिं बली ॥ उपगृह उपर बेठी मीनी, होत नहिं उजली ॥ स० ॥ ३ ॥ विनय विवेक विचारत सज्जन, नद्र कनाव नली ॥ दोष लेश जो देखे कबहुं, चाले

चतुर टली ॥ स० ॥ ४ ॥ अब में ऐसो सज्जन पायो, उनकी रीत जली ॥ श्रीनयविजय सुगुरु सेवातें, सुख रस रंग रली ॥ स० ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ पद चोपनमुं ॥

॥ आज आनंद जयो, प्रभुको दर्शन लह्यो, रोम रोम सितल जयो, प्रभु चित्त आयो हे ॥ आ० ॥ मन हुंते धार्या तोहे, चलके आयो मन मोहे, चरण कमल तेरो, मनमें ठहरायो हे ॥ आ० ॥ १ ॥ अकल अरूपी तुंही, अकल अमूरति योहीं, निरख निरख तेरो, सुमतिशुं मिलायो हे ॥ आ० ॥२॥ सुमति स्वरूप तेरो, रंग जयो एक अनेरो, वाइ रंग आत्म प्रदेशे, सुजस रंगायो हे ॥ आ० ॥ ३ ॥ इति ॥

॥ पद पंचावनमुं ॥

॥ ज्ञानादिक गुण तेरो, अनंत अपर अनेरो ॥ वाही कीरत सुन मेरो, चित्तहुं जस गायो हे ॥ ज्ञान० ॥ १ ॥ तेरो ग्यान तेरो ध्यान, तेरो नाम मेरो प्रान, कारण कारज सिद्धो, ध्याताध्येय ठहरायो हे ॥ ज्ञा० ॥ २ ॥ बूट गयो भ्रम मेरो, दर्शन पायो में तेरो ॥ चरण कमल तेरो, सुजस रंगायो हे ॥ ज्ञा० ॥३॥

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

॥ पद ७प्पनमुं ॥

॥ बाद बादीसर ताजे, गुरु मेरो गज राजे, पंच महाव्रत जहाज, सुधर्मा ज्युं सवायो हे ॥ बा० ॥ ॥ १ ॥ बिध्याको वडो प्रतापसंग, जल ज्युं उठत तुरंग, निरमल जेसो संग, समुद्र कहायो हे ॥ बा० ॥ २ ॥ सत्तसमुद्र नख्यो, धरम पोत तामे तख्यो, शील सुखान वालम, कृमालंगर नाख्यो हे ॥ बा० ॥ ३ ॥ सहरु संतोष करी, तपतो तपी ह्या जरी, ध्यान रंजक देत धरी, मोला ग्यान चलायो हे ॥ बा० ॥ ४ ॥ एसो जहाज क्रियाकाज, मुनिराज सजो साज, दया मया मणि माणिक, ताहिमें जरायो हे ॥ बा० ॥ ५ ॥ पुण्य पवन आयो, सुजस जहाज चलायो, प्राणजीवन एसो माल, घर बेठे पायो हे ॥ बा० ॥ ६ ॥ इति ॥

॥ पद सत्तावनमुं ॥

॥ एरी आज आनंद नयो मेरे तेरो, मुख निरख निरख रोम रोम शीतल नयो अंगोअंग ॥ ए० ॥ सुद्ध समजल समता रस जीलत, आनंद रंग नयो अनंतरंग ॥ ए० ॥ १ ॥ एसी आनंद दशा प्र-

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

गटी चित्त, अंतर ताको प्रजाव चलत, निरमल गंगवाही गंग॥ समता दोउ मिल रहे, जस विजय जीलत ताके संग ॥ ए० ॥ ३ ॥

॥ पद अठावनमुं ॥

॥ जो जो देखे वीतरागने, सो सो होशे वीरा-रे ॥ बिन देखे होसे नहीं कोइ, कांइ होए अधी-रा रे ॥ जो० ॥ १ ॥ समय एक धनहीं घटसी, जो सुख दुःखकी पीमारे ॥ तुं क्युं सोच करे मन कू-मा, होवे वज्र जो हीरारे ॥ जो० ॥ २ ॥ लगे न तीर कमान बान क्युं, मारी सके नही मिरारे॥ तुं संजार पुरुष बल अपनो, सुख अनंत तो पीरारे ॥ जो० ॥ ३ ॥ नयन ध्यान धरो वा प्रजुको, जो टारे जव जीरारे ॥ सजसचेतन धरम निज अपनो, जो तारे जव तीरारे ॥ जो० ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ पद ओगणसाठमुं ॥

॥ जजन बिनुं जीवित जेसे प्रेत, मलिन मंदम-ति डोलत घर घर, उदर जरनके हेत ॥ ज० ॥ १ ॥ दुर्मुख वचन बकत नित निंदा, सज्जन सकल दुःख देत ॥ कबहुं पापको पावत पैसो, गाढे धुरीमे देत॥

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

न० ॥ २ ॥ गुरु ब्रह्मन अचुत जन सज्जन, जातन कवण निवेत ॥ सेवा नहीं प्रजु तेरी कबहु, जुवन नीलंको खेत ॥ न० ॥ ३ ॥ कथे नहीं गुन गीत सुजस प्रजु, साधन देव अनेत ॥ रसनारस विगारो कहांलों, बुडत कुटुंब समेत ॥ न० ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ पद साठमुं ॥

॥ प्रजु तेरो गुन ज्ञान, करत महा मुनि ध्यान, समरत आठो जाम, हृदेमें समायो हे ॥ प्रजु० ॥ ॥ १ ॥ मन मंजन कर लायो, सुरू समकित ठहरायो, वचन काय समजायो, एसे प्रजुकुं ध्यायो हे ॥ प्र० ॥ २ ॥ ध्यायो सही पायो रस, अनुजव जाग्यो जस, मिट गयो भ्रमको रस, ध्याता ध्येय समायो हे ॥ प्र० ॥ ३ ॥ प्रगट जयो महा प्रकास, ज्ञानको महा उल्लास ॥ एसो मुनिराज ताज, जस प्रजु गायो हे ॥ प्र० ॥ ४ ॥

॥ पद एकसठमुं ॥

॥ राग कनरो ॥ ए परम ब्रह्म परमेश्वर, परम आनंदमयि सोहायो ॥ ए परतापकी सुख संपत्ती बरनी न जात मोपें, ता सुख अलख कहायो ॥

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

ए० ॥ १ ॥ ता सुख ग्रहवेकुं मुनि मन खोजत, मन मंजन कर ध्यायो ॥ मनमंजरी नइ, प्रफुल्लीत दसा लइ, तापर नमर लोनायो ॥ ए० ॥२॥ नमर अनुनव नयो, प्रनुगुन वास लह्यो ॥ चरन करन तेरो, अलख लखायो ॥ एसी दशा होत जब, परम पुरुष तब, पकरत पास पठायो ॥ ए० ॥ ३ ॥ तब सुजस नयो, अंतरंग आनंद लह्यो, रोम रोम सीतल नयो, परमात्म पायो ॥ अकल स्वरूप नूप, कोऊ न परखत कूप, सुजस प्रनु चित आयो ॥ ए० ॥ ४ ॥

॥ पद बासठमुं ॥

॥ राग ध्रुपद ॥ केसे देत कर्मनकुं दोस, मन निवहे वेहे आपु कानो ॥ ग्रहे राग अरु दोष ॥ के० ॥ विषयके रस आप नूलो, पाप सो तन गोस ॥के०॥१॥ देवधर्म गुरुकी करी निंदा, मिथ्यामतके जोस ॥ के० ॥ २ ॥ फल उदय नइ नरक पदवी, नजोगे केको संग ॥ के० ॥३॥ किए आपुं कर्म जुगतें, अब कहा करो सोस ॥के०॥४॥ दुःख तो बहु काल वीत्यो, लहे न सुख जल ओस० ॥ के० ॥ ५ ॥ क्रोध मान माया लोन, नर्यो तन घट गोस ॥ के० ॥ ६ ॥ चेत चेतन

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

पाय सुजस, मुगति पंथसो पोस ॥ के० ॥ ५ इति ॥

॥ पद त्रेसठमुं ॥

॥ राग गोडी सारंग ॥ तुह्मारे शिर राजत अजब जटा, ढारये मानुं गयल न ढारत ॥ सीस सणगार बटा ॥ तुह्मारे० ॥ १ ॥ किधुं गंगा अमरीस सुर सेवत, यमुना उन्नय तटा ॥ गिरिवर सिखरें एह अनोपम, उन्नत मेघ घटा ॥ तु० ॥ २ ॥ केसे बाल लगे न्नवि न्नवजल, तारत अति विकटा ॥ हरि कहे जस प्रन्नु रुषन्न रखो ए, हमहिं अति उलटा ॥ तु० ॥ ३ ॥

॥ पद चोसठमुं ॥

॥ राग बिहाग ॥ माया कारमीरे, माया म करो चतुर सुजाण ॥ माया वायो जगत वलुधो, दुःखीयो थाय अजान ॥ जे नर मायायें मोहि रह्यो, तेने सुप्नें नही सुख ठाम ॥ माया० ॥ १ ॥ न्हाना मोटा नरखी माया, नारीने अधकेरी ॥ वली विशेषें अधिकी माया, गरढाने जाजेरी ॥माया०॥२॥ माया कामण माया मोहन, माया जग धूतारी ॥ मायाथी मन सहुनुं चलीयुं, लोन्नीने बहु प्यारी ॥ माया० ॥

॥ ३ ॥ माया कारन देश देशांतर, अटवी वनमां जाय ॥ जहाज बेसीने द्वीप द्वीपांतरें, जइ सायर जंपलाय ॥ माया० ॥ ४ ॥ माया मेली करी बहु नेली, लोने लक्षण जाय ॥ नयथी धन धरतीमां गाडे, उपर विसहर थाय ॥ माया० ॥ ५ ॥ योगी जति तपसी संन्यासी, नग्न थइ परवरिया ॥ उंधे मस्तक अग्नि तापें, मायाथी न उगरिया ॥ माया० ॥ ॥ ६ ॥ शिवभूति सरिखो सत्यवादी, सत्यघोष कहेवाय ॥ रत्न देखी तेनुं मन चलियुं, मरीने दु-र्गति जाय ॥ माया० ॥ ७ ॥ लोन धरत मायायें रझियो, पझियो समुद्र मोझार ॥ मुठ माखनीयो थइने मरियो, पोतो नरक मोझार ॥ माया० ॥ ८ ॥ मन वचन कायायें माया, मूकी वनमां जाय ॥ धन धन ते मुनिश्वर राया, देव गांधर्व जस गाय ॥ मा-या० ॥ ९ ॥ इति ॥

॥ पद पांशठमुं ॥

॥ कब घर चेतन आवेंगें, मेरे कब घर चेतन आवेंगे ॥ टेक ॥ सखिरि लेवुं बलैया बार बार ॥ मेरे कब० ॥ रेन दीना मानुं ध्यान तुं साढा, कब

हुंके दरस देखावेंगे ॥ मेरे कब० ॥ १ ॥ विरह दी-वानी फिरुं ढुंढती, पीउ पीउ करके पोकारेंगे ॥ पीउ जाय मले ममतासें, काल अनंत गमावेंगे ॥ मेरे कब० ॥ २ ॥ करुं एक उपायमें उद्यम, अनुभव मित्र बो-लावेंगे ॥ आय उपाय करके अनुभव, नाथ मेरा समजावेंगे ॥ मेरे कब० ॥ ३ ॥ अनुभव मित्र क-हे सुनो साहेब, अरज एक अवधारेंगे ॥ ममता त्याग समता धर अपनो, वेगें जाय मनावेंगे ॥ मेरे कब० ॥ ४ ॥ अनुभव चेतन मित्र मिले दोऊ, सुम-ति निशान धुरावेंगे ॥ विलसत सुख जस लीलामें, अनुभव प्रीति जगावेंगे ॥ मेरे कब० ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ पद बासठमुं ॥

॥ राग मोतीझानी देशी ॥ सूरत मंरुन पास जिणंदा, अरज सुणो टालो दुःख दंदा ॥ साहेबा रंगीला हमारा, मोहना रंगीला ॥ तुं साहेब हुं हुं तुज बंदा, प्रीति बनी जैसी कैरव चंदा ॥ सा० ॥१॥ तुजसुं नेह नहीं मुज काचो, घणही न जांजे हीरो जाचो ॥सा०॥ देतां दान ते कांइ विमासो, लागे मुज मन एह तमासो ॥ सा० ॥ २ ॥ केडलागा ते केड न

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

छोरे, दीयो वंछित सेवक करउरे ॥ सा० ॥ अखय खजानो तुज नवी खूटे, हाथा थकी तो सुं नवी छूटे ॥ सा० ॥ ३ ॥ जो खिजमतमां खामी दाखो, तो पण निज जाणी हित राखो ॥ सा० ॥ जेणे दीधुं छे तेहज देशे, सेवा करशे ते फल लेशे ॥ सा० ॥ ४ ॥ धेनु कूप आराम खजावे, देतां देतां संपत्ती पावे ॥ सा० ॥ तिम मुजने तमो जो गुण देशो, तो जगमां जस अधिक वहेशो ॥ सा० ॥ ५ ॥ अधिकुं ओछुं किशुं रे कहावो, जिमतिम सेवक चित्त मनावो ॥ सा० ॥ माग्या विण तो माय न पिरसे, ए उखाणो साचो दिसे ॥ सा० ॥ ६ ॥ इम जाणीने विनती कीजें, मोहनगारा मुजरो लीजें ॥ सा० ॥ वाचक जस कहे खमियें आसंगो, दियो शिव सुख धरी अविहड रंगो ॥ सा० ॥ ७ ॥ इति

॥ पद सडसठमुं ॥

॥ राग आशावरी ॥ चेतन मोहको संग निवारो, ग्यान सुधारस धारो ॥ चे० ॥ १ ॥ मोह महातम मल दूररे, धरे सुमति परकास ॥ मुक्ति पंथ परगट करेरे, दीपक ज्ञान विलास ॥ चे० ॥ २ ॥ ज्ञानी ज्ञान म-

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

गन रहेरे, रागादिक मल खोय ॥ चित्त उदास करनी करेरे, कर्मबंध नहिं होय ॥चे०॥३॥ लीन नयो व्यवहारमें रे, युक्ति न उपजे कोय ॥ दीन नयो प्रभु पद जपेरे, मुगति कहांसुं होय ॥ चे० ॥ ४ ॥ प्रभु समरो पूजो पढोरे, करो वीविध व्यवहार ॥ मोक्ष स्वरूपी आतमारे, ग्यान गमन निरधार ॥ चे० ॥ ॥ ५ ॥ ज्ञान कला घट घट वसेरे, जोग जुगतिके पार ॥ निज निज कला उद्योत करेरे, मुगति होय संसार ॥ चे० ॥ ६ ॥ बहु विध क्रिया कलेसशुं रे, शिव पद न लहे कोय ॥ ग्यान कला परगाससों रे, सहज मोक्ष पद होय ॥ चे० ॥ ७ ॥ अनुभव चिंतामणि रतनरे, जाके हृए परकास ॥ सो पुनीत शिव पद लहेरे, दहे चतुर्गतिवास ॥ चे० ॥ ८ ॥ महिमा सम्यक् ग्यानकीरे, अरुचि राग बल जोय ॥ क्रिया करत फल जुजतेरे, कर्म बंध नहिं होय ॥चे०॥ ए॥ भेद ग्यान तबलों भलोरे, जबलों मुक्ति न होय ॥ परम जोति परगट जिहांरे, तिहां विकल्प नहिं कोय ॥ चे० ॥ १० ॥ भेद ग्यान साबू भयोरे, समरस निर्मल नीर ॥ धोबी अंतर आतमारे, धोवे निज गुण चीर ॥ चे० ॥ ११ ॥ राग विरोध विमोह मलीरे, ए-

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

ही आश्रव मूल ॥ एही करम बढायकेंरे, करे धर्मकी नूल ॥ चे०॥ १२ ॥ ग्यान सरूपी आतमारे, करे ग्यान नहिं ओर ॥ द्रव्यकर्म चेतन करे रे, एह व्यवहारकी दोर ॥ चे० ॥ १३ ॥ करतां परणामी द्रव्य रे, कर्मरूप परिणाम॥ किरिया परजयकी फिरतरे, वस्तु एकत्रय नाम ॥ चे०॥ १४ ॥ करता कर्म क्रिया करेरे, क्रिया करम करतार ॥ नाम नेद बहुविध नये रे, वस्तु एक निर्धार ॥ चे० ॥ १५ ॥ एक कर्म कर्तव्यतारे, करे न करता दोय ॥ तेसें जस सत्ता सधिरे, एक नावको होय ॥ चे० ॥ १६ ॥ इति ॥

॥ पद अडसठमुं ॥

॥ राग धन्याश्री ॥ जबलग उपसमनांहिं रति, तब लगे जोग धरे क्युं होवे, नाम धरावे जति ॥ जब० ॥ १ ॥ कपट करे तुं बहु विध नातें, क्रोधे जले छति ॥ ताको फल तुं क्या पावेगो, ग्यान विना नांहिं बती ॥ जब० ॥ २ ॥ नूख तरस ओर धूप सहतु हे, कहे तु ब्रह्म व्रति ॥ कपट केलवे माया मंके, मनमें धरे व्यकती ॥ जब० ॥ ३ ॥ नस्म लगावत ठाढो रहेवत, कहत हे हुं वसति ॥ जंत्र मंत्र जमी

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

बूटी नेखज, लोनवश मूढ मति ॥ जब० ॥ ४ ॥बडे बडे बहु पूर्वधारी, जिनमें सक्ति हति ॥ सोनी उपसम ठोरी बीचारे, पाये नरक गति ॥ जब० ॥ ५ ॥ कोउ गृहस्थ कोउ होवे वैरागी, जोगी नगत जति॥ अध्यात्म नावें उदासी रहेगो, पावेगो तबही मुगति ॥ जब० ॥ ६ ॥ श्री नय विजय विबुध वर राजे, जाने जग कीरति॥श्री जसविजय उवझाय पसायें, हेम प्रनु सुख संतति ॥ जब० ॥ ७ ॥ इति ॥

॥ पद अगणोतेरमुं ॥

॥ राग रामग्री ॥ चंडप्रनु जिनराज राजे, वदन पूनम चंदरे॥नविक लोक चकोर निरखत, लहे परमानंदरे ॥ चं० ॥ १ ॥ महमहे महिमायें नमर, रस जस अरविंदरे ॥ रणझणे नविजन नमर रसिया, लहि सुख मकरंद रे ॥ चं०॥ २ ॥ जस नामें दोलत अधिक दीपे, टले दोहग दंदरे ॥ जसगुंण कथा नवव्यथा नांजें, ध्यान शिवतरु कंद रे ॥ चं०॥ ॥ ३ ॥ विपुल हृदय विशाल नुजयुग, चलत चाल गयंदरे ॥ अतुल अतिसय महिमा मंदिर, प्रणत सुर नर वृंदरे ॥ चं० ॥ ४ ॥ हुं दास चाकर देव तोरो,

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

सिस तुज फरजंदरे ॥ जसविजय वाचक एम वि-
नवे, टाल मुज नव फंद रे ॥ चंद्र० ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ पद सित्तेरमुं ॥

॥ राग काफी ॥ तो बिना ओर न जाचुं जिनं-
दराय ॥ तो० ॥ टेक ॥ में मेरो मन निश्चय किनो,
एहमां कबु नहिं काचुं ॥ जिनंदराय ॥ तो० ॥ १ ॥
तम चरन कमलपर पंकज मन मेरो, अनुनव रस
नर चाखुं ॥ अंतरंग अमृत रस चाखो, एह वचन
मन साचुं ॥ जी० ॥ तो० ॥ २ ॥ जस प्रनु ध्यायो
महारस पायो, अवर रसें नहिं राचुं ॥ अंतरंग फ
रस्यो दरसन तेरो, तुज गुण रस रंग माचुं ॥ जी०
॥ तो० ॥ ३ ॥ इति ॥

॥ पद इकोतेरमुं ॥

॥ राग प्रनाती ॥ दृष्टि रागें नवि लागियें, वली
जागियें चित्तें ॥ मागियें शिख ज्ञानी तणी, हठ
नांगीएं नित्यें ॥ दृष्टि० ॥ १ ॥ जे गता दोष देखे
नहिं, जिहां जिहां अति रागी ॥ दोष अगता पण
दाखवे, जिहांथी रुचि नांगी ॥ दृ० ॥ २ ॥ दृष्टि
राग चले चित्तथी, फरे नेत्र विकारलें ॥ पूर्व उप-

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

कार न सांभले, पडे अधिक जंजाले ॥ दृ० ॥ ३ ॥
वीर जिन जब हुता विचरता, तव मंखली पूत्तो ॥
जिन करी जड जनें आदस्यो, इहां मोह अति धू-
त्तो ॥ दृ० ॥ ४ ॥ ऋध्धि भंडार रमणी तजी, भजी
आप मति रागो ॥ दृष्टि रागें जमाली लह्यो, नवि
भवजल तागो ॥ दृ० ॥ ५ ॥ वली आचार्य सावद्य
जे, हुओ अनंत संसारो ॥ दृष्टि राग स्वमति पणे
थयो, महानिशीथ विचारो ॥ दृ० ॥ ६ ॥ हुवे जि-
न धर्म आशातना, अजाण्युं कहे रंगें ॥ मंकु आ-
गलें जिनवरें, वंदियो भगवइ अंगें ॥ दृ० ॥ ७ ॥
ग्रामना नटने मूर्खनो, मिल्यो जेहवो जोगो ॥ दृ-
ष्टिराग मिल्यो तेहवो, कथक सेवक लोगो ॥ दृ० ॥
॥ ८ ॥ आपण गोठडी मीठकी, हठीने मन लागे ॥
ज्ञानी गुरु वचन रलियामणां, कटुक तीरस्यां वागे ॥
दृ० ॥ ए ॥ दृष्टिरागें भ्रम उपजे, वधे ज्ञान गुण रा-
गें ॥ एहुमां एक तुमें आदरो, भलो होय जे आगें ॥
दृ० ॥ १० ॥ दृष्टि रागी कदा मत हुवो, सदा सुगुरु
अनुसरजो ॥ वाचक जसविजय कहे, हित शिख
मन धरजो ॥ दृ० ॥ ११ ॥ इति ॥

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

॥ पद बहोंतेरमुं ॥

॥ राग गोडी ॥ जब लगें समता क्षणुं नहिं आवे, जबलगें क्रोध व्यापक हे अंतर, तबलगें जोग न सोहावे ॥ ज० ॥ १ ॥ बाह्य क्रिया करें कपट केलवे, फिरके महंत कहावे ॥ पक्षपात कबहु नहिं छोडे, उनकुं कुगति बोलावे ॥ जब० ॥ २ ॥ जिन जोगीने क्रोध किहांतें, उनकुं सुगुरु बतावे ॥ नाम धारक भिन्न भिन्न बतावे ॥ उपसम विनु दुःख पावे ॥ ज० ॥ ३ ॥ क्रोध करी खंधक आचारज, हुओ अग्निकुमार ॥ दंडकी नृपनो देश प्रजाव्यो, भमियो भव मोझार ॥ ज० ॥ ४ ॥ संब प्रद्युम्न कुमार संताप्यो, कष्ट दीपायन पाय ॥ क्रोध करी तपनो फल हार्यो, कीधो द्वारकां दाय ॥ ज० ॥ ५ ॥ काउस्सग्गमां चढ्यो अति क्रोध, प्रसन्न चंद्र रुषिराय ॥ सातमी नरक तणां दल मेली, कडवां ते न खमाय ॥ ज० ॥ ६ ॥ पार्श्वनाथने उपसर्ग कीधो, कमठ भवांतर धीठ ॥ नरक तिर्यंचनां दुःख पामी, क्रोध तणां फल दीठ ॥ ज० ॥ ७ ॥ एम अनेक साधु पूर्वधर, तपिया तप करी जेह ॥ कारज परे पण ते नवि

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

टकिया, क्रोध तणुं बल एह ॥ ज० ॥ ८ ॥ समता भाव वली जे मुनि वरिया, तेहनो धन्य अवतार ॥ खंधक ऋषिनी खाल उतारी, उपसमें उतार्यो पार ॥ ज० ॥ ए ॥ चंडरुद्र आचारज चलतां, मस्तक दीया प्रहार ॥ समता करतां केवल पाम्यो, नवदीक्षित अणगार ॥ ज० ॥ १० ॥ सागरचंदनुं शीश प्रजाल्युं, नीसभसेन नरेंद्र ॥ सुमता भाव धरी सुरलोकें, पोतो परम आनंद ॥ ज० ॥ ११ ॥ खेमा करतां खरच न लागे, भांगे कोड कलेस ॥ अरिहंत देव आराधक थाये, वाधे सुजस प्रवेश ॥ ज० ॥ १२ ॥ इति ॥

॥ पद तहोंतेरमुं ॥

॥ राग धन्याश्री ॥ प्रभु मेरे तुं सब वातें पूरा, परकी आश कहा करे प्रीतम, ए किण वातें अधूरा ॥ प्रभु० ॥ १ ॥ परवश बसत लहत परतक्ष दुःख, सबहीं बासें सनूरा ॥ निजघर आप संभार संपदा, मत मन होय सनूरा ॥ प्रभु० ॥ २ ॥ परसंग त्याग लाग निजरंगें, आनंद वेली अंकूरा ॥ निज अनुभवरस लागे मीठा, ज्युं घेवर में बूरा ॥ प्रभु० ॥ ३ ॥ अपने ख्याल पलकमें खेले, करे शत्रुका चूरा ॥ सहजानंद

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

अचल सुख पावे, घूरे जगजस नूरा ॥ प्रज्ञु० ॥४॥ इति॥

॥ पद चम्मोतेरमुं ॥

॥ अथ श्री पूजाविधिनुं पार्श्व जिन स्तवन ॥

॥ शालिनद्र नोगी रह्यो ॥ ए देशी ॥

पूजाविध मांहे नावियेंजी, अंतरंग जे नाव ॥ ते सवि तुऊ आगल कहुंजी, साहेब सरल स्वनाव॥ सुहंकर अवधारो प्रज्ञुपास ॥ ए आंकणी ॥ दातण करतां नाविएंजी, प्रज्ञुगुण जल मुख सुद्ध ॥ जल उतारी प्रमत्ततताजी, हो मुऊ निर्मल बुद्ध ॥ सु० ॥ ॥ २ ॥ जतनायें स्नानें करीजी, काढो मेल मिथ्यात ॥ अंगुठो अंग शोषवीजी, जाणो हुं अवदात ॥ सु० ॥ ३ ॥ क्षीरोदकनां धोतियांजी, चित्तवो चित्त संतोष ॥ अष्टकर्म संवर नलोजी, आठपडो मुहकोश ॥ सु० ॥ ४ ॥ ओरशीयो एकाग्रताजी, केसर नक्ति कल्लोल ॥ श्रद्धा चंदन चिंतवोजी, ध्यान घोल रंग रोल ॥ सु० ॥ ५ ॥ नाल वहुं आणा नलीजी, तिलकतणो तेह नाव ॥ जे आनरण उतारीयेंजी, ते उतारो निज नाव ॥ सु० ॥ ६ ॥ जे निर्माल उतारियेंजी, ते तो चित्त उपाध, पखाल करंतां चिंतवोजी,

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

निर्मल चित्त समाध ॥ सु० ॥ ७ ॥ अंग लूहणां बे धर्मनांजी, आत्म स्वन्नाव जे अंग ॥ जे आन्नरण पहेरावीएंजी, ते स्वन्नाव निजचंग ॥ सु० ॥ ८ ॥ जे नववाडी विशुद्धताजी, ते पूजा नव अंग ॥ पंचाचार विशुद्धता जी, तेह फूल पंचरंग ॥ सु० ॥ ॥ ए ॥ दीवो करतां चिंतवोजी, ज्ञान दीपक सुप्रकास ॥ नयचिंता घृत पूरियुंजी, तत्त्व पात्र सुविलास ॥ सु०॥ १० ॥ धूप रूप अति कार्यताजी, कृष्णागरुनो जोग ॥ शुद्ध वासना मह महेजी, ते तो अनुन्नव योग ॥ सु० ॥ ११ ॥ मद स्थानक अड ठांडवाजी, तेह अष्ट मंगलिक ॥ जे नैवेद्य निवेदियेंजी, ते मन निश्चल टीक ॥ सु० ॥ १२ ॥ लवण उतारी न्नावीएंजी, कृत्रिम धर्मनो त्याग ॥ मंगल दीवो अति न्नलोजी, सुद्ध धरम परन्नाग ॥ सु० ॥ १३ ॥ गीत नृत्य वाजिंत्रनोजी, नाद अनाद असार ॥ समरति रमणी जे करीजी, ते साचो थेइ कार ॥ सु० ॥ ॥ १४ ॥ न्नावपूजा एम साचवीजी, सत्य वजाउंरें घंट ॥ त्रिन्नुवन मांहे ते विस्तरेजी, टाले कर्मनो कंट ॥ सु० ॥ १५ ॥ एणी परें न्नावना न्नावतांजी, साहेब जस सुप्रसन्न ॥ जनम सफल जग तेहनोजी,

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

तेह पुरुष धन धन ॥ सु० ॥ १६ ॥ परम पुरुष प्रभु सामलाजी, मानो ए मुज सेव ॥ दूर करो भव आमलोजी, वाचक जस कहे देव ॥ सु० ॥ १७ ॥ इति ॥

॥ पद पंचोतेरमुं ॥

॥ राग गोडी ॥ संभव जिन नयन मिल्योहे, प्रगटे पुण्यके अंकूर ॥ ए आंकणी ॥ तबथें दिन मोही सफस वल्यो हे ॥ अंगणे अमीयें मेह वुठा, जनम तापको व्याप गल्यो हे ॥ संभ० ॥ १ ॥ जैसी भक्ति तैसी प्रभु करुना, स्वेत संखमें दूध मिल्यो हे ॥ दर्शनथें नवनिधि रिधि पाइ, दुःख दोहग सब दूर टल्यो हे ॥ संभ० ॥ २ ॥ भरत फिरत हे दूरहिं दिलथें, मोहमल्ल जिणे जगत्र भल्यो हे ॥ समकित रत्न लहुं दरिसनसें, अब नवि जाउं कुगति रल्यो हे ॥ संभ० ॥ ३ ॥ नेह नजर भर निरखनहीं मुज, प्रभुसुं हैयडो हेज हल्यो हे ॥ श्री नयविजय विबुध सेवककुं, साहेब सुरतरु होय फल्यो हे ॥ ॥ संभ० ॥ ४ ॥ इति ॥

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

॥ अथ ॥

॥ श्रीविनय विलास प्रारंभः ॥

॥ पद पेहेलुं ॥

॥ राग जयजयवंती ॥ सजन सलूने लाल, चरन न छोरुं ताल, मेरे तो अजब माल, तेरोइ जजनहे ॥ १ ॥ दोलत न चाहुं दाम, काम सुंन मेरे काम, नाम तेरो आठो जांम, जिजको रंजन हे ॥ २ ॥ तेरो हुं आधीन लीन, जल ज्युं मगन मीन, तीन जग केरो प्रजु, दुःखको जंजन हे ॥ ३ ॥ नाजि मरु देवानंद, नयन आनंद चंद, चरन विनय तेरो, अमियको अंजन हे ॥ ४ ॥

॥ पद बीजुं ॥

॥ राग कनडो दरबारी ॥ या गति छोरदे गुन गोरी ॥ तु गुन गोरी० ॥ टेक ॥ अचरिज एहुं मिले शशि पंकज, बिच जमुना वहे जोरी ॥ या गति०॥ ॥ १ ॥ चल गिरनार पिया दिखलावुं, बहुरि जोरि रति होरी ॥ मुगति महलमें मिले राजुल नेम, विनय नमे कर जोरी ॥ या गति० ॥ २ ॥

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

॥ पद त्रीजुं ॥

॥ राग कल्याण नूपाल ॥ मेरी गति मेरी मति, मेरी रति मेरि छति, मेरो पिया मेरो जिया, यदुपति यतियां ॥ मेरी० ॥ १ ॥ मेरो ज्ञान मेरो ध्यान, मेरो प्रान मेरो त्रान, मेरो जश सुनि अन्निधान, मोहि उल्लसति छतियां ॥ मेरी० ॥ २ ॥ गए गिरनार मोकुं, छारि रस डारि तोउ, रहि चित्त दिन रति, जेसें दीया बतियां ॥ मेरी० ॥ ३ ॥ मेरे तुंहिं मेरे तुंहि, शिवा देवी नंद तुंहि, मानो पिया राजुलकी, बिनय बिनतियां ॥ मेरी० ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ पद चोथुं ॥

॥ राग दरबारी कनडो ॥ डुरमति फारदे मेरे प्रानी ॥टेक॥ जूठी सब संसारकी माया, जूठी गरव गुमानी ॥ डुरमति० ॥ १ ॥ आप न बूझे मोह निंदसुं, फोले डुनियां दिवानी ॥ वीतराग डुःख फारण दिलसुं, विनय जपो गुरू ज्ञानी ॥डुरमति०॥२॥इति॥

॥ पद पांचमुं ॥

॥ राग नूपाल तथा गोडी ॥ प्यारे काहेकुं ल-

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

लचाय ॥ टेक ॥ या दुनियांका देख तमासा, देखतहि सकुचाय ॥ प्यारे० ॥ १ ॥ मेरी मेरी करत हे बांउरे, फीरे जिउ अकुलाय ॥ पलक एकमें बहुरि न देखे, जलबुंदकी न्याय ॥ प्यारे० ॥ २ ॥ कोटि विकल्प व्याधिकी वेदन, लही शुरू लपटाय ॥ ज्ञान कुसुमकी सेज न पाइ, रहे अघाय अघाय ॥ प्यारे० ॥ ३ ॥ किया दोर चिहुं ओर जोरसें, मृग तृष्णा चित्तलाय ॥ प्यास बुजावन बुंद न पायो, यौंहि जनम गुमाय ॥ प्यारे० ॥ ४ ॥ सुधा सरोवर हे या घटमें, जिसतें सब दुःख जाय ॥ विनय कहे रुदेव दिखावे, जो लाउ दिल गाय ॥ प्यारे० ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ पद छहुं ॥

॥ राग सामेरी ॥ पिउजी मोहि दरिसन दीजी एंरे ॥ टेक ॥ तेरे दरशनकी में प्यासी, तुं कहा भयो उदासी ॥ पिउजी० ॥ १ ॥ पिउ पिउ जपतें भइ टुक, नयनो निंदकी बाजीरे ॥ तब देखा पिउ प्रेमसें फूनी, संकुचि रहि में लाजीरे ॥ पिउजी० ॥ ॥ २ ॥ रसिक न राख्यो हृदेसुं भीरी, सखिमें बहुत वरांसीरे ॥ अब पाउं तो पाउ न छोरुं, राखुं रंग

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

बिलासी रे ॥ पिउजी०॥ ३ ॥ पिउके गुनकी मोतन माला, कंठ करौं जप मालीरे ॥ चकित भये मेरे लोचन चिहुं ओर, सुरिजन पंथ निहालीरे ॥ पिउजी० ॥ ४ ॥ कहे मति नारी जीवन प्यारे, मैं हुं तेरी बंदीरे ॥ गोद बिठाउं बिनय विनोदें, घर आवो आनंदी रे ॥ पिउजी० ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ पद सातमुं ॥

॥ राग मिश्रित बिहागडो ॥ प्यारे प्रीतमजी हठ छोरो ॥ टेक ॥ तोरन आए फिरे कुन कारन, कीहें रच्यों या गोरो ॥ प्यारे० ॥ १ ॥ मोसुं कीनी ऐसी ठगाइ, जैसें करत ठगोरो ॥ झूठ जगतमें कांहि दिखायो, एसो ब्याह बरघोरो ॥ प्यारे० ॥ ॥ २ ॥ में तो नाह न छोरुं नव भवको. जूस्यो प्रेमको जोरो ॥ अबतो चरन बिनय मोहि दीजें, राजुल करत निहोरो ॥ प्यारे० ॥ ३ ॥ इति ॥

॥ पद आठमुं ॥

॥ राग जयजयवंती ॥ सुरत मंडन पास, देखत अति उल्लास, सुजस सुवास जास, जगतमें जोतहे ॥ सुरत मोहनरूप, सुर नर नमे भूप, अकल

सरूप सामि, अधिक उद्योत हे ॥ १ ॥ नमत नमतें नव, पायो प्रभु अभिनव, सुरतरु सुख सब, देयन प्रवीन हे ॥ तेरा करुं गुन ग्यान, सोउ दिन सुविहान, तिहारे चरन मेरो, दिल लयलीन हे ॥ २ ॥ मुगट कुंडल माल, रतन तिलकजाल, सुगुन रसाल लाल, पूजा बनि हेमकी ॥ केसर कपूर फूल, धूप धरुं बहु मूल, बिनयकुं दिजे टुक, निजर ज्युं प्रेमकी॥३॥

॥ पद नवमुं ॥

॥ राग मेघ मल्हार ॥ जिउ प्रान मेरे मोहन, करुं बिनती दोउ करही जोर ॥ बिन गुन्हा क्यों छोरि सिधाए, महर करहु यादो सिरके मोर ॥ जिउ० ॥ १ ॥ बिरह विज्ञान जग्यो मेरे जिउमें, पिउ पिउ देखुं सबही ठोर ॥ सूझ न परत अजब गतिया कहु, कीधो बिजोग संजोगकी दोर ॥ जीउ० ॥ २ ॥ पलक एक कल न परत मोकुं, पिउ पिउ रटत हो तही नोर ॥ चमक लोह ज्यों खेंच दिउ मन, चले प्रेमकी बांह मरोर ॥ जिउ० ॥ ३ ॥ लियो छीन मन मानिक मेरो, जिनको मूल हये लख करोर ॥ तो अब मोहि दिजे मन अपनो, करहो नीआउ पिउ

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

मकरो जोर ॥ जिउ० ॥ ४ ॥ रतन तीन दीजें राजु लकुं, नयो रंगरस ऊकही जोर ॥ बिनय सदा सेव हु सुखदाइ, समुदराउ शिवा देवी किसोर ॥ जि-उ० ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ पद दशमुं ॥

॥ राग जेजेवंती ॥ अजहुं कहालौं प्यारे, रहोगे हमसुं न्यारे, वाहितो धुतारि प्यारि, तुम चित्त ना-इ हे ॥ १ ॥ बहुत बिगोइ खोइ, इनही सकल गुन ॥ लोगनमें शोना तुम, नलि युं बढाइ हे ॥ २ ॥ ह-मकुं काहेकुं मानो, वाहिसो तिहारो तानो ॥ जानोगे आपहि वातो, जैसी दुःखदाइ हे ॥ ३ ॥ सबनकुं प्यारी नारी, माया हे जगतदारी ॥ इनसेंतें यारी नारी, आखर बुराइ हे ॥ ४ ॥ जूठेहि दिखावे नेह, पाथरकी जैसी त्रेह ॥ ठटकी दाखेंगी ठेह, अंत तो पराइ हे ॥ ५ ॥ कहे ज्ञान कला जिउ, जानो सो करहो पिउ, जैसी हे तैसी तो तुम, बिनये सुना-इ हे ॥ ६ ॥ इति ॥

॥ पद अगीआरमुं ॥

राग बिहागडो ॥ सांइ सलूनाकेसें पाऊरी, मन

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

थिर मेरा न होय ॥ दिन सारा बातोमें खोया, रजनी गुमाइ सोय ॥ सांइ० ॥१॥ टेक ॥ बेर बेर बर ज्यामें दिलकुं, बरज्या न रहे सोय ॥ मन उंर मदमत्त बाला कुंजर, अटके न रहे दोय ॥ सांइ० ॥ ॥ २ ॥ छिन ताता छिन शीतल होवें, छिनुक हसे छिनु रोय ॥ छिनु हरखे सुख संपति पेखी, छिनु झूरे सब खोय ॥ सांइ० ॥ ३ ॥ वृथा करत हे कोरी कुराफत, जावी न मिटे कोय ॥ या कीनी में याहि करुंगी, यौंही नीर बिलोय ॥ सांइ० ॥ ४ ॥ मन धागा पिउ गुनको मोती, हार बनावुं पोय ॥ बिनय कहे मेरे जिउके जीवन, नेकनिजर मोहे जोय ॥ सांइ० ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ पद बारमुं ॥

॥ राग नट ॥ थिर नांहिरे थिर नांहि, यावत धन यौवन थिर नांहि ॥ पलक एकमें छेह दिखावत, जैसी बादलकी छांहि ॥ थिर० ॥ १ ॥ टेक ॥ मेरें मेरे कर मरत बिचारे, दुनियां अपनी करी चाही ॥ कुलटा स्त्री ज्यौं उलटा होवे, या साथ किसिके ना याहि ॥ थिर० ॥ २ ॥ कहे दुनियां कहा हसे

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

बाउरे, मेरी गति समजौं नांहिं ॥ केतेहीं ठोरें में प्यासे, केते उंर गहे बांहि ॥ थिर० ॥ ३ ॥ सयन सनेह सकल हे चंचल, किसके सुत किसकी माइ॥ रितु बसंत शिर रूख पात ज्यौं, जाय परोगे को कांही ॥ थिर० ॥ ४ ॥ अजरामर अकलंक अरूपी, सब लोगनकुं सुखदाइ ॥ बिनय कहे नव दुःख बंधनतें, छोडनहार वे सांइ ॥ थिर० ॥ ५ ॥

॥ पद तेरमुं ॥

॥ राग बिहागडो ॥ मन न काहुके वश, मन कीए सब वश, मनकी सो गति जाने, याको मन वश हे ॥ १ ॥ पढोहो बहुत पाठ, तप करो जै पाहार, मन वश कीए बिनु, तप जप बशहे ॥२॥ काहेकुं फीरे हे मन, काहु न पावेगो चेन, विषयके उमंग रंग, कबु न फुरसहे ॥ ३ ॥ सोउ ज्ञानी सोउ ध्यानी, सोउ मेरे जीया यानी ॥ जिने मन वशकियो, वाहिको सुजश हे ॥४॥ विनय कहे सौ धनु, याको मनु छिनु छिनु, सांइ सांइ सांइ सांइ, सांइसें तिरस हे ॥५॥इति

॥ पद चौदमुं ॥

॥ राग श्रीराग ॥ अजब तमासा इक जाख्या ॥

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

टेक ॥ कोउ जात हे दोनु जोरे, पिछला अगिला सुं हार्या ॥अजब०॥१॥ आय नजीक मले जब पीछला, तब अगिला दुरिहु दोरे ॥ पिछला जोर स जोर्या चाहे, अगिला दोरतहि दोरे ॥ अजब० ॥ ॥ २ ॥ खोह खाडका चेन बिचारे, आगिला आंखो मुदि मगें ॥ पिछला बापरा छिनु छिनु अटके, कथरे फ़खर जाय लगे ॥ अजब० ॥ ३ ॥ तब प्रभुने एक उंर पठाया, उने जाय आगिला बांध्या ॥ पिछला तबथें रहा उदासी, साहिबने बहु सुख साध्या ॥ अजब० ॥ ४ ॥ एक नीच अति एकहि मध्यम, एक उत्तम प्रभुकुं प्यारा ॥ या तिनोकुं बिनय पिछान्यो, रहो अधमसेंती न्यारा ॥अजब० ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ पद पन्नरमुं ॥

॥ राग भैरव ॥ जागो प्यारें भयो सुबिहान, श्री तीर्थंकर उदयो भान ॥ जागो० ॥ ए टेक ॥ पाए भविक मन कमल बिकास, उड गए औगुन भरम उदास ॥ जागो० ॥१॥ नयन उघारी बिलोको कंत, मोहतिमिर अब आयो अंत ॥ प्रगटी ज्ञान कलाकी ज्योत, मुगति पंथ अब भयो उद्योत ॥ जागो० ॥ २ ॥ सुप-

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

नमें मूंऊी रह्यो मेरे लाल, इन विधि गया अनंता काल ॥ अब सुहनेका ओडो ख्याल, या सब झूठा मिथ्या जाल ॥ जागो० ॥ ३ ॥ या अपावन माया सेज, उसपर पिऊका इतना हेज ॥ सुकलध्यान पखारो अंग, युं प्रगटे तुम निर्मल रंग ॥ जागो० ॥ ४ ॥ पिउ निरखो जिनराउ दिनंद, कहे मति नारी मिटे युं निंद ॥ आप संभालो खोली नेत, विनयकरी विनवो पिउ चेत ॥ जागो० ॥ ५ ॥

॥ पद शोलमुं ॥

॥ राग ॥ हुसेनी ॥ खुदाके बंदे बे सीर मत ल्यो बज गारी ॥ एदेशी ॥ सुन सुहागिन बे दिलकी बात हमारी ॥ टेक ॥ में सोदागर दूर बिदेशी, सोदाकरने आया ॥ देखत तोकुं झूलिगया सब, तोहिसुं चित्त लाया ॥ सुन० ॥ १ ॥ निसी वासर तेरे रस राता, अपने काम न बूझे ॥ तेरे विरह दरदतें डरपूं, क्युं डुस्मनसें जूझे ॥ सुन० ॥ २ ॥ सुंदरी तें कबु कामन कीया, तुज बिनु पलक न जावे ॥ लोचन लागी रहे तेरी लालच, उंर कबु न सोहावे ॥ सुन० ॥ ॥ ३ ॥ अरथ गरथ सब तुजे खिलाया, दमरा ए-

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

कं न कमाया ॥ क्युंकर जाइ मिलुं सांइकुं, ल्याया कछु न लाया ॥सुन०॥४॥ विनयवती तुं खरी पियारी, जो अब करी हुशीयारी ॥ मुंदसी करे तो मिलुं सांइसुं, अविहड करुं अयारी ॥ सुन० ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ पद सत्तरमुं ॥

राग उपर प्रमाणे ॥ काया कामनी बेलाल, सुनी कहे जिऊरा ॥ मेंहु बंदी बेलाल, तुं मेरा पिऊरा ॥ पिऊरा सुनि बे करुं बिनती, म करी ओरसें नेहरे ॥ दो दिवसकी या दाम दोलत, देत छिनुमें छेहरे ॥ १ ॥ तुं गुमास्ता बेलाल, अपने शेठका ॥ ले जा यगा बेलाल, हुकमी ठेठका ॥ ठेठका आवे हुकम जब तुहीं, पलक इक न शके रही ॥ तो कहा मूरख करे धंधा, अंते तेरा कछु नहीं ॥ २ ॥ हो ने खुआ बेलाल, अपने सांइका, नाहु चोरीए बेलाल, नाहक पाइका ॥ पाइका नाहक चोरी उसका, जब नवि देत जबापरे ॥ तब ताहिकुं दे दूर दोऊख, दोष देखे आपरे ॥ ३ ॥ सोदा हक्कका बेलाल, एसा कीजीएं, होवे फायदा बेलाल, साहिब रीझीएं ॥ रीझीएं साहिब युं निवाजे, आप दुःखतें उऊरे ॥

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

बिनती इतनी मानी बालिम, बेपरवाही मत करे ॥ ४ ॥ तुं परदेशका बेलाल, पंथी प्राहुणा, प्रीत में बांधी बेलाल, क्युं रहुं तो विना ॥ तुं बिना क्युं करी, रहुं दुःख जरी, सती युं संगें चलुं ॥ सांश्का करी बिनय सज्जन, युं अजेदें तुज मिलुं ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ पद अढारमुं ॥

॥ राग आशावरी ॥ कहा करुं मंदिर कहा करुं दमरा, न जानुं कहां तुं उड बेठेगा जमरा ॥ जोरी जोरी गए बोरी दुमाला, उड गए पंखी पड रह्या माला ॥ कहा० ॥ १ ॥ टेक ॥ पवनकी गठरी केसें ठराउ, घर न बसत आय बेठे बटाउ ॥ अगनी बुझानी काहेकी जारा, दीप ठीपे तब केसें उजारा ॥ कहा० ॥ २ ॥ चित्रके तरुवर कबहुं न मोरे, माटिका घोरा केतेक दोरे ॥ धुंएकी हेरी तूरका थंजा, उहां खेले हंसा देखो अचंजा ॥ कहा० ॥ ३ ॥ फिरि फिरि आवत जात उसासा, लांपरे तारेका कैसा विश्वासा ॥ या दुनियांकी जूठी हे यारी, जैसी बनाइ बाजीगर बारी ॥ कहा० ॥ ४ ॥ परमातम अविचल अबिनासी, सोहे शुरू परम पद वासी ॥ वि-

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

नय कहे वे साहिब मेरा, फिर न करुं [redacted]
फेरा ॥ कहा० ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ पद ओगणीशमुं ॥

॥ राग काफी ॥ किसके चेले किसके पूत, आतमराम अकिला अवधूत ॥ जिउ जानले ॥ अहो मेरे ज्ञानीका घर सुत ॥ जिउ जानले, दिल मानले ॥ १ ॥ आप सवारथ मिलिया अनेक, आए इकेला जावेगा एक ॥ जिउ० ॥ दि० ॥ २ ॥ मढी गिरंदकी झूठे गुमान, आजके काल गिरेंगी निदान ॥ जि० ॥ दि० ॥ ३ ॥ तीसना पावडली बर जोर, बाबु काहेकुं साचो गोर ॥ जि० ॥ दि० ॥४ ॥ आगि अंगिठी नावेगी साथ, नाथ रमोगे खाली हाथ ॥ जि० ॥ दि० ॥ ५ ॥ आशा जोली पत्तर लोन्न, विषय जिव्हा नरी नायो थोन्न ॥ जि० ॥ दि० ॥ ६ ॥ करमकी कंथा डारो दूर, विनय विराजो सुख नरपूर ॥ जि० ॥ दि० ॥ ७ ॥ इति ॥

॥ पद वीशमुं ॥

॥ राग आशावरी ॥ घोरा जूगा हे रे तुं मत नूले असवारा ॥ टेक ॥ तोहि मुघा ए लगतुहे प्यारा,

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

ए अंत होयगा न्यारा ॥ घोरा० ॥ १ ॥ चरे चीज अरुमरे केदसुं, उवट चले अटारा ॥ जीन करे तब सोया चाहे, खानेकुं हुशिआरा ॥ घोरा० ॥ २ ॥ खूब खजीना खरच खिलावों, यो. सब न्यामत चारा ॥ असवारीका अवसर होवे, तब गलिया होवे गमारा ॥ घोरा० ॥ ३ ॥ बिनु ताता बिनु प्यासा होवे, खिजमत (बहुत) करावनहारा ॥ दूर दोर जंगल में मारे, फूरे धनी बिचारा ॥ घोरा० ॥ ४ ॥ कर हो चोकमा चातुर चोकस, यो चाबक दोयचारा ॥ इन घोरेकुं विनय सिखाउं, युं पावो नव पारा ॥ घोरा० ॥ ५ ॥

॥ पद एकवीशमुं ॥

॥ राग आशावरी ॥ पांचो घोरे एक रथ जूता, साहिब ऊसका जितर सूता ॥ खेडु ऊसका मद मतवारा, घोरेकुं दोरावनहारा ॥ पांचो० ॥ १ ॥ टेक ॥ घोरे जूठे ओर ओर चाहे, रथकुं फिरि फिरि उवट वाहे ॥ विषम पंथ चिहुं उंर अंधियारा, तोजि न जागे साहिब प्यारा ॥ पांचो० ॥ २ ॥ खेडु रथकुं दूर दोरावे, बेखबर साहिब दुःख पावे ॥ रथ जंगलमां जाय असुझे, साहिब सोया कबुअ न

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

बूझें ॥ पांचो० ॥ ३ ॥ चोर ठगोरे जहां मिलि आये, दोनुकुं मदप्याला पाए ॥ रथ जंगलमें जीरण कीना, मालधनीका उदांरी लीना ॥ पांचो० ॥४॥ धनी जग्या तब खेडु बांध्या, रासी परांना ले सिर सांध्या ॥ चोर नगे रथ मारग लाया, अपना राज बिनय जिऊ पाया ॥ पांचो० ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ पद बावीशमुं ॥

॥ राग सोरठ ॥ चतुर विचारो चतुर विचारो, ते कुण कहियें नारीजी ॥ पीउथी क्षण एक न रहे अलगी, कुलवंती अति सारीजी ॥ च० ॥ १ ॥ नाचे माचे प्रियसुं राचे, रमे नमे प्रीय साथेंजी ॥ एक दिने सा बाली तरुणी, नवि ग्रहवाये हाथेंजी ॥ च० ॥ ॥ २ ॥ चीर चीवर पहेरी सा सुंदरी, उंडे पाणी पेसेजी ॥ पण नींजाये नहीं तस कांइ, अचरज ए जग दीसेजी ॥ च० ॥ ३ ॥ वादल काले मरे ततंकालें, आतप योगें जीवेजी ॥ अंधारामां जो निसि जाय, तो देखाकुं दीवेजी ॥ च० ॥ ४ ॥ अवधि कहुं बुं मास एकनी, आपो अरथ विचारीजी ॥ कीर्त्ति

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

विजय वाचक शिष्य जंपे, बुध जननी बलिहारी-जी ॥ च० ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ पद त्रेवीशमुं ॥

॥ राग आशावरी ॥ जोगी एसा होय फरुं, पर-म पुरुषशुं प्रीत करुं ॥ उरसें प्रीत हरुं ॥ १ ॥ निर विषयकी मुद्रा पहेरुं, माला फीराऊं मेरा मनकी ॥ ग्यान ध्यानकी लाठी पकरुं, जन्नूत चढाऊं प्रभुगुन-की ॥ २ ॥ शील संतोषकी कंथा पहेरुं, विषय ज-लावुं धूणी ॥ पांचुं चोर पेरें करी पकरूं, तो दिलमें न होय चोरी हुंणी ॥३॥ खबर लेऊ में खिजमत तेरी, शब्द सींगी बजाऊं ॥ घट अंतर निरंजन बेठें, वासुं लयलगाऊं ॥ ४ ॥ मेरे सुगुरुने उपदेश दिया हे, निरमल जोग बतायो ॥ विनय कहे में उनकुं ध्या-ऊं, जिने सुरू मारग दिखायो ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ पद चोवीशमुं ॥

॥ मगध देशको राज राजेसर ॥ एदेशी ॥ जंग-लथी एक जायो चोपद, नयर वसंतो दीठो ॥ नवि बीये नवी नासे त्रासे, बेसे थिर अति धीठो ॥ १ ॥ चतुर नर अर्थ विचारी कहियें ॥ चतुराइ निवहीयें ॥

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

चतुरनर० ॥ नहिंतो गरव न वहियें ॥ चतु० ॥ एटेक ॥ जीव दया पालक रंगीलो, आवियो तुम काम ॥ अंगुल लघुयुग गुरु सरवोले, निधि अक्षर तस नाम ॥ चतु० ॥ ॥ २ ॥ घनरिपु त्रसरिपु तसरिपु सेवक, मंदिर नंदन जेह ॥ तरुणो पण निज दारि खोले, खेले ढे नित नेह ॥ चतु० ॥ ३ ॥ रोग रहित काया अति निर्मल, पण तस एक विकार ॥ पीइ पीइने नाकें नाखें, न रहे पेटें आहार ॥ चतु० ॥४॥ तात सहोदर तास नपुंसक, पासे बेठुं सोहे ॥ विनय नणे जे अर्थ कहे ते, पंक्तिनां मन मोहे ॥ चतु० ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ पद पचीशमुं ॥

॥ राग आशावरी ॥ साधु नाइ सोहे जैनका रागी, जाकी सुरत मूल धुन लागी ॥ सा० ॥ टेक ॥ सो साधु अष्ट करमसुं जगडे, सुन बांधे धर्मशाला ॥ ॥ सोहं शब्दका धागासांधे, जपे अजंपा माला ॥ साधु० ॥ १ ॥ गंगा यमुना मध्य सरसति, अधर वहे जलधारा ॥ करीअ स्नान मगन हुइ बेठे, तोड्या कर्म दल नारा ॥ साधु० ॥ २ ॥ आप अभ्यंतर ज्योति बिराजे, अंकनाल ग्रहे मूला ॥ पडिम

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

दिशाकी खरुकी खोलो, (तो) बाजे अनहद तूरा ॥ साधु० ॥ ३ ॥ पंचभूतका भरम मिटाया, ब्रह्मे मांहिं समाया ॥ विनय प्रभुसुं ज्योत मिलि जब, फिर संसार न आया ॥ साधु० ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ पद चवीशमुं ॥

॥ राग गोरी ॥ शांति तेरे लोचन हे अनियारे ॥ शां० ॥ टेक ॥ कमल ज्यौं सुंदर मीन ज्यौं चंचल, मधुकरथी अति कारे ॥ शां० ॥ १ ॥ जाकी मनोहरता जीत बनमें, फिरते हरिन बिचारे ॥ चतुर चकोर पराभव निरखत, बपरे चुनत अंगारे ॥ शां० ॥ ॥ २ ॥ उपशम रसके अजब चकोरे, मानो बिरंची संभारे ॥ कीर्त्ति विजय वाचक को विनयी, मोकों हे अति प्यारे ॥ शां० ॥ ३ ॥ इति ॥

॥ पद सत्तावीशमुं ॥

॥ राग गोडी ॥ तोलों बेर बेर फिर आवेंगें, जीऊ जीवन मेरे प्यारे पीयुकी, जो जो सोज न पावेंगे ॥ तोलों० ॥१॥ बिहर दिवानी फिरुं हुं ढुंढती, सेज न साज सुहावेंगे ॥ रूपरंग जोबन मेरी सहियो, पीयु बिन केसें देह देखावेंगे ॥ तोलों० ॥२॥ नाथ

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

निरंजनके रंजनकुं, बोत सिणगार बनावेंगे ॥ करले बीना नाद नगीना, मोहनके गुन गावेंगे ॥ तोलों० ॥ ३ ॥ देखत पीयुकुं मनि मुगताफल, नरी नरी थाल बधावेंगे ॥ प्रेमके प्याले, ग्याननी चाले, विरहकी प्यास बुजावेंगे ॥ तोलों० ॥४॥ सदा रही मेरें जीउमें पीऊजी, पीयुमें जीउ मिलावेंगे ॥ विनय ज्योतिसें ज्योत मिलेगी, तब इहां वेह न आवेंगे ॥ तोलों० ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ पद अठ्ठावीशमुं ॥

॥ राग धन्याश्री ॥ मेरी सजनी रुषन चंद्रानन नमुं, वारिषेण नगवंत ॥ वर्द्धमान जिन प्रणमियें, लहीयें सुख अनंत ॥ मेरे आतम सासय जिन मुख जोय, जिम सासय सुख होय ॥ मेरे आतम० ॥ ॥ १ ॥ ए आंकणी ॥ नवन पतिनां नवन बहोत्तेर, लाखने सातज कोमी ॥ एटले प्रासादे कह्या, जिन चार नमुं करजोमी ॥ मे० ॥२॥ ज्योतिषी व्यंतर तणा जे, नगर विमान असंख, तिहां असंख्य प्रासादें कह्या जिन, चार नमुं सह संख ॥ मे० ॥३॥ तिर्छे लोकें गुण सठेंजी, अधिक शत बत्रीश ॥ जिन नवन तिहां चार जिन ए, नमतां पूगे जगीस ॥ मे० ॥ ४ ॥ लाख

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

चोरासी सहस सत्ता, एवइ अधिक वीश ॥ उर्द्ध्वन लोक प्रासाद जिन ए, नमियें नामी शीश ॥मे०॥ ५॥ पंचवर्ण उदार मणिमय, सप्त हस्त प्रमाण ॥ केइ धनु सय पंच परिमित, ए जिन मूरति जाण ॥ मे० ॥ ॥ ६ ॥ इंद्रादिक सुर सयल पूजे, करे समकित सुद्ध ॥ केसर चंदन अगर पूजा, रचे भाव विशुद्ध ॥ मे० ॥ ७ ॥ घणा सुरवर लहियें जिनपद, पूजतां ए जिन चार ॥ ध्यान धरतां एह प्रभुनुं, लहियें भवनो पार ॥ मे० ॥ ८ ॥ श्री कीर्त्ति विजय उवझाय केरो, लहे ए पुण्य पसाय ॥ सासता जिन थुणियें एणीपर, विनय विजय उवझाय ॥ मे० ॥९॥ इति॥

॥ पद ओगणत्रीशमुं ॥

॥ राग भूपाल ॥ श्री विमलाचल मंडन आदिजिना, प्रह उठी वंदो एक मनां ॥ माता मरुदेवा नंदना, भावें दीठो नयन आनंदना ॥ वि० ॥ १ ॥ रवि उदयो जग पंकजवना, विकसत बूटा अलि बंधनां ॥ होवे निंदित जो निज लोचनां, आतमहित मन आलोचना ॥वि०॥२॥ चंचल ए तन धन जोबनां, बीजो सरण नको जिन जीवनां ॥ भाइ सफल करोरे जी-

वनां, करि विनय नजो जगजीवनां ॥ वि० ॥५॥ इति॥

॥ पद त्रीशमुं ॥

॥ सुख पूरण सोना घणी, प्रजुपास जिणंदा ॥ राज रोग रण नंयहरे, जिम घन अरविंदा ॥ सु० ॥ ॥ १ ॥ अश्वसेन वामा तणो, सुत नमे सुरिंदा ॥ नाम जपतां तेहनुं, बूटे नव फंदा ॥ सु० ॥ २ ॥ पउमावइ सानिध करे, धनद धरणिंदा ॥ नजो स्वामी एक चित्तयुं, मधुकर अरविंदा ॥ सु० ॥ ३ ॥ प्रजु देखी मन उल्लसे, जेम कुमुदिनी चंदा ॥ सार वखत वंठित दीयो, एम विनय नणिंदा ॥ सु० ॥ ४ ॥

॥ पद एकत्रीशमुं ॥

॥ राग ॥ रामकाली ॥ अजब जोत हे तेरी, हो आतम, अजब जोत हे तेरी ॥ तुं परमातम तुं परमागम, लबऊि रिऊि सब तेरी ॥ हो० ॥ १ ॥ सिऊ बुऊ हे तुं सिऊि साधक, तुं गुनकुं सम चंगेरी ॥ तेरो गुन गोरस गुनवेकुं, मुदित नइ मति मेरी ॥ हो० ॥ २ ॥ चिदानंद चेतन तुं चातुर, सुरति सुऊ तुं हे चेरी ॥ नूलो कहा नमे या नवमें, नइ अनंती फेरी ॥ हो० ॥ ३ ॥ दूर नहिं आ घटमें

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

तोहे सब, ब्रह्म ग्यानकी सेरी ॥ माया मोह तिमिर दल, ग्यान कला गति घेरी ॥ हो० ॥ ४ ॥ विनय स्वरूप संभारो अपनो, कुमति दूर उखेरी ॥ आपहीं आपसों आप विचारो, मुगति जइ अब मेरी ॥ ॥ हो० ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ पद बत्रीशमुं ॥

॥ राग रामकली ॥ अब क्युं न होत उदासी, हो आतम ॥ अब क्युं न० ॥ ए आंकणी ॥ उलट पलट घट घेरी रही हे, क्युं तुम आशा दासी ॥ हो० ॥ ॥ १ ॥ निसि बासर उनसुं तुम खेलो, होत खलक मां हांसी ॥ ओरो विषम विषयकी आशा, ज्युं निकसें नव फांसी ॥ हो० ॥२॥ पूरण जइ न कबहीं किसकी, कुरमति देत विसासी ॥ जो ओरी नहीं सोबत इनकी, तो कहा जये सन्यासी ॥ हो० ॥ ३ ॥ रूठरही सुमति पटराणी, देखो हृदय विमासी ॥ मुफ रहेहो क्या मायामें, अंते ओरी तुम जासी ॥ हो० ॥ ४ ॥ आश करो एक विनय विचारी, अविचल पद अविनासी ॥ आशा पूरण एक परमेसर, सेवो शिवरपुरवासी ॥ हो० ॥ ५ ॥ इति ॥

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

॥ पद तेत्रीशमुं॥

॥ सरसति पाये लागुं, मागुं वचनविलास ॥ विजयाणंद सूरिंदनी, जावें जणशुं जास ॥ सद्गुरुना गुण गातां, मांता होइ सुखपास ॥ नरहरि नारी सारी, होय घर अंगण दास ॥ १ ॥ सकल कला अन्यासी, वासी रहे सुगाम ॥ श्रीमंत साहनो नंदन, वंदन अति अनिराम ॥ महिमाहे महिमा निधि, जासतणुं वरनाम ॥ जापथी पाप टले सब, लहियें दोलत दाम ॥ २ ॥ जास तणा गुन गाजे, बाजे देश विदेश ॥ चरण कमल आणंदे, वंदे सयल नरेस ॥ तास तणा गुण बोलुं,खोलुं मुगति निवेश ॥ मानव नव मुख जीहां, दीहा सफल करेस ॥ सिणगार देयनो जायो, गायो नक्तियें आज ॥ पुण्य अनंता लीधां, सीधां वंछित काज ॥ सोनागी वेरागी, सुंदर मुनि सिरताज ॥ नव सायर उतारे, तारे जिम वरुजहाज ॥ ॥ ४ ॥ कीर्त्तिविजय उवझाय पसाय लइ नलेनाव ॥ गछपति गायो पायो, ऊलट सरले नाव ॥ जिहांलगें चंद्र दिवाकर, मानस नाम तलाव ॥ तिहांलगें जयवंता गुरु, होजो पुण्यप्रनाव ॥ ५ ॥

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

॥ पद चोत्रीशमुं ॥

॥ बावा हम बिचार करलागे, हम बिचार करलागे ॥ बा० ॥ टेक ॥ मनमें चिंता रहि न कोउ, दुःखजरम जोजागे ॥ बा० ॥ १ ॥ गुरुका शब्द तीर तरकसमें, करे कमान बिचारी ॥ साचे सो रन समसेर हमारे, तो ग्यान घोडे असवारी ॥ बा० ॥ ॥ २ ॥ गोरव काज वसीला कीया, चेहेरे नाम लिखाया ॥ सत्य काज संतोष लगामी, तेजीका चाबक लाया ॥ बा० ॥ ३ ॥ प्रेम प्रीत बिच जाम न दीना, तुरत बरात लखाइ ॥ नाम खजाना जगत अबुफा, तो खुब चाकरी पाइ ॥ बा० ॥ ४ ॥ हांसल दाम खरच कछु नांहीं, तागीर करे न कोइ ॥ विनयकुं दरसन उमदी खिजमत, जाग्य विना न हाइ ॥ बा० ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ पद पांत्रीशमुं ॥

॥ आदित आदि जिन ध्यायो, चरणारविंद उदायो ॥ चल उदयो प्रजु मुख सूर ॥ आ० ॥ टेक॥ सोम सुक्तित जयो, त्रिहुं लोक आनंद लह्यो ॥ प्रजु मुख देखत चंड शीतल जरपूर ॥ आ० ॥१॥ घर

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

घर मंगल गायो, बुद्धि विवेक आयो ॥ गुरुके चरण धायो, सुकर समकित पायो ॥ आ० ॥ शनी केतु राहु चलायो, विनय पद तिहां पायो ॥ नवनिधान शुभ शिव वधू पहोचायो ॥ आ० ॥ २ ॥ इति ॥

॥ पद गत्रीशमुं ॥

॥ परम पुरुष तुंहि, अकल अमूरति युंही, अकल अगोचर रूप, बरन्यो न जात हे ॥परम०॥१॥ टेक ॥ तिन जगत रूप, परम वल्लभरूप, एक अनेक तुंही, गिन्यो न गिनात हे ॥ परम० ॥ २ ॥ अंग अनंग नांहिं, त्रिभुवनको तुं सांइं, सब जीवनको सुखदाइ, सुखमें सोहात हे ॥ परम० ॥ ३ ॥ सुख अनंत तेरो, ग्रह्योहु न आवे घेरो, इंद्र इंद्रादिक हेरो, तोहुं न हिं पात हे ॥ परम० ॥ ४ ॥ तुंही अविनाशी कहायो, लखेमें न कानहीं आयो॥ विनय करी जो चायो, ताकुं प्रभु पायो हे ॥ परम० ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ पद साडत्रीशमुं ॥

॥राग आशावरी॥ माया महा ठगणी में जानी ॥ माया० ॥ टेक ॥ त्रिगुन फांसा लेईकर दोरत, बोलत अमृतबानी ॥ माया० ॥ १ ॥ केसव घर कमला

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

होइ बेठी, संभु घर भवानी ॥ ब्रह्माघर सावित्रि होइ बेठी, इंद्र घर इंद्राणी ॥ माया० ॥ २ ॥ पंडितकुं पोथी होइ बेठी, तीरथीयाकुं पानी ॥ योगी घर भभूत होइ बेठी, राजाके घर रानी ॥ माया० ॥ ३ ॥ किनें माया हीरो करलीनो, किने ग्रही कोरी जानी ॥ कहत विनय सुनो अब लोको, उनके हाथ बिकानी ॥ माया० ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ इति श्रीजशविलास तथा श्रीविनयविलास संपूर्ण. ॥

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

॥ ॐ ह्रीं श्रीअसिआउसायनमः ॥

॥ अथ ॥

॥ श्रीज्ञानविलास प्रारंभः ॥

॥ पद पहेलुं ॥

॥ राग भैरव ॥ चारित्र पति श्री चारित्र पार्श्व, नवनिधि श्रीगृह ध्येयं ॥ चा० ॥ टेक ॥ भक्ति भर निर्झर गण नम्रित, नित्यं क्रम मर्चेयं ॥ चा० ॥ १ ॥ रितु शर घन वैडूर्य मणि छबि, रविकर रुचि सुशरीरं ॥ कज मकरंदोत्कट सम वदनं, दसन कुंदल हीरं ॥ चा० ॥ २ ॥ नम्रित धनु पूरण शशि नयनं, शांति सुधारस रूपं ॥ अनुपमउत्कट गुण गण जलधिं, परमानंद सरूपं ॥ चा० ॥ ३ ॥ गंभीरोत्कट शरत्रि सद्गुण, युक्त वचामृत पेयं ॥ त्रिजुवन गत भवि धर्मुपशमनं, शिवतरुबीज गृहेयं ॥ चा० ॥ ४ ॥ पुष्पफलान्वित सुरतरुलब्धं, वंछित पूरण एयं ॥ चारित्रनंदी श्रीसंततिदायक, पार्श्व चारित्र जिन ज्ञेयं ॥ चा० ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ पद बीजुं ॥

॥ राग भैरव ॥ भोर भयो उठ जागो मनुवा,

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

साहिब नाम संभारो ॥ जो० ॥ टेक ॥ सुतां सुतां रयनविहानी, अब तुम नींद निवारो ॥ मंगलकारि अमृत वेला, थिरचित्त काज सुधारो ॥ जो० ॥ ॥ १ ॥ खिनभर जो तुं याद करेगो, सुख नीपजेगो सारो ॥ वेला वीत्यां हे पछतावो, क्युं कर काज सुधारो ॥ जो० ॥ २ ॥ घरव्यापारें दिवश वितायो, राते निंद गमायो ॥ इन वेला निधि चारित्र आदर, ज्ञानानंद रमायो ॥ जो० ॥ ३ ॥ इति ॥

॥ पद त्रीजुं ॥

॥ राग भैरव ॥ मेरे तो मुनि वीतराग, चित्त मांहे जोई ॥ मेरे० ॥ टेक ॥ और देव नाम रूप, दूसरो न कोई ॥ मेरे० ॥ १ ॥ साधनके संघ खेल खेल, जाति पांत खोई ॥ अबतो वात फैल गइ, जाने सब कोई ॥ मेरे० ॥ २ ॥ घाति करम भसम ठाण, देहमें लगाई ॥ परमयोग सुरूभाव, खायक चित्त लाई ॥ मेरे० ॥ ३ ॥ तंबूतो गगन भाव, भूमि शयन भाई ॥ चारित नवनिधि सरूप, ज्ञानानंद भाई ॥ मेरे० ॥ ४ ॥ इति ॥

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

॥ पद चोथुं ॥

॥ राग भैरव ॥ ब्रह्मरूप ज्योतिरूप, चित्तमां संभारके ॥ ब्रह्म० ॥ टेक ॥ निर्मल जाको रूप विराजे, द्रव्य भाग वीतराग, स्वगुन भोग परम योग, ज्ञान दरश एकरूप, जगतभास कारके ॥ ब्रह्म० ॥ १ ॥ अक्षय अविचल गुणगणधामी, परमरूप आतम रूप, सिद्धसरूप विश्वभूप, बाल तरणि रोचिरूप, दरव भाव भासके ॥ ब्रह्म० ॥ २ ॥ परमानंद चेतनमय मूरति, रिपुनिकंद बोधकंद, सुख अमंद स्वछवृंद, तत्वरंग चारितनंद, ज्ञानानंद वासके ॥ ब्रह्म० ॥ ३ ॥ इति ॥

॥ पद पांचमुं ॥

॥ राग भैरव ॥ ब्रह्मज्ञान कांति देख, आनंद अंग पइयां ॥ ब्रह्म० ॥ टेक ॥ भव्य जन संसटाल, तिन लोक प्रतिपाल ॥ करम वरग रहित होय, सासत गुण लहियां ॥ ब्रह्म० ॥ १ ॥ सहज निजपद पहिचान, शुभ अशुभ भाव जान ॥ सकल परजन विभाव, दूरथी तजैयां ॥ ब्रह्म० ॥ २ ॥ फटिक सम स्वछमान, विमल गुण गण निधान ॥ परमनिधि चारितरूप, ज्ञानानंद लहियां ॥ ब्रह्म० ॥ ३ ॥

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

॥ पद छठु ॥

॥ राग वेलावल ॥ साहिब वास पहिचानियें, जानो तेहनो जाव ॥ वह जान्या बिन ए तनु, पाहन सम ठाव ॥ साहिब० ॥ १ ॥ ज्ञाने ग्येयकी एकता, ध्याने ध्येय समाय ॥ निज अनुजव घट जोइयें, कहावें स्यो रमाय ॥ साहिब० ॥ २ ॥ वेद पुरानमें कबु नहीं, नहीं कबु वाको सहिनान ॥ इगं निधि चारित रूपमय, ज्ञानानंद सुजान ॥ साहिब० ॥ ३ ॥ इति ॥

॥ पद सातमुं ॥

॥ राग वेलावल ॥ या नगरीमें क्युं कर रहनां, राजा लूंट करे सो सहना ॥ या० ॥ टेक ॥ नहीं व्यापार इहां कोइ चाले, नही कोइ घरमांहें गहना ॥ या० ॥ १ ॥ तसकर पण निज दाव विचारे, जेद निहाले फिर फिर रहना ॥ नारी पांच शीपाइ साथें, रमण करे नित कुणसें कहना ॥ या० ॥ २ ॥ अंजलि जल जिम खरची खूटे, आखर इग दिन हेगा परना ॥ यातें नवनिधि चारित संयुत, इग ज्ञानानंद हेगा सरना ॥ या० ॥ ३ ॥ इति ॥

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

॥ पद आठमुं ॥

॥ राग वेलावल ॥ साधो जाइ देखो नायक माया ॥ सा० ॥ टेक ॥ पांच जातका वेस पहिराया, बहु विध नाटक खेल मचाया ॥ सा० ॥ १ ॥ लाख चौरासी योनिमांहे, नानारूपें नाच नचाया ॥ चवदह राजलोक गत कुलमें, विविध जांतिकर जाव दिखाया ॥ सा० ॥ २ ॥ अजतक नायक धायो नांहिं, हारगयो कहुं कुनसें जाया ॥ यातें निधि चारित्र सहायें, अनुपम ज्ञानानंद पदजाया ॥ सा० ॥ ३ ॥

॥ पद नवमुं ॥

॥ राग वेलावल ॥ अबहीं प्यारे चेतले, घर पूंजी संजारो ॥ अब० ॥ टेक ॥ सहु परमाद तुं डांरुदे, निरखो कागल सारो ॥ अ० ॥ १ ॥ मगरूरी तुम मत करो, नहिं परगल तुझ माया ॥ पूंजी तो उंढी घणी, व्यापार वधाया ॥ अ० ॥ २ ॥ गांफिल होय कर मतरहे, पग देख फिलावो, घटमें निधि चारित गही, ज्ञानानंद रमावो ॥ अ० ॥ ३ ॥

॥ पद दशमुं ॥

॥ राग वेलावल ॥ प्यारे चित्त विचारले, तुं क

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

हांसें आया ॥ बेटा बेटी कवन हे, किसकी यह माया ॥ प्यारे० ॥ १ ॥ आवनो जावनो एकलो, कुण संग रहाया ॥ पंथक होयकर जालमें, कैसें लपट्यो जाया ॥ प्यारे० ॥ २ ॥ नीसर जावो फंदसें, इग छिनमें जाया ॥ जो निधि चारित आदरे, ज्ञानानंद रमाया ॥ प्यारे० ॥ ३ ॥ इति ॥

॥ पद अगीआरमुं ॥

॥ राग आशावरी ॥ अवधू सुता क्यां इस मठमें ॥ अ० ॥ टेक ॥ इस मठका हे कवन जरोंसा, पल जावे चटपटमें ॥ अ० ॥ छिनमें ताता छिनमे शीतल, रोग शोग बहु मठमें ॥ अ० ॥ १ ॥ पानी किनारे मठका वासा, कवन विश्वास ए तटमें ॥ अ० ॥ सूता सूता काल गमायो, अजहुं न जाग्यो तुं घटमें ॥ अ० ॥ २ ॥ घरटी फेरी आटो खायो, खरची न बांधी वटमें ॥ अ० ॥ इतनी सुनी निधि चारित्र मिलकर, ज्ञानानंद आए घटमें ॥ अ० ॥ ३ ॥

॥ पद बारमुं ॥

॥ राग आशावरी ॥ बिनजारा तें खेप जरी जारी ॥ बि० ॥ टेक ॥ चार देसावर खेप करी तम, लाज

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

लह्यो बहु नारी ॥ बि० ॥ फिरतां फिरतां नयो तुं नायक, लाखी नाम संनारी ॥ बि० ॥ १ ॥ सहस लाख करोमां उपर, नाम फलायो सारी ॥ बि० ॥ बेटा पोतरा बहु घर कीना, जगमें संपत्त सारी ॥ बि० ॥ ॥ २ ॥ खूटी खरची लदगयो डेरो, पमगयो टांमो नारी ॥ बि० ॥ विन खरचीतें कवन संनारे, टांडेकी नई खवारी ॥ बि० ॥ ३ ॥ पहेले देखी पग जो राखे, निधि चारित तुं धारी ॥ बि० ॥ ज्ञानानंद पद आदरतो, खरची होती सारी ॥ बि० ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ पद तेरमुं ॥

॥ राग आशावरी ॥ योगी तेरा सूना मंदिर क्युं ॥ योगी० ॥ टेक ॥ बहु महनतकर मंदिर चुनियो, अब नहीं बसता क्युं ॥ योगी० ॥ १ ॥ तीरथजलकर एहने धोया, नोग सुरनि दरव क्युं ॥ योगी० ॥ नसमनूत ए मंदिर ऊपर, घास लगाया क्युं ॥ योगी० ॥ २ ॥ रामनाम एक ध्यानमें योगी, धूनी ज्युंकी त्युं ॥ योगी० ॥ एह विचार करी नाइ साधो, नवनिधि चारित ल्युं ॥ योगी० ॥ ३ ॥ इति ॥

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

॥ पद चौदमुं ॥

॥ राग आशावरी ॥ अबधू वह जोगी हम माने, जो हमकुं सबगत जाने ॥ अ० ॥ ब्रह्मा विष्णु महेसर हमही, हमकुं इसर माने ॥ अ० ॥ १ ॥ चक्री बल वासुदेव जे हमहीं, सबजग हमकुं जाने ॥ अ० ॥ हमसें न्यारा नहिं कोइ जगमें, जग परमित हम माने ॥ अ० ॥ २ ॥ अजरामर अकलंकता हमहीं, शिववासी जे माने ॥ अ० ॥ निधि चारित ज्ञानानंद जोगी, चिद्घन नाम जे माने ॥ अ० ॥३॥ इति ॥

॥ पद पंदरमुं ॥

॥ राग आशावरी ॥ साधो जाइ नहिं मिलियो हम मीता ॥ सा० ॥ टेक ॥ मीता खातर घर घर जटकी, पायो नहिं परतीता ॥ सा० ॥ जहां जाउं ताहां अपनी अपनी, मत पख जांखे रीता ॥ सा० ॥ ॥१॥ संसय करुं तो कहे बिनाला, वह्वज रूसे नीता ॥ सा० ॥ इत उतसें अधविचमें जूली, कैसे कर दिन बीता ॥ सा० ॥ २ ॥ आगम देखत जग नवि देखुं, जिम जल जख पग रीता ॥सा०॥ तिनथी हव अम निधि चारित युत, इग ज्ञानानंद मीता ॥ सा० ॥३॥

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

॥ पद सोलमुं ॥

॥ राग रामकली ॥ नानारंग गहन कानन बिच, चार दिनारा देख तमासा ॥ ना० ॥ टेक ॥ रंग सुरंग फूली वनराइ, नित नित देखत रहत उल्हासा ॥ ना० ॥ १ ॥ छोटे मोटे बहु विध तरुवर, करम हेतु मदमाता ॥ पंच सखी सुख पवने हिलमिल, अंगोअंग जूले रंगराता ॥ ना० ॥ २ ॥ केतेइ पात फूल फल जडगए, केतेइ पाके पाता ॥ रह गइ सांख पुण वसंत समय गत, केतेइ नयगए फूल फल पाता ॥ ना० ॥ ३ ॥ फिर निर धूत पवन योगें कर, जलबुद बुदका वासा ॥ इग दिन चटपट सबही चलगए, जिम जल बिच बतासा ॥ ना० ॥ ४ ॥ उलट पलट तरु देख्यो वनमें, तुरतही नयो उदासा ॥ यातें नवनिधि चारित्र नंदें, ज्ञानानंद सुख खासा ॥ ना० ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ पद सत्तरमुं ॥

॥ राग रामकली ॥ निज आसाका बडा नरेसा, पर आसा हे गलकी पासा ॥ नि०॥ टेक ॥ आपहि परकी आस करतहे, कैसे पूर करे ते आसा ॥

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

नि० ॥ १ ॥ पर आसा खिन खिन रूखमियो, रह्कर देख्यो खूब तमासा ॥ नि० ॥ आसा दासिके वस कूकर, जटके गलिगलि घरघर वासा ॥ नि० ॥ ॥ २ ॥ निज आसीकी आस करंता, जटपट पूरण होवे आसा ॥ नि० ॥ एह विचार करी जाइ साधो, पामो नवनिधि चारित खासा ॥ नि० ॥ ३ ॥

॥ पद अढारमुं ॥

॥ राग रामकली ॥ कुण जाणे साहेबका वासा, जिहां रहताहे साहिब साचा ॥ कु० ॥ टेक ॥ साधु होय केइ जलमें बूडे, जिम मछलीकाहे जल वासा ॥ कु० ॥ १ ॥ बामण होयकर गाल बजावे, फेरे काठकी माल तमासा ॥ गौमुखि हाथें होठ हलावें, तिणका साहिब जोवे तमासा ॥ कु० ॥ २ ॥ मुल्लां होयकर बांग पुकारे, क्या कोइ जाणे साहिब बहेरा ॥ कीडीके पग नेउर वाजे, सोबी साहिब सुनता गहेरा ॥ कु० ॥ ३ ॥ कंठ काठ केइ मुहमो बांधे, काला चीवर पहरे तमासा ॥ छोत अछोतका पानी पीवे, जक्ष अजक्ष जोजनकी आसा ॥ कु० ॥ ४ ॥ साधु जए असवारी बेसे, नृपपरनीति

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

करे सुख खासा॥ पंचाग्नि केइ ताप तपत हे, देह खाख रासजपर जासा ॥ कु० ॥ ५ ॥ आठ दरव आगल केइ राखे, देव नाम परसाद लगाता ॥ घंट बजाडी आपहिं खावे, नित नित साहिबकुं दिखलाता ॥ कु० ॥ ६ ॥ सरवंगी जे सबकुं माने, अपनी अपनी मतिमें बहुरा ॥ साहेब सब नटबाजी देखे, जग जनकारज वस जया बहुरा ॥ कु० ॥ ७ ॥ इम कर नहिं कोइ साहेब मिलता, जगमें पाखंम सबही कीता ॥ चारित्र ज्ञानानंद विना नहिं, समजो जगमें तन कोइ मीता ॥ कु० ॥ ८ ॥ इति ॥

॥ पद उंगणीशमुं ॥

॥ राग रामकली ॥ वालो माहरो क्यौं जटके परवासा, तुजमठ निरखो साहेब वासा ॥ वा० ॥ टेक ॥ विनु अनुजव ताकुं नहिं जाने, देखे कैसें उजासा ॥ वा० ॥ १ ॥ नहिं मानस नहिं नारी साहिब, नांहि नपुंसक आगम जासा ॥ पांचो रंग जाके नहिं दिसे, तामें नहिं गंध रसकावासा ॥ वा० ॥ २ ॥ नहिं जारी नहिं हलका साहेब, नहिं रूखा नांहि चिकनासा ॥ शीता ताता जाके न पावे,

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

अप्रतिबंध आगति गति जासा ॥ वा० ॥ ३ ॥ कोइ संघयण जाके नहिं पावे, नहिं कोइ संठाण निवासा ॥ जां देखे तां एकही साहिब, जग नज परमितहे जसु वासा ॥ वा० ॥ ४ ॥ सो साहब तुं अपना मठमें, निरखो थिर चित्त ध्यान सुवासा ॥ चारित ज्ञानानंद निधि आदर, ज्योतिरूप निजभाव विकासा ॥ वा० ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ पद वीशमुं ॥

॥ राग रामकली ॥ जान न बामन काजी साधो, साहबकी गति है गी न्यारी ॥ जा० ॥ टेक ॥ उतपाद व्यय दरव परयायें, एक अनेक इगहे पुन सारी ॥ सा० ॥ १ ॥ थिरता एक समय गत जाके, उतपाद व्यय पण ध्रुव सारी ॥ अस्ति नास्ति नास्ति आस्तिकहे, आगम मांहें द्रव्य विचारी ॥सा०॥२॥ ऐसी बात हम कबहुं न जानी, किनही मुख सुन नांहि संजारी ॥ चरम नयन कर नहिं हम निरखी, अनुपम सादवाद गुण धारी ॥ सा० ॥ ३ ॥ चज निखेपें सात नये कर, सातें जंग समाधि संजारी ॥ निधि चारित्र ज्ञानानंद अनुजव,

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

निंहचे साहेब जाणे सारी ॥ सा० ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ पद एकवीशमुं ॥

॥ राग टोडी ॥ सुनो पिया तम सुखसें विचरो री, नंदन वनकी सयल करोरी ॥ सु० ॥ टेक ॥ मेरे बापको बाप मनोहर, बहुविध तरुतल चिरधरोरी ॥ सु० ॥ १ ॥ नारी समीयुत तरुतल बेस्यो, दुःख सुखकी सहु वात करेरी ॥ दुग मंतरी परिकर युत शालो, आयो अंगोअंग मिरेरी ॥ सु० ॥ २ ॥ सासु आठ सखीयुत आइ, मनकी मोजां मिल निकस्यो री ॥ धरमराजको परिकर सघलो, आय मिल्यो मन शुद्ध विकस्योरी ॥ सु० ॥ ३ ॥ हव चेतन सहु निज परिवारें, वसतां अनुभव वात करेरी ॥ निधि चारित्र ज्ञानानंद साथें, ज्ञान लहर पामे जलीय परेरी ॥ सु० ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ पद बावीशमुं ॥

॥ राग टोडी ॥ दूर रहो तम दूर रहो तम दूर रहोरी, मोसुं तो तम दूर रहोरी ॥ दू० ॥ टेक ॥ इतने दिन अमने दुःख दीधुं, थारे संग कर सुख न लहोरी ॥ दू० ॥ १ ॥ तीन लोककी ठगनी तूंही,

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

तुजसम नहिं कोइ एहवो करेरी ॥ मीठो बोली हिरिदय पैसे, लाभ करे बहु भांत परेरी ॥ दू० ॥ ॥ २ ॥ सागरमें तुं था हव ताबे, पाछे गोतो देय टरेरी ॥ तुज कुटिलाका कवन भरोंसा, बोलतही तुं घात करेरी ॥ दू० ॥ ३ ॥ इहां सेती तुं दूर परीजा, इहां थारी मति नांह लहेरी ॥ चारित ज्ञानानंद रखवालो, अम प्यारी मोरे पास रहेरी ॥ दू० ॥ ४ ॥

॥ पद त्रेवीशमुं ॥

॥ राग टोडी ॥ तूंही पिया मन गमतो मिल्योरी, उर ठोर मन नांहिं मिल्योरी ॥ तूं० ॥ टेक ॥ हुं तोसुं कछु नहिं चाहुं, केवल अंगें रमन करोरी ॥ तूं० ॥ १ ॥ केवल तनमय एकत भावो, मोसुं प्रेमें प्रीति करोरी ॥ आठ दृष्टि सखि आतम साथें, वात करो तम सुख वचरोरी ॥ तूं० ॥ २ ॥ मनुवो सुनकर घरनी बानी, पास वसारे प्रीत करेरी ॥ चारित ज्ञानानंद सहायें, वालो धीरज चित्त धरेरी ॥ तूं० ॥ ३ ॥ इति ॥

॥ पद चोवीशमुं ॥

॥ राग टोडी ॥ प्यारे तम चउगान खरोरी, शांति खड्ग तम तेग करोरी ॥ प्या० ॥ टेक ॥ धरम

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

राज लसकर तमसाथें, मोटो मंतरी संग लरोरी ॥ प्या० ॥ १ ॥ मोहराज मकरध्वज गजपर, आयो तनखिन कोप करेरी ॥ चउ सुत मंतरियुत बहु लसकर, रणकारण सावधान लरेरी ॥ प्या० ॥ २ ॥ वालो संयम बक्तरधारी, धरम टोप धर खमग गहेरी ॥ आगमसाथें रणमें जूजे, डुर्धर रिपुदल हनन गहेरी ॥ प्या० ॥ ३ ॥ सातनो खयकर तीन पठाड्या, आठ शोलनो घात करेरी ॥ एक एक षट इगने मारुं, चोथो क्रोधनो घात चरेरी ॥ प्या० ॥ ॥ ४ ॥ दशमे सुखम लोज पिठामी, कूद्यो बारम ठान लहेरी ॥ मोहराजने गजसें पाड्यो, एकहिं हाथें घात वहेरी ॥ प्या० ॥ ५ ॥ जीत नगारो तेह वजायो, तेरमी जूमें सुख विचरोरी ॥ काची दोय घमी रण जींती, चारित ज्ञानानंद वरोरी ॥ प्या० ॥ ६ ॥ इति ॥

॥ पदपच्चीशमुं ॥

॥ राग टोमी ॥ मेरो पिया हे परम सन्यासीं, कवन करे हे पियाकी हांसी ॥ मे० ॥ टेक ॥ वरजित ईमा पिंगला मारग, सुखमना घर अजिलाषी ॥ मे० ॥ १ ॥ यम नियम आसन अनुरंगी, प्रत्याहार

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

ध्यान धारणवासी ॥ प्राणायाम समाधि सुरंगी, मूलोत्तर सुविलासी ॥ मे० ॥ २ ॥ रेचकपूरक कुंभक नेदें, बादर मन वशकारी ॥ चरम रंध्र मध्यगेहें पूरी, अनहद नाद विचारी ॥ मे० ॥ ३ ॥ बादर योग युगति सहु थिरता, आतम ध्यान विलासी ॥ पांचवरण पण तत्व सुदर्शी, परमातम गत नासी ॥ मे० ॥ ४ ॥ परमातम अनुसारे करतां, निज सहु नाव विकासी ॥ चारित ज्ञानानंद सन्यासी, जाने तिण निजवासी ॥ मे० ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ पद बवीशमुं ॥

॥ राग आशावरी फाग ॥ कैसें विचार करो नाइ साधु, दिव्य विचारें मन आराधो ॥ कै० ॥ टेक ॥ जो परथम सिद्धगति अनुनवियें, संसृति विण कहां सिद्ध होय साधो ॥ कै० ॥ १ ॥ संसृति चउगति नेद कहावे, तीन नेद तीग वेद सुजानो ॥ नारक तिरि जो परथम कहियो, निरजर नर बिनतें कैसे मानो ॥ कै० ॥ २ ॥ चउगति परथम जेह बखानुं, नरनारी कुण पहिले जायो ॥ बीज जाड पहिले कुण कहियें, इग विना इग किहांसें आयो ॥कै०॥ ३ ॥

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

इनकी आदि किहां कुण जाणे, आगम दिव्य विचार प्रमाणो ॥ चारित ज्ञानानंदें अनुभव, ए सहु भाव अनादि बखानो ॥ कै० ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ पद सत्तावीशमुं ॥

॥ राग आशावरी ॥ अद्भूत एक अचंभो देखो, अबतक जानुं नहिं कोइ लेखो ॥ अ० ॥ टेक ॥ जंगलमांहे मोटो चरखो, कवन बनायो चालत पेखो ॥ अ० ॥१॥ छोटीसी कीली तेहनें कांते, आठ पहर अहनिसि मन भायो ॥ चालत चालत थाकत नांहिं, इतनो बल यामें किहांसें आयो ॥ अ० ॥ २ ॥ रूअडी तेहनी नहि किहिं दीसे, का जाने कहां राखी भायो ॥ सघलाइ जनने चरखो दीसे, आगल पाछल रू न दिखायो ॥ अ० ॥ ३ ॥ कीडी थाकतां चरखो न चाले, केसो भयो हरामी देखो ॥ तिनतें चारित ज्ञानानंद जे, आपमतें रहे तम ते पेखो ॥ अ० ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ पद अठावीशमुं ॥

॥ राग आशावरी ॥ अद्भूत एक अचंभो भारी, निरख समज आपोआप विचारी ॥ अ० ॥ टेक ॥ पारावाररहित सागर बिच, नाव एक जिहां

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

निरखो नारी ॥ दांडी पांच चलावे जाकुं, पतवारी इग हे सुखकारी ॥ अ० ॥ १ ॥ चउदिसि चित्रित पाट पटंबर, नीतर साहब सुता सारी ॥ चउदिसि तेन तरंड फिरतहे, वालो साहब गांफल नारी ॥ अ० ॥ २ ॥ शैल सुनत उठ बेठे साहब, नाज गए जिहां तसकर सारी ॥ चारित ज्ञानानंद संनारी, आनंद हरख लहे हुशिआरी ॥ अ० ॥ ३ ॥ इति ॥

॥ पद उंगणत्रीशमुं ॥

॥ राग आशावरी ॥ राम राम सब जगहि माने, राम रामको रूप न जाने ॥ रा० ॥ टेक ॥ कवण राम कुण नगरी वासो, कहांसें आयो किहां नयो वासो ॥ रा० ॥ १ ॥ राम राम सहु जगमें व्यापी, राम विना हे कैसे आलापी ॥ राम विनाहे जंगल वासा, पाछे कोइ जाकी न करे आसा ॥रा०॥२॥ रामहि राजा रामहि राणी, राम रामहि हैरोतानि ॥ रंटन करतहे कवन रामको, कैसो रूप बतावो वाको ॥ रा० ॥ ३ ॥ जे केइ वाको रूप बतावे, तेहिज साचो मुज मन नावे ॥ सो निधि चारित ज्ञानानंदें, जाने आपनो राम आनंदें ॥ रा० ॥ ४ ॥ इति ॥

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

॥ पद त्रीशमुं ॥

॥ राग आशावरी ॥ योगसमाधि योग आधारो, आगममांहें तत्त्व विचारो ॥ यो० ॥ टेक ॥ कानन परले खार कीनारे, अनुपम एक नगर सुखकारो ॥ यो० ॥ १ ॥ जामें जीव अनंत रहाहे, कुण समरथ ते गिणतां मानो ॥ सादि अनंता आयु जेहनो, बहुविध परिगल रिद्धि बखानो ॥ यो० ॥ २ ॥ उंचनीच जिहां भेद नहीं हे, सब जन भूपति भाव निहालो ॥ चारित ज्ञानानंद संभालो, जिम पामो पुरिवास विशालो ॥ यो० ॥ ३ ॥ इति ॥

॥ पद एकत्रीशमुं ॥

॥ राग ठुमरी ॥ मंदिर एक बनाया हमने ॥ मंदिर० ॥ टेक ॥ जिस मंदिरके दश दरवाजे, एक बुंदकी मायारे ॥ नानो पंखी जाके अंतर, राज करे चित्त लाया रे ॥ मं० ॥ १ ॥ हाड मांस जाके नहिं दीसे, रूपरंग नहिं जायारे ॥ पंख न दीसे कहसें पिछानुं, षटरस भोगें भायारे ॥ मं० ॥ २ ॥ जातो आतो नहिं कोइ देखे, नहिं कोइ रूप बतावेरे ॥ सब जग खायो तो पण भूखो, तृप्ति कबहिं न पा-

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

वेरे ॥ मं० ॥ ३ ॥ जालम पंखी तालम मंदिर, पाठे कोन बतावेरे ॥ वह पंखीको जो कोइ जाने, सो ज्ञानानंद निधि पावेरे ॥ मं० ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ पद बत्रीशमुं ॥

॥ राग ठुमरी ॥ इतना काम करे जे जोगी, सोइ योग न जानेरे ॥ इ० ॥ टेक ॥ मूंरु मूंराया नस्म लगाया, जोगी ना हम जानेरे ॥ बक्तर पहेरी रण कुं जीतें, सो योगी हम जानेरे ॥ इत० ॥ १ ॥ राजा वसकर पांचों जीते, डुर्धर दोयने मारेरे ॥ चार काटके सोल पिडारे, सोइ योग सुधारेरे ॥ इत० ॥ ॥ २ ॥ जागृत नावें सरव समय रहे, परमचारित्र कहावेरे ॥ ज्ञानानंद लहेर मतवाला, सो योगी मन नावेरे ॥ इत० ॥ ३ ॥ इति ॥

॥ पद तेत्रीशमुं ॥

॥ राग ठुमरी ॥ वादिनकुं नहिं जाना जबतक, कैंसा ध्यान लगाया रे ॥ वा० ॥ टेक ॥ जटा वधारी नस्म लगाइ, गंगा तीर रहायारे ॥ ऊरध बाह आतापना लेइ, योगी नाम धरायारे ॥ वा० ॥ १ ॥ चार वेद ध्वनि सूत धारकर, बामण नाम कहायारे ॥

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

शास्तर पढके ऊगडे जींते, पंमित नाम रहायारे ॥ वा० ॥ २ ॥ सुन्नत करके अल्ला बंदे, सीया सुन्नी कहायारे ॥ वाको रूप न जाने कोइ, नवि केइ बतलायारे ॥ वा० ॥ ३ ॥ जे केइ वाको रूप पहिचाने, तेहिज साच जनायारे ॥ ज्ञानानंद निधि अनुन्नव योगें, ज्ञानी नाम सुहायारे ॥ वा० ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ पद चोत्रीशमुं ॥

॥ राग ठुमरी ॥ ऐसो योग रमावो साधो ॥ ऐसो योग रमावोरे ॥ ऐ० ॥ टेक ॥ बरम विन्नूति अंग रमावो, दया तीर मन न्हावोरे ॥ ज्ञान शोचता अंतर घटमें, आतमध्यान लगावोरे ॥ ऐ० ॥ ॥ १ ॥ धरम शुकल दोय मुंदरा धारो, कनदोरो सम सारोरे ॥ सुन्न संयम कोपीन बिचारो, न्होजन निरजरा धारोरे ॥ ऐ० ॥ २ ॥ अनुन्नव प्याला प्रेम मसाला, चाख रहे मतवाला रे ॥ ज्ञानानंद लहेरमें जूले, सो योगी मदवालारे ॥ ऐ० ॥ ३ ॥ इति ॥

॥ पद पांत्रीशमुं ॥

॥ राग ठुमरी ॥ हुं सहलानी जानुं हुं तुम, काहे कुं न्हटकावे रे ॥ हुं० ॥ टेक ॥ न्हटकत न्हटकत न्हइ

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

हुं हरानी, तूं मत रीस चढावेरे ॥ हुं० ॥ १ ॥ एतला काल नपुंसक जानी, मंदिरमांह रहावे रे ॥ सघलाइ मानसने तूं ठेले, एहि अचंनो आवे रे ॥ हुं० ॥ २ ॥ आसपास ना अमने देखी, कुटिला नाव जनावे रे ॥ वल्लन्न सांनल मोकुं ठांके, मोरी हुरमत जावे रे ॥ हुं० ॥ ३ ॥ तूं तो निरलज नयो मतवालो, थारी कवन चलावे रे ॥ अम वल्लन्न ज्ञानानंदसाथें, अंगोअंग मिलावे रे ॥ हुं० ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ पद ठत्रीशमुं ॥

॥ राग वसंत ॥ योगी यासें चित्त रमायो, याकी नगति करत हुं ॥ यो० ॥ टेक ॥ मेरो तो योगी बालो नोलो, बरमचारी मन नायो ॥यो०॥ जो यह देखे सोइ लोनावे, मतवालो जग नायो ॥ यो० ॥ १ ॥ योगी खातर घर घर नटकी, यह योगी अब पायो ॥ यो० ॥ अमनें वल्लन्न याकुं मान्यो, मेरो चित्त लोनायो ॥ यो० ॥ २ ॥ निरलोनी निकलंकी योगी, योगी योग रमायो ॥ यो० ॥ निधि चारित ज्ञानानंद मूरति ॥ प्राण पियारो पायो ॥ यो० ॥ ३ ॥ इति ॥

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

॥ पद साडत्रीशमुं ॥

॥ रागं वसंत ॥ देखी ईग नारी, सतिय शिरोमणि नाई ॥ दे० ॥ टेक ॥ रूपवंत जे नागी नटके, सबहि के मन नाई ॥ दे० ॥ १ ॥ सघलाइ मानस तेह रमावे, मुनि जन शोभा दाई ॥ दे० ॥ जोगी जन तिन नांहि बतावे, योगी चित्त रमाई ॥ दे० ॥ ॥ २ ॥ पंडित याकुं लाड करतहे, अहनिसि चित्त रमाई ॥ दे० ॥ योगीसर अंगोअंग रमावे, हाथो हाथ जूलाई ॥ दे० ॥ ३ ॥ इनने निरखी मुनि मनचाले, ध्यान धरे चित्त लाई ॥ दे० ॥ निधि चारित ज्ञानानंद पायो, या नारी चित्त आई ॥ दे० ॥४॥

॥ पद अडत्रीशमुं ॥

॥ राग वसंत ॥ सुणलीजो पिताजी, योगीयासें चित्त रमायो ॥ सु० ॥ टेक ॥ अहनिसि योगी के संग बेसी, जग जन लाज गमायो ॥ सु० ॥ १ ॥ अपने मनरूचि अम ए कीधो, चउदिशि वात फलायो ॥ सु० ॥ मेरे तो घरसे काम नही हे, योगी पास रहायो ॥ सु० ॥ २ ॥ इतनी कहकर घरसें निकसी, योगी वल्लभ नायो ॥ स०॥ निधिचारित ज्ञा-

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

नानंद योगी, मिलकर अंग मिलायो ॥सु०॥३॥ इति

॥ पद उगणचालीशमुं ॥

॥ राग वसंत ॥ में कैसे रहुं सखी, पियागयो परदेशो ॥ में० ॥ टेक ॥ रितु वसंत फूली वनराइ, रंग सुरंगीत देशो ॥में०॥१॥ दूरदेश गये लालची वालम, कागल एको न आयो ॥ में० ॥ निर्मोही निस्नेही पिया मुऊ, कुण नारी लपटायो ॥ में० ॥ २ ॥ वसंत मासनी रात अंधारी, कैसें विरह बुजायो ॥ में० ॥ इतने निधि चारित पुत वल्लन्न, ज्ञानानंद घर आयो ॥ में० ॥ ३ ॥ इति ॥

॥ पद चालीशमुं ॥

॥ राग वसंत ॥ मेरे पियाकी निशानी, मोरे हाथ न आवे ॥ मे० ॥ टेक ॥ रूपी कहुं तो रूप न दीसे, कैसें करी बतलावे ॥ मे० ॥ १ ॥ जोति सरूपी तेह विचारूं, करमबंध कैसें न्नावे ॥ मे० ॥ सिद्ध सनातन उपजन बिनसन, कैसें विचार सुहावे ॥ मे० ॥ ॥ २ ॥ वेद पुरानमें नहिं कहि दीसे, किणपर न्नाव रमावे ॥ मे० ॥ यातें चारित ज्ञानानंदी, एकहिं रूप कहावे ॥ मे० ॥ ३ ॥ इति ॥

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

॥ पद एकतालीशमुं ॥

॥ राग सारंग ॥ क्योंकर महिल बनावे पियारे ॥ क्यों० ॥ टेक ॥ पांच भूमिका महल बनाया, चित्रित रंग रंगावे ॥ क्यों० ॥ १ ॥ गोखें बेठो नाटिक निरखे, तरुणी रस ललचावे, इक दिन जंगल होगा तेरा, नहिं तुज संग कबु जावे ॥ क्यों० ॥ २ ॥ तीर्थंकर गणधर बल चक्रि, जंगल वास रहावे ॥ तेहना पण मंदिर नहिं दीसे, थारी कवन चलावे ॥ क्यों० ॥ ३ ॥ हरिहर नारद परमुख चलगए, तूं क्यों काल बितावे ॥ तिनतें नवनिधि चारित आदर, ज्ञानानंद रमावे ॥ क्यों० ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ पद बेंतालीशमुं ॥

॥ राग सारंग ॥ क्या मगरूरी बतावे पियारे ॥ क्या० ॥ अपनी कहा चलावे ॥ पि० क्या० ॥ टेक ॥ कवन देश कुण नगरीसें आया, कहां तुझ बास रहावे ॥ पि० ॥ १ ॥ कहा जिनस तुम लाए मगरू, किसबिध काल बितावे ॥ कहा जाने का मकसद हेगा, कैसो विचार रहावे ॥ पि० ॥ २ ॥ चार दिनांकी चांदनी हेगी, पाछे अंधार बतावे ॥ घर घर

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

फिरतां थाराहि मानस, अंगुलीयां दिखलावे ॥ पि० ॥ ३ ॥ तिनतें तूं मगरूरी छांडी, जग सम समता लावे ॥ तो नवनिध चारित्र सहायें, ज्ञानानंद पद पावे ॥ पि० ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ पद तेतालीशमुं ॥

॥ राग सारंग ॥ बिन वालम कहो कुण गति माहरी, वालम हीं गति नारी ॥ बि० ॥ टेक ॥ सुनो सखी तुम वेग मनावो, सइयां लावो निहारी ॥ बिन० ॥१॥ चांदनी राते मकरध्वज शर, आयलग्यो दुःखकारी ॥ विरहव्यथायें अमने खिनजर, सुख नहिं पामे सारी ॥ बिन० ॥ २ ॥ जलबिन मछली सम टलवलती, विरहजाल जइ जारी ॥ इतने ज्ञानानंद वालम आए, चारित संग सुखकारी ॥ बि० ॥३॥

॥ पद चुमालीशमुं ॥

॥ राग सारंग ॥ सेठ बेठे सारंग महलमें ॥ से० ॥ टेक ॥ सेठानी मोह नरपति बेठी, बेटा चार अनोपमें ॥ से० ॥ मिथ्या मकरध्वज जसु जाई, व्यापारें गणि कोपमें ॥से०॥१॥ उंची हाट बिठात बिठाइ, सुए करे नवरंगमें ॥ से० ॥ कनक रतननां झूखन

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

पहिरयां, वांके बेसे रंगमें ॥ से० ॥ २ ॥ [illegible] गल स्याही राखी, सेठ कहलाए नगरमें ॥ से० ॥ वातें लोक जमा सहु राखी, परखी मेली कुठारमें ॥ से०॥३॥ तेहने कागल कटको दीधो, जया निचिंता पलकमें॥से०॥ सहसलाख क्रोडोनां कागल, लेवे देवे खलकमें ॥ से० ॥४॥ चार दिशावर हाट करी जिन, जारी सराफ परदेशमें ॥ से० ॥ सेठ कहे हम करोड पतिहे, हम सम नहिं कोइ देशमें ॥ से० ॥५॥ जब जन सहु निज मांगन आया, कीधो दिवालो मगनमें ॥से०॥ अबतो शेठ योगी जये जागे, माल दीधो सहु सुजनमें ॥ से० ॥६॥ जैसेतैसे एकल चल गए, कवरी नहिं इग बाटमें ॥ हाट सुजन कोइ नहिं साथे, जइ खराबी वाटमें ॥ से० ॥७॥ एह विचार करी जाइ प्यारे, पुण्य पाप लीयो हाथमें ॥ से० ॥ तिनतें नवनिधि चारित अविचल, ज्ञानानंद जयो साथमें ॥ से० ॥ इति ॥८॥

॥ पद पिस्तालीशमुं ॥

॥ राग सारंग ॥ साहिब हे तेरे संगमें ॥ सा०॥ टेक ॥ जाके दरव अपरिमित होगा, कबहि न खूटे जंगमें ॥ लेनां देनां कछु नहिं जाके, जोगो अह-

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

निसि रंगमें ॥ सा० ॥ १ ॥ जिम जिम जोगे तिम तिम वाधे, क्युं जटके मति चंगमें ॥ मृगमद गंधें मृग सम जटके, घट अनुजव नहिं रगमें ॥ सा० ॥ २ ॥ निर्मल गंगानीर जे लाधो, खारी कुण पीवे वाटमें ॥ तिनतें निजघर चारित संयुत, ज्ञानानंद जोवो ठाठमें ॥ सा० ॥ ३ ॥ इति ॥

॥ पद बेंतालीशमुं ॥

॥ राग कहेरवा ॥ सइयां मुज गेंदा मंगायदे, गेंदाकी आइ हे बहार ॥ ए चाल ॥ यार मोह नारी मिलायदे, यारोंका याही हे मिलाप ॥ या० ॥ टेक ॥ रूपवंत मोह नारी मिलायदे, उत्तम कुल गुण धाप ॥ या० ॥ १ ॥ पहिली नारी मुऊ जटकायो, परघर रमवा ढाल ॥ या० ॥ ते मुज दूतापण कहलायो, जग जन कहेते ठिनाल ॥ या० ॥ २ ॥ सुकुलीनी मोहे नारी मिले जो, तो अम चित्त सुख जाय ॥ या० ॥ इतनी सुनकर खायक मंतरी, सुमतिनो मेलन कराय ॥ या० ॥३॥ घरनी संगें हरख धरीने, अंग रहे लपटाय ॥ या० ॥ चारित्र आदर ज्ञानानंदें, नवनिधि सहज लहाय ॥ या० ॥ ४ ॥

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

॥ पद सुडतालीशमुं ॥

॥ रांग कहेरबा ॥ किस मिस जाउं पणिहार कूवे, पर आसन योगीका ॥ ए चाल ॥ कुण मिस पियाकुं मनाय, मिलियो पिउ परदेशीका ॥ कु० ॥ टेक ॥ देश नगर नहिं जानुं जाको, जात पात न जनाय ॥ मि० ॥ १ ॥ नाम गोत जाको कबु नांहिं, कैसें निरखुं जाय ॥ मि० ॥ निर्मोही निःसनेही पिया मुज, कुण रीतें समजाय ॥ मि० ॥ २ ॥ मोसें पहेलें लाड करेथो, मुज बिन खिन न रहाय ॥ मि० ॥ अबतो मोसें रूसक चाल्यो, वात न पूछे जाय ॥ मि० ॥ ३ ॥ विरहव्यथायें तन मुज जूरे, किणसुं कहियें धाय ॥ मि० ॥ पिउ संयम सुज समता साथें, ज्ञानानंद रमाय ॥ मि० ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ पद अडतालीशमुं ॥

॥ राग कहेरबा ॥ मेरे जोले नवाब, कलकत्ते की सयरकुं ले चलोजी ॥ ए चाल ॥ मेरी प्यारीं सुनाहे, अबतो तम अम संग चलोजी ॥ मे० ॥ टेक ॥ दोय घोडेपर अम कियो जीन, तम पण चालो प्यारी संग अदीन ॥ मे० ॥ १ ॥ जल पण नांहिं

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

अब हम हाथ, ढील न करो प्यारी चलो हम साथ ॥ मे० ॥ तम खातर अम दुःख बहु कीन, प्यारी मत ढांडे अमने दीन ॥ मे० ॥ २ ॥ नारी कहे परो जारे निगोद, थारे मारे कुण करे वात निखोद ॥ मे० ॥ अम अब चालुं किंहां थारे संग धूत, तुं मूरख शिर मोल कुमूत ॥ मे० ॥ ३ ॥ इतनी सुनकर नयो ते उदास, कुटिला अबलानी कुण करे आस ॥ मे० ॥ तिन अवसर लही निधि चारित्त, ज्ञानानंद मूरति नजे सुख चित्त ॥ मे० ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ पद उंगणपचाशमुं ॥

॥ राग कहेरवा ॥ एक अचंनो मुज मन वशियो ॥ ए० ॥ टेक ॥ चालतो हालतो मूंगर दीठो, विचमें एक सिखर उंचो वसियो ॥ ए० ॥ १ ॥ ढोटा पांच शिखर जसुं चउदिशि, नाना तरु विण मंडित रहियो ॥ ए० ॥ सरव काल सागर विच रहितो, कवन चलावे ते अम कहियो ॥ ए० ॥ २ ॥ मानस नहिं कोइ तेहमां दिसे, ध्रुव अध्रुवपणो तेहमें रहियो ॥ ए० ॥ मुंगर बिच नवनिधि चारित्र युत, ज्ञानानंद मूरति गुण गहियो ॥ ए० ॥ ३ ॥ इति ॥

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

॥ पद पचाशमुं ॥

॥ राग कहेरवा ॥ ठोरी बामनकी, ठोरी बामनकी, अंगिया कुं अंतर लगायके चली ॥ हाथमें पिंजरा गुलाबकी ठरी, जरे बजारमें घुरती खडी ॥ ए चाल ॥ मोरे जोले पिया, मोरे जोले पिया, मोपर जादुरा नालकें चले ॥ मो० ॥ टेक ॥ मेरे हिरदय बिच राखती, कबु नहिं मागुं तोसुं रति ॥ मो० ॥ मोसें पिया तम काह उदास, हुं थारे इग चरणारी दास ॥ मो० ॥ १ ॥ जो थारा मनमें रहि एसी हुंस, पेहेलेहि जानति करति रूस ॥ मो० ॥ विन् बालम मेरो विगमे काल, क्योंकर वीते हाल निहाल ॥ मो० ॥ २ ॥ अबलाकें पति गति मति जान, अनुपम शील भूषण गुणखान ॥ मोरे० ॥ इतने नवनिधि चारित्र रंग, मिलगए ज्ञानानंद सुरंग ॥ मोरे० ॥ ३ ॥ इति ॥

॥ पद एकावनमुं ॥

॥ राग सोरठ ॥ प्रीतके कोइ फंदें पडो ना ॥ ए चाल ॥ बालम नारिके फंदें पडो ना ॥ बा० ॥ टेक ॥ जो तम नारीके फंदमें पडिहो, कोटि जतन

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

मन राखो रहे ना ॥ वा० ॥ १ ॥ नारी कालीनागन सरिखी, देखत चित्त झामाझोल करे रे ॥ वा० ॥ नारीसंयोगें बरमदत्त परमुख, नरकें डुरधर डुःस्क चरे रे ॥ वा० ॥ २ ॥ आर्द्रकुमर मुनि नारि संयोगें, वरस चउवीस गिहिवास कियो रे ॥ वा० ॥ नारीकी प्रीतें इनजव परजव, सुख न लहे पगबंध जयो रे ॥वा०॥३॥ उत्तम नर इन नाहिं बतावे, ध्यान धरे वनमांह रहे रे ॥ वा० ॥ निरमल निजगुन आतम ध्याने, सुद्ध समाधि जाव लहे रे ॥ वा० ॥ ४ ॥ तिनतें वालम तम पण समजो, कुटिलानी प्रीतकी परिहरो रे ॥ वा० ॥ मोसुं तो निधि चारित्र आदर, ज्ञानानंद सुख रमण करो रे ॥ वा० ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ पद बावनमुं ॥

॥ राग सोरठ ॥ देश माहरो पियाकुं बताय दिजो रे, मैंतो लेउंगी जोगनियाको वेस ॥ दे० ॥ ए चाल ॥ कोइ सखी पियाकुं बतावे री, मैंतो जाउंगी वालम पास ॥ को० ॥ टेक ॥ सारी जग्या पूछीयो, वालमजीको देश ॥ कोइको साच नहिं लह्यो, जो कागल पहुंतें देश ॥ को० ॥ १ ॥ ज्ञानी ज्ञानी सब कहे,

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

मोकुं न दीसें ज्ञान ॥ मैं तो साचो जब कहुं, पिया रूप कहे मन ॥ को० ॥ २ ॥ सज्जन ऐसो जो मिले, पियाकुं कागल मेल ॥ कागल वांची मुज लखे, पाछो उत्तर खेल ॥ को० ॥ ३ ॥ जबलग कागल तेहनो, नहिं आवे अमपास ॥ तबलग जूठी बात सहु, नहि पण मोकुं आस ॥ को० ॥४॥ इतने एह विचारमें, निधि चारितके संग ॥ आए ज्ञानानंद पिउ, रमण करे सुखरंग ॥ को० ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ पद त्रेपनमुं ॥

॥ राग सोरठ ॥ मेंतो कैसे पियाकुं सेउंरी, पिया मेरो योगियांको वेस ॥ मैं० ॥ टेक ॥ मैं तो कन्या भूपकी, जाने सकल जिहान ॥ घरसें निकलुं कुण परें ॥ कहो सखी चतुर सुजान ॥ मैं० ॥ १ ॥ सतिय शिरोमणी अम बिरुद, बरमचारी शिर मोल ॥ दीसुं नहिं जग लोकमें, माहरो मोल अमोल ॥ मैं० ॥२॥ बिनपरण्या उत्तम पुरुष, ध्यान धरे दीनरात ॥ ते पण दरशन माहरो, दरश न लहे तिलमात्त ॥ मैं० ॥ ॥ ३ ॥ मैं तो मन गमतो कियो, छांडी जग जन वाद ॥ दूर मत रहे वालम मिले, पसरे जग जस-

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

वाद ॥ मे० ॥ ४ ॥ कन्या एह विचारतां, आय मिले ततकाल ॥ ज्ञानानंद योगी पिया, चारित युत जगपाल ॥ मैं० ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ पद चोपनमुं ॥

॥ राग सोरठ ॥ कोइ योगी हमकुं जानेरी ॥ मेरो कोइ नामकुं जान ॥ को० ॥ टेक ॥ मानस नहिं हम नारी नांहिं, नांहिं नपुंसक जान ॥ कोइ० ॥ १ ॥ दादा बाबा नहि हम काका, ना हम कुणके बाप ॥ को० ॥ नाना मामा हम नहि मोसा, कोइसें नहिं आलाप ॥ को० ॥ २ ॥ बेटा पोतरा गोलक नांहिं, नाती सुहिता न जान ॥ दादी चाची बेटी पोती, ना हम नारी मान ॥ को० ॥ ३ ॥ गुरु चेला नहिं हम काहूके, योगी जोगी नांह ॥ को० ॥ पांच जातमें नहिं हम कोइ, नहिं कोइ कुल ठांह ॥ को० ॥ ॥ ४ ॥ दरशन ज्ञानी चिद्घन नामी, शिववासी हम ज़ान ॥ को० ॥ चारित्र नवनिध अनुपम मूरति, ज्ञानानंद सुजान ॥ को० ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ पद पंचावनमुं ॥

॥ राग सोरठ ॥ बनी दगाबाज, रे तूं बनि द-

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

गाबाज, प्यारी तूं बफ्फि दगाबाज ॥ टेक ॥ तेरे खातर डूंगर दरि बिच, रही दुःख सह्यो में अपार ॥ हांसी खूसी बहु नातरां कीधां, तूं कांइ जूलि गवार ॥ रे तूं बफ्फि० ॥ १ ॥ कवडी साटे तेरे खातर, माहरो किधो मोल ॥ ढूंढक योगी यति सन्यासी ॥ मुंफ्फित कियो तें रोल ॥ रे तूं बफ्फि० ॥ २ ॥ मुहफ्फो बांधी कान ते फाडी, बहुविध वेस कराय ॥ कपट करी सहु पाखंरू कीधा, जन लूंट्यो मन जाय ॥ रे तूं बफ्फि० ॥ ३ ॥ घर घर जटक्यो तेरे साथें, पोतें पाप जराय ॥ अब तूं काह न बोले मोसुं, तुं कपटीनी दिखलाय ॥ रे तूं बफ्फि० ॥ ४ ॥ ऐसो देखी जयोहूं उदासी, निधि चारित्र लहाय ॥ ज्ञानानंद चेतनमय मूरति, ध्यान समाधि गहाय ॥ रे तूं बफ्फि० ॥५॥ इति ॥

॥ पद ७पनमुं ॥

॥ राग मल्हार ॥ प्यारे साहेबशुं चित्त लावोरे, साहेब दूर कहलावो रे ॥ प्या० ॥ टेक ॥ साहेब एकही हे जग व्यापी, नहि कहे जेद लहावे रे ॥ प्या०॥१॥ जे केइ साहेब जेद बतावे, ते बहुरा जग पावे ॥ पारसनाथ कहे कोइ बरमा, विष्णु शिव कहे-

लावे रे ॥ प्या० ॥ २ ॥ ध्यान ध्येय इग पारस रूंप, ज्योतिरूप बरम न्नावे ॥ केवलान्वयी ज्ञानी ते विष्णु, शिववासी शिव न्नावे रे ॥ प्या० ॥३॥ जोतिरूप साहेब तो इगही, तिनसुं ध्यान लगावो ॥ निधि चारित्र ज्ञानानंद मूरति, ध्यान समाधि समावोरे ॥ प्या० ॥४॥

॥ पद सत्तावनमुं ॥

॥ राग मल्हार ॥ देखो पिया आगम जहवेरी आयो, नाना न्नूखन लायो ॥ दे० ॥ टेक ॥ विनय कनकनो घाट बनायो, संयम रतन लगायो ॥ निरमल ज्ञानको हीरक बिचमें, दरशन मानक न्नायो ॥ दे० ॥ १ ॥ खायक वैडूर्यनी पंगति, मौक्तिक ध्यान लगायो ॥ सुमिति गुपति लीलम विद्रूम जिहां, शेष तत्त्व कहलायो ॥ दे० ॥ २ ॥ ए सहु न्नूषण मोल अमोला, निरखत चित्त लोन्नायो ॥ हरषें निधि चारित निहालो, ज्ञानानंद रमायो ॥ दे० ॥ ३॥ इति

॥ पद अठ्ठावनमुं ॥

— ॥ राग मल्हार ॥ ज्ञानकी दृष्टि निहालो, वालम तुम अंतर दृष्टि निहालो ॥ वा० ॥ टेक ॥ बाह्य दृष्टि देखे सो मूढा, कार्य नांहिं निहालो ॥ धरम

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

धरमें कर घर घर भटके, नांहिं धरम दिखालो ॥ वा० ॥ १ ॥ बाहिर दृष्टि योग वियोगें, होत महा-मतवालो ॥ कायर नर जिम मद मतवालो, सुख विभाव निहालो ॥ वा० ॥ २ ॥ बाहिर दृष्टि योगें भविजन, संसृति वास रहानो ॥ तिनतें नवनिधि चा-रित आदर, ज्ञानानंद प्रमानो ॥ वा० ॥ ३ ॥ इति ॥

॥ पद उंगणसाठमुं ॥

॥ राग मल्हार ॥ ज्ञानकी दृष्टि विचारो, साधो भाइ आतम दृष्टि संभारो ॥ सा० ॥ टेक ॥ अनु-करमें शुद्धज्ञाने अनुभव, ज्ञेय सकल सुविचारो ॥ ज्ञाने ज्ञेयकी एकता आदर, बहिरातम सुं निवारो ॥ सा० ॥ १ ॥ ज्ञानदृष्टि जे अंतर भावें, सुद्धरूचि रूप पहिचानो, अंतरातम ज्ञानातम भावें ॥ होय परमातम जानो ॥ सा० ॥ २ ॥ परमातम ते निजगुन भोगी, चारित ज्ञान बखानो ॥ ज्ञानानंद चेतनमय मूर्त्ति, आनंद भावसु जानो ॥ सा० ॥ ३ ॥ इति ॥

॥ पद साठमुं ॥

॥ राग मल्हार ॥ अनुभव ज्ञान संभारो, साधो भाइ मत एकंत हठ वारो ॥ सा० ॥ टेक ॥ ज्ञान

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

विना जे किरिया भांखे, अंध नर सम वन झोले ॥ आगममां ते देश आराधक, सर्व विराधक बोले ॥ सा० ॥ १ ॥ किरिया छांभी ज्ञान जे माने, पंगुल नर सम जानो ॥ सरव आराधक दिव्य विचारें, देश विराधक मानो ॥ सा० ॥ २ ॥ तिनतें ज्ञान सहित जे किरिया, करतां कारज सारो ॥ जिम अंध पंगुल दोनु मिलकर, वनसें निसरे सारो ॥ सा० ॥ ॥ ३ ॥ तिनतें एकंत मत पख छांडी, अंतरभाव विचारो ॥ अनुपम नवनिधि चारित संयुत, ज्ञानानंद संभारो ॥ सा० ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ पद एकशाठमुं ॥

॥ राग बिहाग ॥ सूनो सखी मोकुं लूंट मचायो ॥ सू० ॥ टेक ॥ बहु वासरसें विनय व्यथायें, अंगें दुःख रहायो ॥ एक दिन मज्जन सनान करी अम, भूषन अंग रहायो ॥ सू० ॥ १ ॥ रंग कसूंबा चूनरी पहिरी, पांचमी वरत रहायो ॥ इग योगी मतवालो आयो, भोलें भगति लहायो ॥सू०॥२॥ दिनभर मोसें गीत गवायो, सांजे नाच नचायो ॥ रंगमहल बिच सेजें पोढी, मोने रंग ललचायो ॥ सू० ॥

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

॥ ३ ॥ तनमय एकंत अंगे लपट्यो, रयणे नींद बिकायो ॥ नणदी पण हसी दोडी आई, मोकुं तो मचकायो ॥ सू० ॥ ४ ॥ जोर जयो उठ जाग्यो योगी, ना जानुं विगमायो ॥ सखि कहे स्वामिनि कुमलानी, मौनकरी सरमायो ॥ सू० ॥ ५ ॥ तिन अवसर निणदी तिहां बोली, हसकर करवत लायो ॥ रातें निधि चारित नित्यसाथें, ज्ञानानंद खेलायो ॥ सू० ॥ ६ ॥

॥ पद बाशठमुं ॥

॥ राग बिहाग ॥ मेरो पिया सखि देख मनावो ॥ मे० ॥ टेक ॥ पिया बिना रंग महेल बिच, सूनी सहेज रहायो ॥ खान पान दुःखदायक मोकुं, क्युं कर जिय समजायो ॥ मे० ॥ १ ॥ शोल शृंगार ए विरह व्यथायें, केसें रयण विलायों ॥ अंग अंग बिन जंगुर माहरो, तेसें कहुं चित्त लायो ॥ मे० ॥ २ ॥ इतनें चारित मितके संगें, ज्ञानानंद पिया पायो ॥ गरीषम तापें जिम जल बरखन, सेज धरी मचकायो ॥ मे० ॥ ३ ॥ इति ॥

॥ पद त्रेशठमुं ॥

॥ राग बिहाग ॥ तुं बालूराने क्युं मारे मूढ ॥

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

तुं० ॥ टेक ॥ बालो भोलो हम बालूडो, नहिं क्युंइ जाने गूढ ॥ बागामांहे खेले अहनिश, बात विचारो मूढ ॥ तुं० ॥ १ ॥ खेलन मिस ठोरो थारा पासें, रमण करे चित्त खोल ॥ तुं फुसलाइ नित्य नटकावे, इतयुत करे झमझोल ॥ तुं० ॥ २ ॥ निर्दय निर्धन नहिं तुझ सरिखो, नहिं क्युंइ माने निठोर ॥ इतने चारित ज्ञानानंदे, ठोरो लियो चित्त ठोर ॥ तुं० ॥ ३ ॥ इति ॥

॥ पद चोशठमुं ॥

॥ राग बिहाग ॥ जगगुरु निरपख कोन दिखाया ॥ नि० ॥ टेक ॥ अपनो अपनो हठ सहु ताने, कैसें मेल मिलाय ॥ वेद पुराना सबहीं थाके, तेरी कवन चलाय ॥ ज० ॥ १ ॥ सब जग निज गुरुताके कारन, मदगज उपर ठाय ॥ ग्यान ध्यान कछु जाने नांहिं, पोतें धर्म बताय ॥ ज० ॥ २ ॥ चोर चोर मिल मुलकनें लूंट्यो, नहिं कोइ नृप दिखलाय ॥ किनके आगल जाइ पूकारे, अंधो अंध पलाय ॥ ज० ॥ ३ ॥ आगम देखत जग नवि निरखुं, मन गमता पख नाय ॥ तिनतें मूरख धर्म धर्म कर, मत-

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

बूडे मन लाय ॥ ज० ॥४॥ इन कारण जग मत पख छांडी, निधि चारित्र लहाय ॥ ज्ञानानंद निज नावें निरखत, जग पाखंड लहाय ॥ ज० ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ पद पांशठमुं ॥

॥ राग बिहाग ॥ जगगुरु मूरख जगत जनाय ॥ ज० ॥ टेक ॥ मूरख मूरख बहुलो जग जन, गूढ पंडित केइ जाय ॥ पंडित मूरख बहु जन दीसे, जग मतलब लहे नाय ॥ ज० ॥ १ ॥ पंमित पंमित नहिं कोइ जगमें, कबहीं कोइ जनाय ॥ दिव्य विचारी तेहनें नाखे, संसृति अलप गिनाय ॥ ज० ॥२॥ तेहनुं दर्शन जगमें दुर्लन, ते तारक जग मांह ॥ तिनतें नवनिधि चारित नावे, ज्ञानानंद अथाह ॥ ज० ॥ ३ ॥ इति ॥

॥ पद नाशठमुं ॥

॥ राग रामग्री ॥ निरपखता मोकुं नाइ, पिया तम ॥ नि० ॥ टेक ॥ पक्षपातमें घर घर नटकी, नहिं निरपख दिखलाइ ॥ पि० ॥ संवेगी संवेगन कीनी, योगी योगन नाइ ॥ पि० ॥ १ ॥ सन्यासी सन्यासन कीनी, बामण बामणी लाइ ॥ पि० ॥ रा-

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

मसनेही रामकी प्यारी, यतिगण यतिनी जाइ ॥पि०॥ २ ॥ अपने अपने मत पख गहेला, सहु डुन्या बहुराइ ॥ पि० ॥ पण ना जाणुं कोण हे साचो, अपनी तो जरमाइ ॥ पि० ॥ ३ ॥ दिव्य विचारें निज अनुजवतां, जग पाखंरु दिखाइ ॥ पि० ॥ निधिचारित एक ज्ञानानंदनो, विमल वचन सतलाइ ॥ पि० ॥ ४ ॥

॥ पद सडशठमुं ॥

॥ राग रामग्री ॥ वालम वचन सुहाइ ॥ पिया अम वा० ॥ पक्षपात नहिं दिव्य विचारें, निज अनुजव दिखलाइ ॥पि०॥१॥ इंद्रिय सुख विरमण यति कहियें, दश यति धर्म धराइ ॥ पि० ॥ जव उद्विगन संवेगी कहियें, योग चरण जे योगी. ॥ पि० ॥ चारित्र जाव सन्यासी जानी, बरामन बरम गुण जोगी ॥ पि० ॥ २ ॥ साहिब रमण ते रामका प्यारा, एक रूप सहु जाइ ॥ पि० ॥ निधि चारित्र ज्ञानानंद अनुजव, ध्यान समाधि सुहाइ॥ पि० ॥ ४ ॥

॥ पद अडशठमुं ॥

॥ राग रामग्री ॥ नारी प्रेम निवारो, साधो जाइ कुटिला नारि निवारो ॥ सा० ॥ टेक ॥ कुटिला-

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

नारी योगें साधो, तुम गति चउ दिसी फेरो ॥ सा० ॥ ते तुम मोह मदपान कराइ, इतउत कलह विखेरो ॥ सा० ॥ १ ॥ निर्जर पण एहनी थाह न पामे, नूपर पंक्ति जाणो ॥ इंद्राणीके पगतल लोटे, इंद्रादिक परमाणो ॥ सा० ॥ २ ॥ नारी प्रेम विलूधें ढोलो, नहिं क्युंइ समजे घेलो ॥ सा० ॥ तिनतें नव निधि चारित संगें, ज्ञानानंदमें खेलो ॥ सा०॥ ३ ॥

॥ पद अगनोतेरमुं ॥

॥ राग रामग्री॥ नारी प्रेम लगावो, साधो नाइं, नानी नारी रमावो ॥ सा० ॥ टेक ॥ इण संयोगें योग जगावो, सहज शक्ति शुन्न नावो ॥ सा० ॥ निज परनावने देखे योगी, कणनर अंग लपटावो ॥ सा० ॥ १ ॥ अविनाशी अकलंकता तुम गुन, तेहिज शुन्न आचारो ॥ सा०॥ जरु पुन्नल इन नावसें न्यारा, एहनी ममता वारो ॥ सा० ॥ २ ॥ महोटा सहु योगी पण वंठे, एहनो संग सुखकारो ॥ सा० ॥ निधि चारित ज्ञानानंद प्रेमें, खेले नारी प्यारो॥ सा० ॥ ३ ॥ इति॥

॥ पद सीतेरमुं ॥

॥ राग रामग्री ॥ अनुनव योग रमावो, साधो

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

नाइ, निजघट अंतर नावो ॥ सा० ॥ टेक ॥ मेरा तेरा कहा करतहे, नहिं कबु तेरा नावो ॥ सा० ॥ जग जन किरिया कहा दिखलावे, कहा जग जन समजावो ॥ सा० ॥ १ ॥ निज निजमत पख हठता वारो, अंतर नाव विचारो ॥ सा० ॥ हालाहल अज्ञान निवारो, ज्ञान सुधारस धारो ॥ सा० ॥ २ ॥ तत्व विचारें प्रेम लगावो, निजगुण विमल निपावो ॥ सा० ॥ नवनिधि चारित प्रेमें आदर, ज्ञानानंद रमावो ॥ सा० ॥ ३ ॥ इति ॥

॥ पद इकोतेरमुं ॥

॥ राग जंगलो ॥ तुम सखि निरखोरे बाइ, सोतमी लेगइ अम वालमवा ॥ तु० ॥ टेक ॥ आगें आगें पिया चलतहे, पाछें सोतमी बाइ ॥ दासी पण छे तेहनें साथें, कुटिला चित्त लोजाइ ॥ तु० ॥ १ ॥ अमने लक्षण एहवो दीसे, वालम गये नरमाइ ॥ मोह नूपतिके जालें अटक्यो, अब नहिं निकले बाइ ॥ तु० ॥ २ ॥ क्रोधादिक तेहने रखवाला, कोट विषय दुःखदाइ ॥ तेहने चउदिसि सात बिसनहे, अहोनिश लंपट सांइ ॥ तु० ॥ ३ ॥ दासी युत कु

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

टिँला तिन पासें, रमण करे चित्त लाइ ॥ मदिरा पाने तेमतवालो, विकथा चउ बतलाइ ॥ तु० ॥ ४ ॥ ग्राहक व्यापक जोगें लंपट, सुख विजाव सुहाइ ॥ संसृति संग सहु अपनो जाने, विगमे काल सदाइ ॥ तु० ॥ ५ ॥ इन अवसर निधि चारित्र निरखे, ज्ञानानंद सहाइ ॥ जोले पंखीका देख तमासा, गुण संवेग रमाइ ॥ तु० ॥ ६ ॥ इति ॥

॥ पद बहोत्तेरमुं ॥

॥ राग जंगलो ॥ धीरज धारोरे बाइ, सांजल स्वामिनी वाणी सखी कहे ॥ धी० ॥ टेक ॥ समता सखीं पियु निरखन चाली, आगम मंत्री जाइ ॥ दुर्धर चार सुजट संग लेइ, गाम गाम निरखाइ ॥ धी० ॥ १ ॥ निरखत निरखत मोहके वाडे, आइ गुपत रहाइ ॥ आठ सखि ए चार सुजट युत, तेहने पासें गाइ ॥ धी० ॥ २ ॥ आगम मंत्री गुपत रहीने, अवसर जाव जनाइ ॥ अपनो अपनो दाव विचारे, ततपर कारज जाइ ॥ धी० ॥ ३ ॥ मोहनो परिकर आगम निरखी, सघला चित्त चमकाइ ॥ धर्म राजको परिकर निरखी, नाठा सहु उकताइ ॥

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

धी० ॥ ४ ॥ सुमति आगम मंत्री साथें, वालूको निकसाइ ॥ हरखें आव्यां निज घरमांहें, राणी मेल कराइ ॥ धी० ॥ ५ ॥ तिन अवसर निधि चारित्र आदर, ज्ञानानंद रमाइ ॥ अनुभव प्याला प्रेम मसाला, रंगें पान कराइ ॥ धी० ॥ ६ ॥ इति ॥

॥ पद तहोंतेरमुं ॥

॥ राग जंगलो ॥ तुम किहां चाल्यो रे सांइ, तुम साथें हुं योगन भइ अब ॥ तु० ॥ टेक ॥ तेरे खातर हम घर छांडी, थारे संग चित्त लाइ ॥ किन पर हमने छांमिके चाले, केसें प्रीत लगाइ ॥ तु० ॥ १ ॥ किन कारन अमने दुःख दीनो, काहे कुं घर मूकाइ ॥ घात विश्वास करे कहा मोसुं, कुणने पुकारु जाइ ॥ तु० ॥२॥ सांइ कहे अम घरकी याही, रीत पुरानी जाइ ॥ जबलग तेल दिपकमां बाती, तबलग अम तम जाइ ॥ तु० ॥ ३ ॥ इतनी कहकर सांइ चाल्यो, अपने गाम सुहाइ ॥ अनुपम नवनिधि चारित्र आदर, ज्ञानानंद रमाइ ॥ तु० ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ पद चम्मोतेरमुं ॥

॥ राग जंगलो ॥ मुनि तम निरखोरे जाइ, जाति-

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

भाव न तजाइ ॥ मु०॥ टेक॥ जे केइ गंगानिर पखाले, काली ऊरण लाइ ॥ विविध भांतकर महनत कीनी, तोपण सित नहिं जाइ ॥ मु० ॥ १ ॥ कर्त्तानी तिहां बुद्धि नहिं चाले, नहिं औषध गुण लाइ ॥ जातिरंग तेहनो नहिं पलट्यो, कहा करे चतुराइ ॥ मु० ॥२॥ तेहनी किरिया सघली फोकट, ज्ञान फोकटता भाइ ॥ तिन कारण निधि संयम अनुभव, ज्ञानानंद रमाइ ॥ मु० ॥ ३ ॥ इति ॥

॥ पद पंचोत्तेरमुं ॥

॥ राग जंगलो ॥ अनुभव लावोरे योगी, निज घट मांहि रमावो ॥ अ० ॥ टेक ॥ अनुभव ज्ञान जगतमें दुर्लभ, अलप संसृतिने जाइ ॥ दुर्भव्य अभव्य जीवने, अनुभव नांही लहाइ ॥ अ० ॥ १ ॥ करुवी तुंबरुी कोसों भटकी, अरुशठ तीरथ न्हाइ ॥ तोपण तुंबडी कटुता न छांडी, कहा तीरथ फरसाइ ॥ अ० ॥ २ ॥ तिनतें निजघट अंतर निरखों, अनुभव शैलि सुहाइ ॥ तनमय नवनिधि चारित्रयोगें, ज्ञानानंद लहाइ ॥ अ० ॥ ३ ॥ इति ॥

॥ इति श्री ज्ञानविलास संपूर्णः ॥

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

॥ अथ ॥

॥ श्रीसंयम तरंगः प्रारभ्यते ॥

॥ पद पहेलुं ॥

॥ राग भैरव ॥ योगनंद आदरकर संतो, अरुण द्युति लय लावो ॥ यो० ॥ टेक ॥ अंतर षटचक्र सोधन करकें, वंकनाल कर भावो ॥ यो० ॥ १ ॥ चंद्र सूरज मारज जुग तजकर, सुषमन परवाह जानो ॥ कुंभक रेचक पूरक भावें, प्रत्याहार प्रमाणो ॥ यो० ॥ ॥ २ ॥ धारण ध्यान समाधि सपतम, श्वास रोधन करतानो ॥ अनुपम अनहद धनी अनुयोगें, सौहं सोहं गानो ॥ यो० ॥ ३ ॥ सोहं सोहं रटना रटतां, नवनिधि संयम भायो ॥ ज्ञानानंद परमातम रोचि, देखत हरख लहायो ॥ यो० ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ पद बीजुं ॥

॥ राग भैरव ॥ जग जन निंदडी तजकर संतो, योग निंद संभारो ॥ ज० ॥ टेक ॥ नाना लबधि निधाननुं थानक, सकल संपद आधारो ॥ ज० ॥

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

॥ १ ॥ विविध विषमय देखि नवि इछे, निर्लेपी वीतरागो ॥ शत्रु मित्र समभाव रहे नित्य, दृढासन ध्यान जागो ॥ ज० ॥ २ ॥ योग निंद लय भावें जिनने, कोइ न करे अपगारो ॥ मीत समान सेवे जसु रिपुगण, वचन फले जगसारो ॥ ज० ॥३॥ तसकर श्वापदनो जसु नवि भय, पंचविजय लहे सारो ॥ निधिचारित ज्ञानानंद आदर, परमानंद निहारो ॥ ज० ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ पद त्रीजुं ॥

॥ राग भैरवी ॥ प्राणपिया तम ऐसी सबजी पीवोरे ॥ प्रा० ॥ टेक ॥ निज सुभ परिणति अनुपम सबजी, तिंखी मरी विवेक लेवो रे ॥ प्रा० ॥ तत्त्व विचार विविध सुमसाला, उपसम कंकर कूंडी मेवो रे ॥ प्रा० ॥ १ ॥ कुटिल निवृत्ति समता प्रेमें, संयम रगडा ताणो रे ॥ प्रा० ॥ धरम शुकल पय सुरभीसर केरा, संवर साफ गुडानो रे ॥ प्रा० ॥ २ ॥ अनुभव ज्ञानका रतन पियाला, भर भर समता पिलावे रे ॥ प्रा० ॥ निधि चारित्र ज्ञानानंद योगी, पीवत ध्यान लगावे रे ॥ प्रा० ॥ ३ ॥ इति ॥

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

॥ पद चोथुं ॥

॥ राग भैरवी ॥ गगन मंडलगत परम अरुण रुचि आयो रे ॥ ग० ॥ टेक ॥ चंद कहुं तो चंद न निरखुं, तरणि पिण न जनायो रे ॥ ग० ॥ तेल सिखा बिन दीप न निरखुं, जगमग रुचि सुखदायो रे ॥ ग० ॥ १ ॥ घन समीर परमुख उपाधि, रहित रुचिर दरसायो रे ॥ ग० ॥ सब जग व्यापी पांचहि जाते, पण नहिं आव रमायो रे ॥ ग० ॥ २ ॥ पंडित योगी सघले थाके, निज हठ पख लपटायो रे ॥ ग० ॥ आपहिं निरखे आपहिं जाने, सहज समाधि जगायो रे ॥ ग० ॥ ३ ॥ तव घर घरकी आरमना मेटी, सहज रूप परखायो रे ॥ ग० ॥ निधि संयम ज्ञानानंद योगी, ज्योति निरख हरखायो रे ॥ ग० ॥४॥

॥ पद पांचमुं ॥

॥ राग वेलावल ॥ निज परिणति चित्त धारियें, पर परणति तज सार ॥नि०॥ टेक ॥ जबलग रहे पर परिणति, तबलग भव भ्रम धार ॥ नि० ॥ १ ॥ अपनी पूंजी लख नहिं, कुमता संग चित्त खोल ॥ राजपूत होय परमतें, ते कायर समझोल ॥नि०॥२॥ किंपाक

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

फ लसम रूप रेह, नवसंग सुख जेह ॥ अंतर हालाहल लही, दुर्धर दुःखद लगेह ॥ नि० ॥ ३ ॥ काचखंड तुं गांडदे, चिंतामणिकुं झील ॥ नवनिधि संयम आदरी, ज्ञानानंदे हील ॥ नि० ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ पद छठुं ॥

॥ राग वेलावल ॥ पर परिणतिकुं तज करी, निज परिणति लहे सार ॥ प० ॥ टेक ॥ निज परिणति कर जस लहे, उभय लोक सुखकार ॥ प० ॥ १ ॥ नृंगी होय जिम ईलिका, नृंगी सर अनुराग ॥ अरनी अगनी परगटें, पय गत सर पिष जाग ॥ प० ॥ ॥ २ ॥ जिम शशिथी अमृत लहे, पारस कनक विचार ॥ तिम निज परिणति आचर्यां, सहजें परसंग वार ॥ प० ॥ ३ ॥ समता संग रमण करे, चार सखियुत तेह ॥ नवनिधि संयम तनमय, ज्ञानानंद सुख गेह ॥ प० ॥ ४ ॥ इति

॥ पद सातमुं ॥

॥ राग काफी ॥ चेतन तुं क्यों फरे झूला, हिंमोला करमका झोला ॥ ए चाल ॥ साधो तम निजघटमें देखो, मत पख हठता नहिं पेखो ॥ सा० ॥ चेतन

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

विन्नाव हे सबही, अपनो न ढांड हे कबहीं ॥ सा० ॥ १ ॥ कोइ प्रकारें नहिं देखो, उषर बीजको लेखो ॥ रासन्न गंगाजल धोयो, तोपण लोटे उकडायो ॥ सा० ॥ २ ॥ सूकर पायसकुं ढंमी, अशुचि जोगें जे मंमी ॥ मधु घृतकर सींचो तबहीं, नींब न मीठो होय कबहीं ॥ सा० ॥ ३ ॥ ज्ञानी ध्यानी के द्वेषी, निजमत पखपातें पेखी ॥ तिनतें अनुन्नव ज्ञानानंदें, सुन्नजो चारित्र आनंदें ॥ सा० ॥ ४ ॥

॥ पद आठमुं ॥

॥ राग काफी ॥ देखो प्यारे सब जग कलही, नहिं कोइ शांति मूरत पेही ॥ दे० ॥ मुनिजन उपसम गुण धारी, कलही कोप कारण सारी ॥ दे० ॥ १ ॥ सेठकुं तसकर सहु गावे, तसकर सेठ करी लावे ॥ सतवादीकुं कहे कूरा, मिरखाकुं सत कहे मूंरा ॥ दे० ॥ २ ॥ कमल प्रन्न सूरी जानो, श्रुति दृष्टांत कहे मानो ॥ तिनतें निधि चारित धारी, न्नजो ज्ञानानंद अधिकारी ॥ दे० ॥ ३ ॥ इति ॥

॥ पद नवमुं ॥

॥ राग काफी ॥ सब जग जन अपनी ताने, जिहां

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

कोइ न परमाने ॥ स० ॥ टेक ॥ जे कोइ परमानकूं पूछे, ताना तानी कर हुछे ॥ सा० ॥ १ ॥ गीतारथनी नहिं माने, कहीएतो पाखंम सहु जाने ॥ श्रुति गत साची नहिं जावे, जग जन कूड सहु जावे ॥ सा० ॥ २ ॥ मतवाला अम बहु मलिया,नहि कोइ परमार्थी क लिया ॥ तिनतें निधि संयम चित्तें, जजे ज्ञानानंद सुख नित्यें ॥ सा० ॥ ३ ॥ इति ॥

॥ पद दशमुं ॥

॥ राग काफी ॥ मतलबियो जग जन देखो, कोइ उपगारी नहिं पेखो ॥ म० ॥ टेक ॥ दुनियां पटुतर स्वारथकी, पाठ न पूछे परमारथकी ॥ म० ॥ १ ॥ गत यौवन निःसनेही, तरुणी पण विषयी न रेही ॥ जोजन पाछे नहिं जावे, अमृत पण कांजी कुण खावे ॥ म० ॥ २ ॥ एह विचारें मुनि समजो, पर उपगारक गुन बूजो ॥ अनुपम निधि चारित पावो, (जिम) निर्मल ज्ञानानंद जावो ॥ म० ॥ ३ ॥ इति ॥.

॥ पद अगीआरमुं ॥

॥ राग फाग ॥ हमरी चुनरी किन बोरीरो लोगों ॥ ए चाल ॥ अबलानी इग बात सुनो पिया, ऐसी

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

न खेलो होरी रे ॥ अ० ॥ टेक ॥ तुम न्हानीं वंहू सखि संयोगें, नइ मतवाली दोरीरे ॥ अ० ॥ कुटिला साथें तुमें पण पहोता, मदनबागां खेली होरी रे ॥ अ० ॥ १ ॥ अविरतनां पकवान जिहां तुम, हरखे नोजन जोरीरे ॥ अ० ॥ मिथ्या नाव गुलाल उमाइ, योगतें कुमकुम फोरी रे ॥ अ० ॥ २ ॥ इंद्रिय विषय जिहां रंग पिचकारी, मोहराजकी जोरी रे ॥ अ० ॥ चार कथायें तुं मतवालो, रंग मचायो होरी रे ॥ अ० ॥ ३ ॥ ऐसी होरी खेली तोपण, तृपत न नइ ते गोरी रे ॥ अ० ॥ ग्यारमी नूमसें तुमने नाखी, लेगइ खेलन होरी रे ॥ अ० ॥ ॥ ४ ॥ अबतो पिया मन मांहे समजो, नारी वचन चित्त जोरी रे ॥ अ० ॥ जिम चारित्र युत ज्ञानानंदें, नवनिधि पामे दोरी रे ॥ अ० ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ पद बारमुं ॥

॥ राग होरी ॥ होरी खेले कानहिया ॥ मेरो अब केसें निकसन होय दइयां ॥ एचाल ॥ होरी खेले वालमिया, मेरो अब केसें जावनो होय दइयां ॥ हो० ॥ टेक ॥ पंच महाव्रत वाघा पहेरी, शील वि-

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

नूखन ले सइयां ॥ ज्ञान गुलाल अबीर उमाइ, कुम-कुम शांति नरे सइयां ॥ हो० ॥ १ ॥ संयम रंग सुरंग नरीने, पिचकारी आगम ले सइयां ॥ समता साथें सुमति गुप्ति सखी, होरी खेले ताथइयां ॥ हो० ॥ ॥ २ ॥ शुन्न समकित पकवाननुं नोजन, चेतन हरख धरे सइयां ॥ निधि चारितयुत ज्ञानानंदें, निजगुन होरी वरे सइयां ॥ हो० ॥ ३ ॥ इति ॥

॥ पद तेरमुं ॥

॥ राग ठुमरी ॥ पर विकथा तुं कहा करतहे, अपनी न काह बिचारतहे रे ॥ प० ॥ टेक ॥ जगमें पर विकथा कर संतो, ज्ञान ध्यान विगमावतहै रे ॥ प० ॥ १ ॥ अपनी विकथा काह न धारे, पोतें दुरित नरावतहै रे ॥ गर्हा संयम दिव्य विचारे, अंतरनाव दिखावतेहै रे ॥ प० ॥ २ ॥ जबलग अपनी कथनी न जाने, कहा उपदेश सुनावतहै रे ॥ निधि चारित्र ज्ञानानंद निजपद, काह न चित्त रमावतहै रे ॥ प० ॥ ३ ॥ इति ॥

॥ पद चौदमुं ॥

॥ राग ठुमरी ॥ गगन प्रदेश रसाल झारु इग,

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

नज परमित जसु ज्ञाया रे ॥ ग० ॥ टेक ॥ तिनपर अरुण प्रज्ञ गज मैथुन, करत कल्लोल सुज्ञाया रे ॥ ग०॥१॥ ताह झाडको पान चुगत हे, अनादि अनंत तसु संगें रे ॥ ता नीचें एक रहत, मरगवा, खाधो गज निज रंगें रे ॥ ग० ॥ २ ॥ गरदन मित जसु बाहर दीसे, कैसें जीवन वंछे रे ॥ कालांतर तेहथी गज जायो, मृगहन नरपति लंछे रे ॥ ग० ॥ ३ ॥ जिन दिन जे गज नरपति जाने, अपनो खोज गमावे रे ॥ तव निधि चारित्र ज्ञानानंदें, मातंग आसन पावे रे ॥ ग० ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ पद पंदरमुं ॥

॥ राग सोयनी ॥ दीपक होत उजियारो ॥ दी० ॥ टेक ॥ बिन दीपक मंदिर अंधियारो, केसें करे रुचियारो ॥ दी० ॥ १ ॥ घोर घटायें रयण अंधारी, जान न पदारथ सारो ॥ दी० ॥२॥ जमजम योगें एकत परिणति, निजगुण दीप वीसारो ॥ दी० ॥ ३ ॥ बिन दीपक चेतन ज्ञयो पशुपर, स्वज्ञाव विज्ञाव सधारो ॥ दी० ॥ ४ ॥ सबजग तप जप किरिया विरथा, आतम अनुज्ञव धारो ॥ दी० ॥ ५ ॥ बिन

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

अनुभव अंधक नर ढूंढत, अनुभव दीप जगारो ॥ दी० ॥ ६ ॥ तातें अवधू मत ठहराणी, ज्ञेय ज्ञान सुविचारो ॥ दी० ॥ ७ ॥ तेहथी निधि चारित रिधि पामी, ज्ञानानंद निहारो ॥ दी० ॥ ८ ॥ इति ॥

॥ पद सोलमुं ॥

॥ राग सोयनी ॥ प्यारी नेह लगारो ॥ प्या० ॥ टेक ॥ बिनप्यारी घर घरमें भटकत, कायर भाव देखारो ॥ प्या० ॥ १ ॥ कुमतियोगें चार नगरमें, विविध रूप विसतारो ॥ प्या० ॥ २ ॥ पांच जातका वेस पहराया, निजप्यारी बिन हारो ॥ प्या० ॥ ३ ॥ तेवीस विषयके फंदमें नाखी, पापथान विलगारो ॥ प्या० ॥ ४ ॥ हास्यादिक वज्र कोटें घेरयो, निजसुध बुध बिसरारो ॥ प्या० ॥ ५ ॥ तिनतें प्यारी युत निधिचारित, ज्ञानानंद लहे सारो ॥ प्या० ॥ ६ ॥

॥ पद सत्तरमुं ॥

॥ राग वरुवा ॥ एक समीरका सहर बना हे, अदभूत पंच बाजार तना हे ॥ ए० ॥ टेक ॥ दस मारग दसही दरवाजै, चउ आसा चउ नगर बिराजै ॥ एते ॥ १ ॥ तेवीस वसंत जिहां नितप्रति दीपे, खेत

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

देत सब जगकुं फीपे ॥ ए० ॥ आना जाना एकहीं कालें, एक विना रहे नगर विचालें ॥ ए० ॥ २ ॥ एक दरवगत नित्य अनित्यें, चटपट नाव वसे सब चित्तें ॥ ए० ॥ जिन दिन सघलो खोज गमावे, तो निधिचारित्र ज्ञान निपावे ॥ ए० ॥ ३ ॥ इति ॥

॥ पद अढारमुं ॥

॥ राग वरुवा ॥ गुरुगम अनुनव शैली धारो, इस पदका निर्वाह विचारो ॥ गु० ॥ टेक ॥ सरव समय रवि रुचिकर हीना, विविध स्वापदयुत गहन विलीना ॥ गु० ॥ १ ॥ काला मिरगा निज बल वन राजा, नितप्रति राज अखंड समाजा ॥ गु० ॥ निर्दय निज वैरीगण मारे, मास विना न नखे खिन सारे ॥ गु० ॥ २ ॥ चक्री हरिबल परमुख जोधा, पिण मिरगा नवि वस किया सोधा ॥ गु० ॥ तेहने पिन मिरग खिन नख कीधा, कुन समरथ वस करने सीधा ॥ गु० ॥ ३ ॥ अमर बिरुद दरवें जग धारे, मरन जीवन नवि बेहुं सारे ॥ गु० ॥ इगदिन हरिथी नपुंसक जायो, अनंतवली पिण नहिं तोलायो ॥ गु० ॥ ॥ ४ ॥ एकहि घातें मिरगने माख्यो, कंठी रवनो

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

राज सुधार्यो ॥ गु० ॥ तव निधिचारित्र कमला संगें, लहै निर्मल ज्ञानानंद रंगें ॥ गु० ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ पद उंगणीशमुं ॥

॥ राग जंगला ॥ ज्ञान विचारो रे जाइ, गुरुगम शैली आदर संतो ॥ज्ञा०॥ टेक ॥ गगनमंडल गत विविध तूर धनी, घोर स्वरें कर वाजैं ॥ पाथोरण बिन घनाघन वरसे, गिरीषम ताप समाजै ॥ ज्ञा० ॥ ॥ १ ॥ यामें रहत बतासा कोरा, वजर गलै इगताने ॥ वासर विन अरुण प्रज जासै, तेजें ऊलहल जाने ॥ ज्ञा० ॥ २ ॥ मानस नहिं जिम मानस मेला, निरखत लहै आनंदें ॥ निधिचारित ज्ञानानंद प्रेमें, रमण करे सुखकंदें ॥ ज्ञा० ॥ ३ ॥ इति ॥

॥ पद वीशमुं ॥

॥ राग जंगलो ॥ ग्यान बिचारो सांई, झटपट अनुजव प्रीत लगासी ॥ग्या०॥ टेक ॥ जीर्ण कुटीयें चेंपाथेगल, कां लग वास रहासी ॥ घनाघन वरसत तटनी पूरें, आपोआप वहासी ॥ ग्या० ॥१॥ तातें अवधू चारने वरजी, निज सासू बतलावो ॥ चार पांच सखि वरगें हिलमिल, मोकुं हिरदय जावो ॥

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

ग्या० ॥ २ ॥ अष्टादस विध जोजन जिमो, तिरिवे-
णी जल न्हाइ ॥ पडिम पावड साला मारग, बार उ-
घाडो सांइ ॥ ग्या०॥ ३ ॥ विविध वांजित्र धनि सां-
जल निरखे, मुगताफल तरुसांइ ॥ तव निधि चारित्र
ज्ञानानंदें, नाचे हरख जराइ ॥ ग्या० ॥४ ॥ इति ॥

॥ पद एकवीशमुं ॥

॥ राग तिल्लाना ॥ जोगीयासें यारी कीनी हो,
ज्ञान दिनंदा ॥ जो० ॥ टेक ॥ ज्ञान दिनंदा त्रिजु-
वन चंदा, तटनी तटनि वसंदा, बरम जाव कडोट
धरंदा, घाती जसम लिपंदा ॥ जो० ॥ १ ॥ सादि
सांत दृढ आसनधारी, सुं निज परिणति नायी ॥
ज्ञेय मसाला प्रेमका प्याला, योग नींद लय लायी ॥
जो० ॥ २ ॥ तत्त्वविचार जटा वधारी, अनहद धुनि
चित्त लाइ ॥ निधिचारित्र सुन सेजें प्यारी, ज्ञाना-
नंद मचकाइ ॥ जो० ॥ ३ ॥ इति ॥

॥ पद बावीशमुं ॥

॥ राग तिल्लाना ॥ गगनें घन निरखानी हो, हर-
ख लहानी ॥ ग० ॥ टेक ॥ तिहां शुचि इग अमि-
सर निरखानी, परमानंद निसानी ॥ तट मुगताफ-

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

ल तरु सोज्ञानी, फल फूल साख न जानी हो ॥ ह० ॥ ग० ॥ १ ॥ हेठें योगी बैस्यो ध्यानी, गतागति कोइ न जानी ॥ गरजारव चपला द्युति मानी, झिरमिर वरसे पानी हो ॥ ह० ॥ ग० ॥ २ ॥ सुगुरें खाया मोतीपानी, अजरामर दरसानी ॥ निगुरें भूख तिरिषा परिमलानी, नहिं पामे गुण खानी हो ॥ ह० ॥ ग० ॥ ३ ॥ आपहिं निरखे आपहिं जानी, आगल कहा बखानी ॥ निधि संयम ज्ञानानंद योगी, अमिवस रहे सहलानी हो ॥ ह० ॥ ग० ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ पद त्रेवीशमुं ॥

॥ राग मल्हार ॥ पिउ मेरा निजघर आवै रे ॥ पि० ॥ टेक ॥ वालम तुमज्ञणी कुटिला निसिदिन, पर घर घर जटकावै ॥ मानपरें निर्लज गुण आदर, रंकज्ञाव दिखलावै रे ॥ पि० ॥ १ ॥ कवन खोट निजघरमें वालम, धन कोठार धरावै ॥ सेजें सुख मुझ साथें जोगो, जिम मन वंछित पावै रे ॥ पि० ॥ ॥ २ ॥ राजा सांज्ञल मोह नृपहनसें, थाशे बहुत खराबी ॥ पिउ तातें कुटिला संग वरजो, घरमें बेसो सिताबि रे ॥ पि० ॥ ३ ॥ इतनी सांज्ञल या मुझ

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

घरनी, निहचै तेहने जानी ॥ निधि संयम ते वांनी धारी, ज्ञानानंद बिलसानी रे ॥ पि० ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ पद चोवीशमुं ॥

॥ राग मल्हार ॥ मेरी तुं मेरी काहाडरे ॥ मे० ॥ टेक ॥ मेरी प्यारी गुण गण भूषित, हिरदय हारपरे ॥ तुऊविन नांहिं रहुं किण ठामें, जिम शिव सगति चरे रे ॥ मे० ॥ १ ॥ इम पियुवाणी सांभल महिषी, परम परमोद वहै ॥ दंपति मिलकर सेजें बैसें, अंतर तत्व गहै रे ॥ मे० ॥ २ ॥ अंगो अंग फरसन कर प्रेमें, घन मुगतिक वरसावै ॥ तव निधि संयम ज्ञानानंदें, शीतल भाव निपावै रे ॥मे०॥३

॥ पद पच्चीशमुं॥

॥ रागी गोमी ॥ निजधन काह गमावै ॥ संतो निज० ॥ टेक ॥ बोए झाड बंबूलके तैनें, आंब कहांसें खावे ॥ वेलू पीलत तेल न नीकलैं, मूरख जग कहलावै ॥सं०॥१॥ कोपी फणिधर रिजुता न पामे, तीम जडवंस निहालो ॥ सेलडी गांठे रस नवि पामे, खंजन सेत न भालो ॥सं०॥२॥ अनुपम दूधें साप खिलावै, हालाहल होय जावै ॥ घनथी पिन मगसिल

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

नवि नींजै, निंबडे मधूता न पावै ॥ सं० ॥ ३ ॥ एह विचार करी नाइ संतो, निधि चारित्र रमावो ॥ तव ज्ञानानंद पद अनुनवतां, कमला सहज निपावो ॥ सं० ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ पद ब्वीशमुं ॥

॥ राग गोमी ॥ तनमय सदागम सेवो ॥ अवधू ॥ त० ॥ टेक ॥ जबलग सदागम सेवन नांहि, पखपातें लपटेवो ॥ रतन पुंज पाहन सुत जाने, चंदन इंधन सम देवो ॥ अ० ॥ १ ॥ मोटे मोटे पाहन तरुवर, रतन चंदन दिखलावे ॥ रासन कूतर हय गज मोलें, लेवे ते मूढ कहावै ॥ अ० ॥ २ ॥ रतन कंबल वलकल चीवरसम, चर्वण घृत पूरमाने ॥ सकल वसतु इग मोल चलावै, खोट साच नवी जाने ॥ अ० ॥ ३ ॥ अन्याय पूर जन पदमें रहकर, क्युंकर लाज गमावो ॥ तेहथी निजघर संयम आदर, ज्ञानानंद रमावो ॥ अ० ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ पद सत्तावीशमुं ॥

॥ राग बिहाग ॥ हमक सान संग वारो ॥ संतो ॥ ह० ॥ टेक ॥ पवनवेग निज हय पर चढकर, कुंत

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

कृपाण शरधारो ॥ कूतरा कूतरी दासी हनकर, वजरें चूधर पामो ॥ सं० ॥१॥ विषहर अमृतपान संयोगें, निर्विष नाव वधारो ॥ सदागम संयम धर नृप आना, निखिलपुरें वरतारो ॥ सं० ॥ २ ॥ जबलग तीनो हरुक न मारे, दरशन नाण न पावो ॥ तेह विना संयम पिण नांहिं, साध्य सिद्धि किम नावो ॥ सं० ॥ ३ ॥ साधक सुन साधन नवि पामें, तेहथी हरुक निवारो ॥ निधि सयंम ज्ञानानंद अनुनव, परमानंद सुख धारो ॥ सं० ॥ ४ ॥

॥ पद अठावीशमुं ॥

॥ राग बिहाग ॥ हरुक सान संग नावो ॥ अंबधू ॥ ह० ॥ टेक ॥ जिम जिम निर्मल घनाघन वरसे, महि नवपल्लव रावों, तिम तिम हरुकिय वायु विकारें, अहनिस हरुक सरावो ॥ अ० ॥ १ ॥ काली कुतरी पण ठे तेहवी, सरिखो जोग मिलायो ॥ निजमति जोगें गिरिवर चढियो, जाति संगति टलायो ॥ अ० ॥ २ ॥ नृपबिन नृपनिति ते चलावे, जग जन मान न माने ॥ तेहने गुरु जन हित बतलावे, तोपिन आन न जाने ॥ अ०॥ ३ ॥ हरुक हरुक बं-

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

हु रुसे जग जनने, नगरें अपजस गावे ॥ सन्मुख विष्टायें पाहन नाखे, पोतें अशुचि नरावे ॥ अ० ॥ ॥ ४ ॥ पखपाती श्रुति निति विलोपी, चामना दामना चलावे ॥ तेहथी निधि संयम ज्ञानानंद, सुधारस अनुनव पावे ॥ अ० ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ पद उंगणत्रीशमुं ॥

॥ राग कल्यान ॥ ऐसी तुं कली उघाइ, संतो ॥ ऐ० ॥ टेक ॥ ममता सूतरको लेकर, तृष्णा मांऊ लगाइ ॥ सं ॥ १ ॥ कुतूहल रंग विरंग तुकली, मूर्छा तीली सुहाइ ॥ विविध माया धनुष जाके, लटकन मिथ्या लहाइ ॥ सं० ॥ २ ॥ कुटिल प्रवृत्ति पवन वरतें, गगनें शेष वधाइ ॥ झोक लेकर कोर लीनी, नयन विषय वर धाइ ॥सं०॥ ३ ॥ कापत कापत आप वध गये, परनावें हरखाइ ॥ तिनतें ज्ञानानंद नवनिधि, बैसेही संयम नाइ ॥ सं० ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ पद त्रीशमुं ॥

॥ राग कल्यान ॥ ऐसा पतंग चढाइ, संतो ॥ ऐ० ॥ टेक ॥ ध्यान पतंग वर ज्ञान चित्रित, संयम कोरी लगाइ ॥ सं० ॥ १ ॥ मेरुदंरु पदमासन धर

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

कर, खेचरी मुद्रा धार ॥ सूखम पवने गगन मंम-
ल गत, दृष्टि पतंग पर सार ॥ सं० ॥ २ ॥ गुण श्रे-
णी गत झोक टालो, अप्रमत्त जाव वधार ॥ सहस
पर थकत थिति खय, जग जस सूर विचार ॥
सं० ॥ ३ ॥ सकल परिधि काप संतो, वीर प्रमोद
जराय ॥ ज्ञानानंद नवनिधि संयम, नाचै निरख
हरखाय ॥ सं० ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ पद एकत्रीशमुं ॥

॥ राग झींझोटी जंगला ॥ अनुजव रस गत माती,
रंग राती ॥ अ०॥ टेक ॥ गगन मंमलगत इग अमि
सरवर, निरखत प्रमद जराती ॥ ता तट इग मुग-
ताफल तरुवर, निकलंक फूल फल जाती ॥ रं० ॥
॥ १ ॥ मुगतक अमिजल खावत पीवत, रंग खुमा-
र घुमाती ॥ रं० ॥ अहनिशि शशि रवि करत वि-
कारा, डुर्धर तिमिर हराती ॥ रं० ॥ २ ॥ अनहद
धुनि संग शंकर नाचे, निस्पृह जाव रमाती ॥ रं० ॥
निधि चारित्र ज्ञानानंद रंगें, गावत नाटक रा-
ती ॥ रं० ॥ ३ ॥ इति ॥

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

॥ पद बत्रीशमुं ॥

॥ राग झिंझोटी जंगला ॥ विरथा जनम गमाया, योग न जाया ॥ वि० ॥ टेक ॥ जगमें पहेले हमही जनमे, मात जनक पढें जाया ॥ वि०॥ मामा मामी नाना नानी, पढें गुरुजाइ रमाया ॥ वि० ॥ १ ॥ जग समझन या केम समझाइ, मो मन नांही रमाया ॥वि०॥ चेलेने निज गुरु जनमाया, गुरुमे शीस जनाया ॥ वि० ॥२॥ पहेले योगी पाछे जोगी, अनादि अनंत जोगाया ॥ वि० ॥ आपहिं मात जनक गुरु चेला, जगमांही जरमाया ॥ वि० ॥ ३ ॥ पाहन वाहन बेसी थूके, अंधो अंध चलाया ॥ वि० ॥ तिनतें संतो निधि संयमयुत, ज्ञानानंद सुहाया ॥ वि०॥४॥

॥ पद तेत्रीशमुं ॥

॥ राग चाबक ॥ वालमियारे, विरथा जनम गमाया ॥ टेक ॥ परसंगत कर दसदिसि जटका, परसें प्रेम लगाया ॥ परसें जाया पररंग जाया, परकुं जोग लगाया रे ॥ वि० ॥१॥ माटी खाना माटी पीना, माटीमें रम जाना ॥ माटी चीवर माटी जूखन, मांटी रंगसो जीनारे ॥ वि० ॥ २ ॥ परदेशीसें ना-

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

तरा कीना, मायामें लपटाना ॥ निधि संयम ज्ञानानंद अनुभव, गुरुविन नांहिं लहानां रे ॥ वि०॥ ३ ॥

॥ पद चोत्रीशमुं ॥

॥ राग चाबक ॥ योगिया रे, गुरु विन ज्ञान न भाया ॥ टेक ॥ दुर्धर केसरी बकरी जाइ, बकरी वाघ बंधाया ॥ बकरी चहुटे वाघ नचावे, देखे जन हरखाया रे ॥ गु० ॥ १ ॥ तुरिय वेग हय चाबुक योगें, नाग कुटुंब रूसाया ॥ समय अनादें इतउत भटके, मम ज्ञायें भरमाया रे ॥ गु० ॥ २ ॥ खिनभर ज्ञानकी वात न जानी, अनुभव वासन भाया ॥ गुरु किरीया संयम ज्ञानानंद, चरण कमल लपटाया रे ॥ गु० ॥ ३ ॥ इति ॥

॥ पद पांत्रीशमुं ॥

॥ राग बसंत ॥ अचरज एक नजरगत आयो, ज्ञानी गुरु बतलायो ए॥ टेक॥ त्रिभुवनमें एक बाल कुमारी, बिरुद सति कहलाया ए ॥ अ० ॥ १ ॥ बिन घरमां इग पलमें निपने, नंदन तिन सुखदायी ए ॥ रूप अनूपा चार दीकरी, ते पिन योगन जाइ ए ॥ अ० ॥ २ ॥ जेह जनक ते वल्लभ तेहना, मांत

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

विना जग जाया ए ॥ ते कया चिदानंदें परनी, योगी नाव रमाया ए ॥ अ० ॥ ३ ॥ सेजें दोउ अनुनव रंगें, अहनिसि प्रेम लगाया ए ॥ निधि संयम ज्ञानानंद योगी, गुरु किरिया दरसाया ए ॥ अ० ॥ ४ ॥

॥ पद उत्रीशमुं ॥

॥ राग वसंत ॥ विविध तूर धुनि नन्न मंमलगत, ज्ञानी मुनि दिखलाया ए ॥ टेक ॥ चउविह घन शुषिर तत वितत, घोर सरें संन्नलाया ए ॥ वि० ॥ १ ॥ चंद सूरज परकास सुन्नावें, योगी साधन साधना ए ॥ अनुन्नव तत्त्वसु ज्ञान खुमारी, कबहु न उतरे आराधना ए ॥ वि० ॥ २ ॥ तूर नहिं पन तूर धनि सुन, नवनिधि सहज निपाया ए ॥ संयम ज्ञानानंद लहे तव, नाचै हसै हरखाया ए ॥ वि० ॥ ३ ॥ इति ॥

॥ पद साडत्रीशमुं ॥

॥ राग झिंझोटी ॥ रहो बंगलेमें वालम करुं तोहे राजीरे ॥ टेक ॥ निज परिणतिका अनुपम बंगला, संयम कोट सुगाजीरे ॥ रहो० ॥ चरण करण संपतति कंगुरा, अनंत विरज थंन्न साजीरे ॥ ॥ र० ॥ १ ॥ सीतन्नूमी पर निर्नय सेलें, निरवेद प-

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

रम पद लाइरे ॥ र० ॥ विविध तत्त्व विचार सुखमी, ज्ञान दरस सुरनि नाइ रे ॥ र० ॥ २ ॥ अहनिस रवि शशि करत विकासा, सलील अमीरस धाइ रे ॥ र० ॥ विविध तूर धुनि सांनल वालम, सादवाद अवगाइ रे ॥ र० ॥ ३ ॥ ध्येय ध्यान लय चढीहे खुमारी, उतरे कबहु न रामी रे ॥ र० ॥ सुन निधि संयम घरनी वाचा, ज्ञानानंद सुख धामीरे ॥ र० ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ इतिश्री संयम तरंगः संपूर्णः ॥

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

॥ अथ ॥

॥ श्रीजशोविजयजी कृत आनंदघनजीनी स्तुतिरूप अष्टपदी प्रारंभः ॥

॥ पद पहेलुं ॥

॥ राग कनडो ॥ मारग चलत चलत गात, आनंदघन प्यारे ॥ रहत आनंदभर पूर ॥ मा० ॥ ताको सरूप भूप, त्रिहु लोकथें न्यारो ॥ बरखत मुख पर नूर ॥ मा० ॥ १ ॥ सुमति सखीके संग, नित नित दोरत ॥ कबहु न होतही दूर ॥ जशविजय कहे सुनो हो आनंदघन, हम तुम मिले हजूर ॥ मा०॥ २ ॥

॥ पद बीजुं ॥

॥ आनंद घनको आनंद, सुजशही गावत ॥ रहत आनंद सुमता संग ॥ आनंद० ॥ सुमति सखी ओर नवल आनंदघन, मिल रहे गंग तरंग ॥ आनं० ॥ ॥ १ ॥ मन मंजन करके निर्मल कीयो हे चित्त,

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

तापर लगायो हे अविहड रंग ॥ जसविजय कहे सुनतही देखो, सुख पायो बोत अनंग ॥ आनं० ॥ २ ॥

॥ पद त्रीजुं ॥

॥ राग नायकी ताल चंपक ॥ आनंद कोउ नहिं पावे, जोइ पावे सोइ आनंदघन ध्यावे ॥ आ० ॥ आनंद कोन रूप कोन आनंदघन, आनंद गुण कोन लखावे ॥ आ० ॥ १ ॥ सहेज संतोष आनंद गुण प्रगटत, सब दुविधा मिट जावे ॥ जस कहे सोही आनंदघन पावत, अंतर ज्योत जगावे ॥ आ० ॥ २ ॥ इति

॥ पद चोथुं ॥

॥ राग ताल चंपक ॥ आनंद ओर ओर नहिं पाया, आनंद आनंदमें समाया ॥ आ० ॥ रति अरति दोउ संग क्षीय वरजित, अरथने हाथ तपाया ॥ आ० ॥ १ ॥ कोउ आनंदघन बिरही पेखत, जस राय संग चली आया ॥ आनंदघन आनंदरस जीलत, देखतही जस गुण गाया ॥ आ० ॥ २ ॥ इति ॥

॥ पद पांचमुं ॥

॥ राग नायकी ॥ आनंद कोउ हम देखलावो,

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

आ० ॥ कहा ढूंढत तुं मूरख पंथी ॥ आनंद हाट ना बेकावो ॥ आ० ॥ १ ॥ एसी दशा आनंद सम प्रगटंत, ता सुखं अलख लखावो ॥ जोइ पावे सोइ कहु न कहावत, सुजस गावत ताको वधावो ॥ आ० ॥२॥

॥ पद छठुं ॥

॥ राग कानडो ताल रूपक ॥ आनंदकी गत आनंदघन जाणे ॥ आ० ॥ वाइ सुख सहज अचल अलख पद, वा सुख सुजस बखाने ॥ आ० ॥ १ ॥ सुजस विलास जब प्रगटे आनंदरस, आनंद अक्षय खजाने ॥आ०॥ २ ॥ [redacted] दशा जब प्रगटे चित्त अंतर, सोहि आनंदघन पिछाने ॥आ०॥३॥ इति ॥

॥ पद सातमुं ॥

॥ एरी आज आनंद नयो मेरे ॥ तेरो मुख निरख निरख रोम रोम, शीतल नयो अंगो अंग ॥ एरी० ॥ १ ॥ शुरू समजल समतारस जीलत, आनंदघन नयो अनंत रंग ॥ एरी० ॥ २ ॥ एसी आनंद दशा प्रगटी चित्त अंतर, ताको प्रभाव चलत निरमल गंग ॥ वाही गंग समता दोउ मिल रहे,

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

जसविजय जीलत ताके संग ॥ एरी० ॥ ३ ॥ इति ।

॥ पद आठमुं ॥

॥ राग कानडो ताल ॥ आनंदघनके संग सु जसही मिले जब, तब आनंद सम जयो सुजस, पा- रस संग लोहा जो फरसत, कंचन होतही ताके कस ॥ आ० ॥ १ ॥ खीर नीर जो मिल रहे आनंद जस, सुमति सखीके संग जयो हे एकरस ॥ जब खपा सुजस विलास, जये [redacted] स्वरूप लीये धस मस ॥ आ० ॥ २ ॥

॥ इति श्रीजसोवि[redacted] कृत आनंदघनजीनी स्तुतिरूप अष्टपदी संपूर्ण ॥

इति श्री जसविलास तथा विनय विलास अने ज्ञान विलासाख्य रागमाला समाप्ताः

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org